महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मोतिहारी, बिहार | जुलाई-अगस्त 2024 (संयुक्तांक) | पृष्ठ: 16 www.mgcub.ac.in parisarpratibimb@mgcub.ac.in @MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

दीक्षारंभ: बिहार के माननीय राज्यपाल ने विद्यार्थियों को किया प्रेरित

एमजीसीयू में नव-प्रवेशित विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम का आयोजन

कुलपति की कलम से

प्रो. संजय श्रीवास्तव
मा. कुलपति
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार

प्रिय पाठकों! आज हम एक ऐसे युग में हैं, जहाँ शिक्षा केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। शिक्षा एक साधन है, जो हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ बहुमुखी विकास के लिए अत्यंत जरूरी है। शिक्षण संस्थानों की महत्ता तभी है जब वह बहुआयामी स्वरुप में हो। हमारा विश्वविद्यालय न केवल शिक्षा का प्रमुख केंद्र है, बल्कि यह नवाचार, अनुसंधान और सामुदायिक विकास का भी माध्यम है। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के ई-समाचार पत्र' परिसर प्रतिबिंब' के इस अंक में विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों, उपलब्धियों, योजनाओं से संबंधित समाचार के साथ शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की रचनाओं को प्रकाशित किया जा रहा है। हाल ही में, हमारे विश्वविद्यालय ने आई.आर.आर.एफ रैंकिंग में 20वां स्थान प्राप्त किया है। नव-प्रवेशित छात्रों के लिए भव्य 'दीक्षारंभ' समारोह आयोजित किया गया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर जी एवं विशिष्ट अतिथि पूर्वी चंपारण के माननीय सांसद श्री राधामोहन सिंह जी की गरिमामयी उपस्थिति थी। विदित हो कि विश्वविद्यालय 20 विभागों में चार स्नातक और 20 स्नातकोत्तर (पीजी) पाठ्यक्रमों का संचालन करता है और भविष्य में विदेशी भाषाओं सहित अन्य पाठ्यक्रमों को शुरू करने की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारा विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू कर चुका है और साथ ही साथ एक मेडिकल कॉलेज और सैटेलाइट परिसर प्रारम्भ करने की योजना बना रहा है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य अकादमिक उत्कृष्टता, अनुसंधान के अवसर और एक जीवंत परिसर प्रदान करना है। विश्वविद्यालय को बिहार कैबिनेट द्वारा हाल ही में 127.26 एकड़ और भूमि आवंटित की गई है, जिससे अब हमारी कुल भूमि का स्वामित्व पिछले 134 एकड़ से बढ़कर 261.26 एकड़ हो गया है। जून 2024 माह में एमजीसीयू और केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) ने भवन निर्माण शुरू करने के लिए आधिकारिक तौर पर एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर कर लिया है। हमारे स्थायी परिसर में प्रशासनिक कार्यालय, अध्ययन-अध्यापन के परिसर, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, स्टूडियों, ऑडिटोरियम, छात्रावास आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ होंगी। हमारे विश्वविद्यालय के छात्र और शिक्षक मिलकर शिक्षा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर रहे हैं। विभिन्न शोध परियोजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामुदायिक सेवाओं के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारे छात्र न केवल अकादमिक क्षेत्र में बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। आइए! हम सब मिलकर इस यात्रा को और भी सफल बनाएँ। शिक्षा के इस नए युग में हम सबका योगदान महत्वपूर्ण है। हमें विश्वास है कि हमारे संयुक्त प्रयासों से हमारा विश्वविद्यालय नई ऊँचाइयों को छुएगा।

दीक्षारंभ समारोह की झलकियाँ

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय द्वारा नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए 13 अगस्त को **'दीक्षारंभ समारोह'** का आयोजन महात्मा गाँधी प्रेक्षागृह में किया गया। कार्यक्रम में बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय सांसद श्री राधा मोहन सिंह उपस्थित थे। कार्यक्रम कि अध्यक्षता कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान, दीप प्रज्ज्वलन तथा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ की गई। केविवि के कुलपति ने सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत पौधा, मधुबनी चित्रकला से सुशोभित अंग वस्त्र, शिल्पकृति, मां सरस्वती की प्रतिमा और प्रतीक चिह्न भेंट कर किया। कुलपति ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि विश्वविद्यालय सिर्फ ईंट, बालू मिश्रित कोई भवन नहीं होता बल्कि यह प्राध्यापकों, शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक अधिकारी-कर्मचारी के साथ-साथ सबसे महत्वपूर्ण हमारे विद्यार्थियों, उनकी मेहनत और उपलब्धियों से बनता है।

विशिष्ट अथिति के रूप में मौजूद माननीय सांसद राधा मोहन सिंह ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि लंबे संघर्ष के बाद हमें विश्वविद्याल मिला है और मैं इस विश्वविद्याल में आए नवागंतुकों का स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं। उन्होंने कहा कि संघर्ष जीवन का हिस्सा है, पर अपने संकल्पों को हासिल करने के लिए संघर्ष के साथ-साथ लक्ष्य को निश्चित करना जरूरी है। साथ हीं युवाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए भी प्रेरित किया। उसके बाद विश्वविद्यालय के चीफ प्रॉक्टर प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने 'पंच प्रण' की शपथ दिलाते हुए विद्यार्थियों को अपने राष्ट्र की तरफ उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. बृजेश पाण्डेय तथा मंच संचालन डॉ श्वेता ने किया।

नीति-व्यवस्थाओं से कराया गया अवगत:

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने की। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि विश्वविद्यालय का सदैव प्रयास है कि विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्तापूर्ण अध्ययन का स्वस्थ माहौल प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि दीक्षारम्भ का उद्देश्य विश्वविद्यालय के विभिन्न आयामों से आप सभी को परिचित कराना है।

सुप्रसिद्ध प्रेरक वक्ता डॉ. विक्रांत सिंह तोमर ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से विद्यार्थियों के सामने लक्ष्य निर्धारण से लेकर स्वयं को पहचाननें तक की बातें सूत्र वाक्य में रखी। सफलता के लिए लक्ष्य निर्धारण, उसके लिए निरंतर प्रयास, असफलता को स्वीकार करना, किसी से तुलना नहीं करना जरूरी है। जिज्ञासा भी व्यक्ति को ज्ञानवान बनाती है, जो विद्यार्थियों में होनी चाहिए।

नई शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न आयामों से परिचित कराते हुए नीपा से आई प्रो. आरती श्रीवास्तव ने कहा कि हमें उच्च शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए। उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी को समझना चाहिए कि यही वह समय होता है जिस पर पूरे जीवन का फाउंडेशन बनता है। उन्होंने अमेरिका और अन्य विकसित देशों के शिक्षा संसाधनों का जिक्र करते हुए भारत में शिक्षा की बेहतरी के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारें में चर्चा की।

कार्यक्रम को मुख्य कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने संबोधित करते हुए प्रोक्टोरियल बोर्ड की कार्यप्रणाली पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन केंद्रित मैनुअल पढ़ने की सलाह दी।

वहीँ विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अर्तत्राण पाल, परीक्षा नियंत्रक प्रो. के. के. उपाध्याय, प्रोवोस्ट प्रो. रफीक उल इस्लाम, शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव, पुस्तकालय प्रभारी प्रो. रंजीत कुमार चौधरी, वित्त अधिकारी प्रो. विकास पारीक, विशेष कार्याधिकारी (प्रशासन) डॉ. सचिदानन्द सिंह ने भी विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों एवं प्रावधानों से विद्यार्थियों को परिचित कराया। मंचासीन पदाधिकारियों का स्वागत डॉ. बिमलेश कुमार सिंह, डॉ. श्याम कुमार झा, डॉ. शतरुद्र प्रकाश, डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव, डॉ. राकेश पाण्डेय, डॉ. युगल किशोर दाधीच, डॉ. असलम खान ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शहाना मजूमदार ने किया। संचालन गरिमा तिवारी ने किया।

हर-घर तिरंगा अभियान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समरोह का समापन:

दीक्षारंभ समारोह के समापन सत्र में "हर-घर तिरंगा अभियान" के तहत विश्वविद्यालय के कुलपति के नेतृत्व में सभी प्राध्यापकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने तिरंगा लहरा कर देश के प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया।

"हर-घर तिरंगा अभियान" के पश्चात विवि के छात्र-छात्राओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। विद्यार्थियों ने भिखारी ठाकुर द्वारा रचित नाटक गबरघिचोर का मंचन किया गया। इसके अलावा शास्त्रीय संगीत, बिहारी लोक गीत एवं नृत्य, झिझिया, कजरी, जट-जट्टिन, बॉलीवुड डांस आदि की प्रस्तुति दी गई। इन कार्यक्रमों ने नव-आगंतुक विद्यार्थियों को विवि की सांस्कृतिक गतिविधियों से अवगत कराया।

विकसित भारत का संकल्प पूरा करेंगे देश के युवा

समारोह को संबोधित करते राज्यपाल

बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर जी ने दीक्षारंभ समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आज का दिवस युवाओं के लिए है। जब मैं राष्ट्रपति महोदया के साथ दीक्षांत समारोह में शामिल हुआ तो मैं समझा कि वो क्षण दीक्षा का अंत नहीं बल्कि शिक्षा का प्रारंभ था। उन्होंने कुलगीत की सराहना करते हुए कहा कि इसे जीवन में उतारा जाए तो जीवन सुसंगत हो जाएगा। उन्होंने कहा कि युवाओं को साहसी होना चाहिए क्योंकि हमारा भविष्य युवाओं पर ही निर्भर है ही हम 2047 में हम विकसित भारत के अपने संकल्प को पूरा कर पाएंगे। अपनी बातों को विराम देते हुए महोदय ने कहा कि एक वक्त था, जब यह देश सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता था, पर आने वाले समय में हमे इस देश को सोने का शेर बनाना का है, जिसकी दहाड़ चारों और सुनाई दे और वह सोने का शेर 'वसुधैव कुटुंबकम्' के मंत्र को आत्मसात कर के पूरे विश्व का नेतृत्व करे।

हर-घर तिरंगा कार्यक्रम

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

हर्षोल्लास के साथ मना 78वाँ स्वाधीनता दिवस

• अकादमिक क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि होगी : प्रो संजय श्रीवास्तव

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में पूरे हर्षोल्लास के साथ 78वाँ स्वाधीनता दिवस मनाया गया। केविवि के गाँधी परिसर में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया एवं विवि परिवार को स्वाधीनता दिवस की शुभकामनाएँ दी। ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान के पश्चात स्वाधीनता दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि शताब्दियों के सतत संघर्ष एवं कई पीढ़ियों के बलिदान के पश्चात हमने यह स्वतंत्रता प्राप्त की है। भारत माँ के उन सभी वीर सपूतों को आज मैं नमन करता हूँ जिन्होंने राष्ट्र यज्ञ में आहुति दी और देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। मैं विशेष रूप से महात्मा गाँधी जी को स्मरण करता हूं, जिन्होंने देश के जनमानस को एकत्रित कर स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। हमारा चंपारण अंग्रेजों के अत्याचार का एक बड़ा केंद्र था। इसी चंपारण की धरती से गाँधी जी ने अग्रेजों के विरुद्ध अपने संघर्ष की शुरुआत की। चंपारण का कण-कण उस इतिहास का साक्षी है। उन्होंने 14 अगस्त 1947 को हुए भारत के विभाजन का जिक्र करते हुए कहा कि हमने इस दिन को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में याद किया। हम सबको यह विश्लेषण करना चाहिए कि आखिर क्यों भारत भूमि पर अंग्रेजों व आक्रमणकारियों का आधिपत्य स्थापित हुआ और देश का विभाजन क्यों हुआ ताकि उस कालचक्र की पुनरावृति न हो सके। हमें अपने संविधान एवं उसके संकल्पों तथा अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करनी चाहिए। एक भारतीय होने के नाते यह हम सबका परम कर्तव्य होना चाहिए।"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" के पवित्र भाव को आत्मसात कर हमारे पूर्वजों ने जो सपना देखा था, आज विकसित भारत के संकल्प के साथ हम उस दिशा में अग्रसर हो रहे हैं। आज हमें विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था और चौथी सामरिक शक्ति होने का गौरव प्राप्त है। इस अमृतकाल में हम 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र धारणा के साथ अब वैश्विक समस्याओं के समाधान की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और दुनिया के देश अन्य आज हमारी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहे हैं।

यह मृतकाल भारत के नेतृत्व का काल है। आज इस अमृतकाल में देश के विश्वविद्यालयों की जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। मुझे यह बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हमारा विश्वविद्यालय अपने दायित्वों की पूर्ति की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। आज हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अधिकांश अनुशंसाओं को लागू कर दिया है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शोध की दिशा में हम तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं। अपने विश्वविद्यालय का चतुर्दिक विकास हो रहा है। हमने आईआईआरएफ रैंकिंग में 20वाँ स्थान प्राप्त किया है, जो हम सभी के लिए गौरव का विषय है। विभागों एवं केंद्रों के विकास की दिशा में भी हम आगे बढ़ रहे हैं, जिससे भारत के साथ-साथ पड़ोसी देश नेपाल के छात्रों को भी लाभ होगा। जल्द ही विवि का अपना स्थाई परिसर भी विद्यार्थियों को समर्पित हो जाएगा और शीघ्र ही विदेशी भाषाओं का अध्यापन भी विवि में प्रारंभ हो जाएगा।

विद्यार्थियों तथा शिक्षक एवं कर्मचारियों के हित की दिशा में भी लगातार कार्य हो रहा है। विश्वविद्यालय अपने सभी विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक स्वस्थ व अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। स्वतंत्रता दिवस का यह अवसर स्वाधीनता की चेतना को आत्मसात करने, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक परंपरा को याद करने का दिन है।

कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति जी के द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के चित्र पर माल्यार्पण, ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान से हुआ। एनसीसी के कैडेटों ने कुलपति जी को गार्ड ऑफ ऑनर की सलामी दी। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बिमलेश कुमार सिंह ने गीत प्रस्तुत किया और मीडिया अध्ययन विभाग की छात्रा मुस्कान ने गणेश वंदना पर नृत्य प्रस्तुत की। राजस्थानी नृत्य की प्रस्तुति के साथ भोजपुरी गीत और संगीत की मनमोहक प्रस्तुति शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने की। धन्यवाद ज्ञापन गाँधी परिसर के निदेशक प्रो. प्रसून दत्त सिंह एवं संचालन समाजशास्त्र विभाग की सहायक आचार्या डॉ. श्वेता ने किया। गाँधी परिसर, बनकट में ध्वजारोहण कार्यक्रम के उपरांत विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन पर कुलसचिव डॉ. सचिदानन्द सिंह, डीडीयू परिसर में परिसर निदेशक प्रो. शिरीष मिश्र, चाणक्य परिसर में परिसर निदेशक प्रो. आर्तत्राण पाल, बुद्ध परिसर में परिसर निदेशक प्रो. रंजीत कुमार चौधरी और हॉस्टल में प्रोवोस्ट डॉ. रफीक उल इस्लाम ने ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता गण, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, पदाधिकारियों शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति थी।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय को IIRF 2024 में 20वाँ स्थान

• देशभर के 1000 से अधिक संस्थानों का हुआ मूल्यांकन

प्रतीकात्मक तस्वीर

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए भारतीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (IIRF) 2024 में 50 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में से 20वाँ स्थान प्राप्त किया है। यह सफलता एमजीसीयू के शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान और समग्र विकास के प्रति समर्पण को प्रदर्शित करती है।

आईआईआरएफ रैंकिंग में देशभर के 1000 से अधिक संस्थानों का मूल्यांकन किया गया है। यह फ्रेमवर्क सात प्रमुख मापदंडों पर आधारित है, जिनमें शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान, प्लेसमेंट प्रदर्शन, कॉर्पोरेट इंटरफ़ेस, प्लेसमेंट रणनीतियाँ और समर्थन, शिक्षण संसाधन एवं पेडागॉजी, और भविष्य की ओरिएंटेशन शामिल हैं।

एमजीसीयू के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने इस सफलता पर खुशी और गर्व व्यक्त करते हुए कहा, "आईआईआरएफ 2024 में 20वां स्थान प्राप्त करना हमारे विश्वविद्यालय के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण है। यह हमारे शैक्षणिक नवाचार, उत्कृष्ट अनुसंधान, और समग्र विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस सफलता का श्रेय हमारे संकाय सदस्यों, छात्रों और कर्मचारियों की कड़ी मेहनत को जाता है।

"जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका मिश्रा ने इस उपलब्धि को एमजीसीयू के सामूहिक प्रयासों का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि एमजीसीयू अपने मिशन के प्रति प्रतिबद्ध है और शिक्षा, अनुसंधान, और सामुदायिक जुड़ाव के क्षेत्रों में और अधिक उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस उपलब्धि ने विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को और मजबूत किया है और हमें गर्व है कि हमने यह मान्यता प्राप्त की है।

स्वतंत्रता दिवस की झलकियां

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर विशेष साक्षात्कार

प्रो. संजय श्रीवास्तव
माननीय कुलपति
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार

प्रश्न : विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) २०२० के क्रियान्वयन पर आपका क्या विचार है?

उत्तर : राष्ट्रीय शिक्षा नीति **(NEP)** 2020 के कार्यान्वयन में पहले की नीतियों की तुलना में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं। सबसे पहले, इसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता को मजबूती से उभारने पर है, जहाँ भाषा और राष्ट्र के प्रति प्रेम को प्राथमिकता दी गई है। यह नीति न केवल शैक्षणिक क्षमता और जवाबदेही पर जोर देती है, बल्कि वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभावों को भी ध्यान में रखती है।

इस नीति का एक प्रमुख पहलू यह है कि इसमें विभिन्न भागीदारों जैसे- छात्र, शिक्षक, कर्मचारी, और ब्रांच कैंपसों को शामिल कर, एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण अपनाया गया है। यह नया बदलाव उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाओं की ओर संकेत करता है, जहाँ न केवल भारतीय मूल्यों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, बल्कि वैश्विक चुनौतियों और अवसरों के प्रति भी जागरूकता पैदा की जा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट शोध पर केंद्रित है।

प्रश्न : महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के आलोक में शैक्षणिक कार्यक्रमों में मल्टिपल एंट्री और एग्जिट के संबंध में क्या योजना बना रहा है?

उत्तर : हमारे विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अधिकाधिक भाग को लागू कर दिया गया है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति काफी लचीली है। इसमें विद्यार्थियों के लिए आवश्यकतानुसार मल्टिपल एग्जिट हैं ताकि वे आश्यकतानुसार अपनी पढाई में उनका सदुपयोग कर सकें। इसके साथ ही अब तक तीन वर्ष का होने वाला स्नातक, अब चार वर्ष का हो जाएगा। स्नातक करते समय पहले वर्ष में कोर्स छोड़ने पर सर्टिफिकेट मिलेगा, दूसरे वर्ष के बाद एडवांस सर्टिफिकेट/डिप्लोमा मिलेगा एवं तीसरे वर्ष के बाद डिग्री। उच्च शिक्षा और शोध की इच्छा रखने वाले छात्र चौथे वर्ष का कोर्स करेंगे। चार वर्ष के बाद शोधपरक ज्ञान के साथ स्नातक उपाधि (डिग्री विद रिसर्च) मिलेगी। उसी तरह से परास्नातक स्तर पर तीन तरह के विकल्प होंगे। पहला होगा दो वर्ष का मास्टर्स, उनके लिए जिन्होंने तीन वर्ष का डिग्री कोर्स किया है। दूसरा विकल्प है- एक वर्षीय मास्टर्स प्रोग्राम जो चार वर्ष के स्नातक डिग्री कोर्स करने वालों के लिए और तीसरा विकल्प होगा 5 वर्ष का इंटीग्रेटेड प्रोग्राम, जिसमें स्नातक और परास्नातक दोनों एक साथ ही होंगे।

प्रश्न : महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय अपने छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए उच्च शिक्षा व शोध को कैसे बढ़ावा दे रहा है?

उत्तर : राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० ने उच्च शिक्षा को अधिक लचीला और समावेशी बनाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। एमजीसीयू के छात्रों और संकाय सदस्यों के बीच शोध को बढ़ावा देने के लिए यह नीति विभिन्न स्तरों पर नवाचार और गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य को प्रोत्साहित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मल्टिपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम के माध्यम से छात्रों को शिक्षा का असीम अवसर प्रदान किया गया है, जो छात्रों के लिए हितकर है। इसके साथ ही, स्नातक स्तर पर भी गुणवत्तापूर्ण शोध को प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को समग्रता के साथ प्राप्त किया जा सके।

शोध से संबंधित सुविधाओं के लिए हमारे विश्वविद्यालय ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए शोध परियोजना-कार्य हेतु अलग से 2 लाख रुपये तक सीड मनी अनुदान देने की सुविधा प्रदान की है। कई सहायक आचार्य इस कार्यक्रम का हिस्सा बनकर निरंतर कार्य कर रहे हैं। साथ ही, विश्वविद्यालय ने प्रयोगशाला के लिए भी अनुदान में वृद्धि की है, जिससे अब प्रयोगशालाओं में पहले से अधिक उपकरण, रसायन एवं अन्य आश्यक संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। यूजीसी से मिलने वाले अनुदान की राशि 2 करोड़ रुपये से बढ़कर 5 करोड़ रुपये हो गई है और सरकार ने रिकरिंग ग्रांट की राशि को 8 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 20 करोड़ रुपये कर दिया है। जिससे शोध एवं अनुसन्धान कार्य को अधिक प्रोत्साहन मिल रहा है।

एमजीसीयू में शोध और नवाचार के माध्यम से प्रयास किए जा रहे हैं कि भारतीय छात्रों को विदेश जाने की आवश्यकता न हो, बल्कि वे अपने देश में ही उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त कर सकें। खासकर उन विषयों में, जिनमें भारत की विशेषज्ञता है। प्रयास तो यह भी है कि विदेशों से भी छात्र भारत में आकर शिक्षा प्राप्त करें, जिससे भारत शिक्षा का वैश्विक केंद्र बने।

प्रश्न : विश्वविद्यालय परिसर को रैगिंग मुक्त परिसर बनाने की दिशा में क्या प्रयास किये जा रहे हैं?

उत्तर : पिछले आठ वर्षों में रैगिंग का कोई प्रकरण नहीं आया। यह बहुत अच्छी बात है। मुझे लगता है कि इसे लेकर हमारे शिक्षक एवं छात्र दोनों अत्यंत संवेदनशील हैं। यूजीसी के दिशा-निर्देशों के अनुसार एंटी रैगिंग के प्रावधानों एवं दिशा-निर्देशों को विद्यार्थियों के बीच प्रसारित किया गया है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के प्रॉक्टोरियल बोर्ड के सदस्यों एवं चीफ प्रॉक्टर का फोन नंबर तथा ई-मेल आईडी विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं विश्वविद्यालय के सभी परिसरों में फ्लैक्स बोर्ड के माध्यम से संप्रेषित किए गए हैं, जिससे विद्यार्थियों/शोधार्थियों की ऐसी किसी भी समस्या का समाधान अविलम्ब हो सके।

प्रश्न : राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीयकरण की बात करती है। एक शैक्षणिक संस्था के रूप में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीयकरण के लिए आपकी क्या योजना है?

उत्तर: इसके लिए हमने विश्वविद्यालय में एक इंटरनेशनल सेल स्थापित की है। यह प्रकोष्ठ अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के शिक्षकों, शोधार्थियों और छात्रों के साथ संयुक्त उपक्रम बनाकर कार्य करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। हम यह भी प्रयास कर रहे हैं कि हमारे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, शोधार्थी और शिक्षक दुनिया के अन्य देशों के प्रतिष्ठित संस्थानों में अकादमिक कार्यों के लिए जाएँ और उन संस्थाओं से भी विद्यार्थी, शोधार्थी और शिक्षक हमारे विश्वविद्यालय में शैक्षणिक एवं शोध कार्य के लिए आएँ। अभी हाल ही में अपने निकटतम पड़ोसी देश नेपाल के प्रवास के दौरान नेपाल के 'नीति अनुसंधान प्रतिष्ठान' के साथ मैंने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किया है। भारत और नेपाल के बीच संबंध बढ़ाने के लिए जल्दी ही हम एक बड़ा अकादमिक कार्यक्रम आयोजित करेंगे। आने वाले समय में हम देखेंगे की नेपाल के विद्यार्थी बड़ी संख्या में हमारे विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए आएंगे। इसके साथ ही दक्षिण एशिया के अन्य देशों जैसे बांग्लादेश, भूटान और श्रीलंका से भी छात्र-छात्राएँ एवं शोधार्थी हमारे विश्वविद्यालय में नामांकन के लिए आएँ ऐसी हमारी नीति है। दक्षिण पूर्व एशिया के साथ ही इंडियन डायस्पोरा के बहुत से देश, जहां भारतवंशी लोग रहते हैं, वहाँ से भी छात्र हमारे यहाँ प्रवेश लेने आएँगे। हमारी योजना है कि इन देशों के संस्थानों के साथ हम समझौता करें और संयुक्त रूप से अकादमिक परियोजनाओं पर कार्य करें। समय के साथ जब हमारा विश्वविद्यालय पूरी तरह से अपने स्थायी परिसर में स्थापित हो जाएगा, तब इन प्रयासों में न केवल तेजी आएगी बल्कि इसका परिणाम भी अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देगा।

प्रश्न : महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप, विश्वविद्यालय-उद्योग लिंकेज अवसरों आदि के माध्यम से कौशल विकास और रोजगार क्षमता बढ़ाने की योजना कैसे बना रहा है?

उत्तर : महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के तहत इंटर्नशिप, अप्रेंटिसशिप और विश्वविद्यालय-उद्योग लिंकेज के माध्यम से कौशल विकास और रोजगार क्षमता को बढ़ाने पर जोर दे रहा है। NEP के मल्टिपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम ने छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने का एक लचीला और स्टूडेंट-फ्रेंडली तरीका दिया है, जिससे वे शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर स्वयं को कौशल संपन्न बना सकें।

विश्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर भी कौशल आधारित पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना है। ये पाठ्यक्रम छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं बल्कि व्यावहारिक और रोजगारपरक कौशल भी प्रदान करेंगे। इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य छात्रों को रोजगार के लिए अधिक सक्षम बनाना है, जिससे वे तुरंत इंडस्ट्री में काम करने के लिए तैयार हो सकें। विश्वविद्यालय की योजना है कि भविष्य में भी ऐसे पाठ्यक्रम शुरू किए जाएँ, जो उद्योग जगत की माँगों के अनुरूप हों और छात्रों को आत्मनिर्भर बनने में मदद करें। अकादमिक परिषद् ने इन नए पाठ्यक्रमों को मंजूरी दी है, जो छात्रों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम बनाएंगे। इसके अलावा, विश्वविद्यालय ने कई वोकेशनल कोर्सेज की शुरुआत की है, जिनका उद्देश्य छात्रों को उनके चुने हुए क्षेत्र में व्यावहारिक कौशल प्रदान करना है। यह पहल छात्रों को रोजगार के अधिक अवसर प्रदान करेगी और उन्हें अपने करियर में सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचने में मदद करेगी। इस योजना के तहत प्रबंधन विज्ञान विभाग में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा खाद्य एवं कृषि व्यवसाय में एमबीए, टेलीविजन पत्रकारिता, डिजिटल मीडिया तथा विज्ञापन एवं जनसंपर्क में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स, सेंटर फॉर बायोइन्फरमेटिक्स एंड मॉलिक्यूलर मॉडलिंग, साइबर सुरक्षा केन्द्र, अभियांत्रिकी, प्रदर्शन कला, विधि एवं विधिक अध्ययन सहित कई पाठ्यक्रमों को शुरू करने की योजना है।

प्रश्न : विश्वविद्यालय के विविध पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल किया गया है। भारतीय भाषाओं और भारतीय ज्ञान परम्परा को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय की क्या योजना है?

उत्तर : उच्च शिक्षण संस्थानों में मातृभाषा/स्थानीय भाषाओं में शिक्षण के संदर्भ में, विश्वविद्यालय ने स्थानीय और भारतीय भाषाओं में शिक्षण को प्रोत्साहन देने की दिशा में कदम उठाए हैं। इससे छात्रों को उनकी मातृभाषा/स्थानीय भाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी समझ और कौशल विकास में भी सुधार होता है।

इसके अलावा भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल करने की पहल भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करने और छात्रों को अपनी सांस्कृतिक और शैक्षणिक धरोहर से जोड़ने के उद्देश्य से की गई है। इसके लिए विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान परम्परा तथा जनजातीय अध्ययन केन्द्र सहित कई अन्य केन्द्र एवं विभागों को शुरू करने की योजना है।

प्रश्न : अपने पुरा-छात्रों के लिए विश्वविद्यालय की क्या योजना है?

उत्तर: हमारे विश्वविद्यालय में पूर्व छात्रों के लिए एक पुरा-छात्र प्रकोष्ठ का गठन किया गया है और उसके पंजीकरण की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। हमारे विश्वविद्यालय में पुरा-छात्र प्रकोष्ठ से संबंधित प्रावधान भी तैयार कर लिए गए हैं और जल्दी ही इस प्रकोष्ठ के पंजीकरण का कार्य भी पूरा हो जाएगा। विश्वविद्यालय के इस प्रकोष्ठ की ओर से पूर्व छात्रों को कार्यक्रमों की सूचना और संदेश इत्यादि निरंतर भेजे जा रहे हैं। आने वाले समय में जल्द हीं पुरा-छात्र प्रकोष्ठ सक्रिय रूप में काम करता दिखाई देगा।

प्रश्न : राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० शिक्षा के भारतीयकरण तथा अपने देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीयकरण पर बल देती है। इसके साथ ही विश्व नागरिकता का दृष्टिकोण भी इस शिक्षा नीति में शामिल है। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय वैश्विक नागरिकता के दृष्टिकोण से क्या कार्य कर रहा है?

उत्तर : वैश्विक नागरिकता की अवधारणा कहीं न कहीं हमारी सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ी हुई है। 'वसुधैव कुटुंबकम' का भाव हमारी संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से 'संपूर्ण विश्व ही परिवार है' की मान्यता परंपरागत ढंग से हमें संस्कार रूप में मिली हुई है। संपूर्ण विश्व को परिवार मानकर उसके कल्याणार्थ कार्य करना, वैश्विक नागरिकता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। हम अपने छात्रों को इस तरह शिक्षित करते हैं कि वह अपने समाज और देश के प्रति समर्पित तो हों ही और साथ ही साथ एक वृहद और व्यापक दृष्टिकोण भी लेकर चलें। पूरी दुनिया में रहने वाले सभी लोगों को अपने परिवार का हिस्सा मानें। इसके साथ ही दुनिया के अलग-अलग देश में भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं के समाधान की राह तलाशें। दुनिया भर में पर्यावरण की समस्या, क्षेत्रीय संघर्ष की समस्या, नशे की समस्या, मानव तस्करी की समस्या तथा मानवाधिकारों के हनन से जुड़ी हुई समस्याओं के साथ ही तमाम अन्य समस्याओं पर दूसरे देश के लोगों के साथ मिलकर कार्य करें। उन समस्याओं की जड़ तलाशें और उनके निराकरण का उपाय खोजें। इन समस्याओं और बुराइयों को समाज से समाप्त करें। ऐसा दृष्टिकोण हर भारतीय के अंदर अपेक्षित है। हमने परंपरा से यह दृष्टिकोण संस्कार के रूप में प्राप्त किया है और हम पूरी तरह प्रयास करते हैं कि हमारी शिक्षा प्रणाली और शिक्षा पद्धति ऐसी हो, जो हमारे विद्यार्थीयों को आज के दौर के हिसाब से न केवल कौशल और ज्ञान दे बल्कि प्राणियों में सद्भावना और समस्त विश्व के कल्याण का विचार और संवेदना भी पैदा करे।

प्रश्न : राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के संबंध में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों को आप क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर : राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० छात्रों के सामर्थ्य को बढ़ाने का काम करेगी। इस शिक्षा नीति के प्रावधानों के अंतर्गत शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में बहुमुखी प्रतिभा का विकास होगा। जिस परिवर्तनशील गति से समाज आगे बढ़ रहा है, उसके सापेक्ष विद्यार्थियों के विकास की दृष्टि से यह शिक्षा नीति कारगर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० बहुत लचीली और कई मायने में बेहतर भी है। इसके कारण छात्रों को अपना करियर बेहतर बनाने के अवसर अपेक्षाकृत अधिक मिलेंगे। इस शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों को अपने व्यक्तित्व के विकास, अपनी रचनात्मकता के विकास और अपनी सामाजिक उपयोगिता बढ़ाने के बहुत से आयाम मिलते हैं। हमारे विश्वविद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर जो ई-रिसोर्सेज मिलते हैं, वे बहुत समृद्ध हैं। आज तो इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी का युग है। ऐसा कोई साहित्य, ज्ञान-विज्ञान की ऐसी कोई पुस्तक नहीं है, जो अमेरिका और यूरोप के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में उपलब्ध हो और वह हमारे विश्वविद्यालय में न मिल पाए, या हमारा छात्र उसे न हासिल कर सके। संचार क्रांति ने सिद्ध कर दिया है कि हम सब एक ही धरातल पर खड़े हुए हैं। मैं अपने छात्रों से आग्रह करूँगा कि उन्हें जो कुछ भी सुविधा मिल रही हैं, इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी के साथ-साथ उसका अधिकतम उपयोग करें। अपने को सामर्थ्यवान बनाएं ताकि जब अंतरराष्ट्रीय पटल पर वह खड़े हों तो सफल हों। यह दुनिया 'योग्यतम की उत्तरजीविता' (सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट) के सिद्धांत पर चलती है। इसलिए मैं अपने विद्यार्थियों से अपेक्षा करता हूँ कि वह वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में अपने ज्ञान और सामर्थ्य में निरंतर वृद्धि कर एक सक्षम और सशक्त व्यक्ति के रूप में खड़े हो सकें, जो दुनिया की हर प्रतिस्पर्धा का सफलतापूर्वक सामना करने में सक्षम हो। अपने विश्वविद्यालय के शिक्षकों और गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों से अपील करता हूँ कि वह इस विश्वविद्यालय के अकादमिक चरित्र के निरंतर विकास और प्रगति के लिए समर्पित बने रहें। अपने ज्ञान और परिश्रमपूर्वक योगदान से इस विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय ऊँचाई तक ले जाएँ।

[परिसर प्रतिबिंब के उप संपादक डॉ. श्याम नन्दन के साथ विशेष चर्चा।]

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

www.mgcub.ac.in

parisarpratibimb@mgcub.ac.in

@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

नए सत्र के शुभारंभ पर रुद्राभिषेक पूजन और हवन का आयोजन

रुद्राभिषेक करते कुलपति एवं अन्य पदाधिकारी

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयूबी) में ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत रुद्राभिषेक पूजन और हवन के साथ हुई। यह कार्यक्रम गांधी भवन परिसर में आयोजित किया गया, जिसमें कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अपनी उपस्थिति से गरिमा बढ़ाई। उन्होंने शैक्षणिक सत्र की शुरुआत आशीर्वाद और सकारात्मक ऊर्जा के साथ करने के महत्व पर जोर दिया तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता और आध्यात्मिक कल्याण के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व को रेखांकित किया। भगवान शिव को समर्पित रुद्राभिषेक पूजन में पवित्र सामग्रियाँ अर्पण की गई, उसके बाद हवन हुआ, जिसमें पवित्र अग्नि में आहुति दी गई।

इन अनुष्ठानों का पर्यावरण को शुद्ध करने और सकारात्मक ऊर्जा लाने में विश्वास किया जाता है, जिससे शैक्षणिक वर्ष के लिए सामंजस्यपूर्ण वातावरण स्थापित होता है। प्रो. प्रसून दत्त ने नए सत्र के प्रति अपनी आशावादिता व्यक्त की। "हम एक समृद्ध शैक्षणिक वर्ष की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो सीखने और विकास से भरा होगा। हमारा लक्ष्य हमारे छात्रों के लिए एक समर्थन और प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करना है, ताकि वे अपने संबंधित क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें" जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका मिश्रा ने कहा "इस नए शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत एक नवीनीकरण और संभावनाओं का समय है।"

हम एक ऐसा वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो बौद्धिक विकास और व्यक्तिगत विकास को पोषित करे। संकाय सदस्यों, प्रशासनिक कर्मचारियों, और छात्रों ने इस आध्यात्मिक आयोजन में विश्वविद्यालय की निरंतर प्रगति और सफलता के लिए प्रार्थना की। प्रो. सुनील श्रीवास्तव, प्रो. शिरीष मिश्रा, प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी, प्रो. बिमलेश सिंह, डॉ. अंजनी श्रीवास्तव, डॉ. श्याम झा, और डॉ. संतोष त्रिपाठी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन ने सभी उपस्थित लोगों के बीच सामुदायिक भावना और साझा उद्देश्य की भावना को प्रबल किया, जिससे नए शैक्षणिक सत्र की एक सकारात्मक शुरुआत हुई।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में सत्रांत परीक्षा का परिणाम घोषित

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने सत्रांत परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर विश्वविद्यालय ने अपनी प्रोएक्टिव अप्रोच और समय पर परिणाम घोषित करने की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया है। विश्वविद्यालय ने छात्रों के शैक्षणिक अनुभव को उत्कृष्ट बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। विश्वविद्यालय प्रशासन की प्रोएक्टिव अप्रोच ने सुनिश्चित किया है कि शैक्षणिक सत्र और परीक्षा परिणाम समय पर संपन्न हों, जिससे छात्रों को अपने अध्ययन में किसी प्रकार की बाधा का सामना न करना पड़े। केविवि. ने सत्रांत परीक्षा के परिणाम समय पर घोषित करके अपनी विश्वसनीयता और छात्रों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया है। यह कदम छात्रों को आगामी शैक्षणिक सत्र की तैयारी करने में सहूलियत प्रदान करेगा। विश्वविद्यालय ने सत्र को नियमित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

यह सुनिश्चित किया गया है कि शैक्षणिक सत्र की शुरुआत और समापन समय पर हो, जिससे शैक्षणिक प्रक्रिया में निरंतरता बनी रहे और छात्रों की शिक्षा में किसी प्रकार की रुकावट न आए। नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत जुलाई के द्वितीय सप्ताह से की जाएगी। यह सुनिश्चित करेगा कि छात्रों को नए सत्र के लिए पर्याप्त तैयारी का समय मिल सके और उनकी शैक्षणिक गतिविधियाँ बिना किसी विलम्ब के प्रारम्भ हो सकें। विभिन्न विभागों के परीक्षा परिणाम उत्साहजनक रहे हैं। अधिकांश छात्रों ने अच्छे अंक प्राप्त किए हैं और प्रमोशन प्रतिशत भी सराहनीय है। यह विश्वविद्यालय के उच्च शैक्षणिक मानकों और छात्रों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। परीक्षा परिणामों की पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए केविवि. ने सभी परिणामों को अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड कर दिया है।

इसके अतिरिक्त, परिणाम विभागाध्यक्षों और संकाय अध्यक्षों को भी भेजे गए हैं, ताकि छात्रों को अपने परिणामों के बारे में किसी भी प्रकार की शंका न हो। कुलपति, प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अपने सभी छात्रों, संकाय सदस्यों और प्रशासनिक कर्मचारियों को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई देते हुए कहा "हमारे विश्वविद्यालय ने फिर से अपने उच्च शैक्षणिक मानकों को साबित किया है। सत्रांत परीक्षा के परिणाम हमारे छात्रों की मेहनत और हमारी प्रोएक्टिव अप्रोच का परिणाम है।"परीक्षा नियंत्रक कृष्णकांत उपाध्याय ने कहा, "विश्वविद्यालय में पूर्ण पारदर्शिता और समय पर परिणाम घोषित करना हमारी प्राथमिकता है। हम इस पर गर्व करते हैं कि हम छात्रों को सर्वोत्तम शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।"

" समावेशी जनसंख्या एवं वर्तमान परिदृश्य" विषयक एक विशिष्ट व्याख्यान

व्याख्यान में उपस्थित प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

सेहत केन्द्र द्वारा विश्व जनसंख्या दिवस के उपलक्ष्य में" समावेशी जनसंख्या एवं वर्तमान परिदृश्य" विषयक एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। विशिष्ट वक्ता के रूप में समाज कार्य विभाग की सहायक आचार्या डॉ रश्मिता राय ने वक्तव्य दिया। विश्व जनसंख्या दिवस 2024 की थीम "लीव नो वन बिहाइंड, काऊंट एव्रीवन" को ध्यान में रखते हुए समावेशी और सतत विकास युक्त जनसंख्या पर अपना गहन चिंतन प्रस्तुत किया।

मुख्य वक्ता के रूप में गाँधी एवं शान्ति अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ अभय विक्रम सिंह ने विश्व जनसंख्या दिवस की संकल्पना, उद्देश्यों एवं नीतियों पर अपना उद्बोधन दिया। अपने उद्बोधन में डॉ सिंह ने एक संतुलित जनसंख्या को ही समावेशी एवं सतत विकास का उत्तम उपाय बताया। अपने वक्तव्य में डॉ सिंह ने भारतीय सामाजिक चिंतकों के साथ-साथ प्लेटो, अरस्तू आदि अनेक पाश्चात्य समाज वैज्ञानिकों के मर्यादित जनसंख्या एवं सतत विकास सम्बन्धी दृष्टिकोण को भी श्रोताओं के समक्ष रखा। उक्त कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अध्यापकगण, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित इस रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन समाज कार्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ अनुपम कुमार वर्मा ने किया। सभी वक्ताओं, श्रोताओं तथा सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापन सेहत केन्द्र के सह समन्वयक डॉ बबलू पाल ने किया।

पत्रकारिता का मूल आधार विश्वसनीयता: बृजेश दुबे

प्रतीकात्मक तस्वीर

मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा चाणक्य परिसर स्थित पंडित राजकुमार शुक्ल सभागार में 'पत्रकारिता का बदलता स्वरूप' विषयक एक दिवसीय विद्यार्थी उन्मुखीकरण सह संगोष्ठी आयोजित हुई। कार्यक्रम के संरक्षक एमजीसीयूबी के कुलपति प्रो.संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार बृजेश दुबे, सारस्वत अतिथि प्रो . शिरीष मिश्र, संकायाध्यक्ष वाणिज्य एवं प्रबंध संकाय, अध्यक्षता डॉ. अंजनी कुमार झा, विभागाध्यक्ष मीडिया अध्ययन विभाग और संयोजक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र थे।बतौर मुख्य वक्ता बृजेश दुबे ने कहा की पत्रकारिता में बदलाव को जानने के लिए इसके इतिहास को समझना जरूरी है। पत्रकारिता का मूल आधार विश्वसनीयता, सत्यता तथा निष्पक्षता होती है तथा एक सच्चे पत्रकार को इसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए। पत्रकारिता के विद्यार्थियों को यह जानना बेहद जरूरी है कि समाचार को किसे देना है और कब देना है। यह पत्रकारिता के लिए बहुत बड़ी चुनौती है कि हम सूचना किस प्रकार दे रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा की एक अच्छे पत्रकार बनने के लिए विद्यार्थियों को अध्ययन करना, अपनी भाषा पर पकड़ होना , सूचना को स्पष्ट व संक्षिप्त में लिखना तथा विभिन्न कड़ियों को जोड़ने की कला विकसित करने की जरूरत है। यह तभी संभव हो पाएगा जब मीडिया के विद्यार्थी रोजाना अखबार व अधिक से अधिक पुस्तकों का अध्ययन करें। एक अच्छे पत्रकार को हमेशा अपने दिमाग में शक के कारणों को रखना तथा उसके सत्यता की जांच करने के लिए तत्पर होना चाहिए। उसके दिमाक में कई सारे प्रश्न होने चाहिए ताकि वह तार्किक व पूर्ण सूचना लोगों तक पहुँचा सके। उन्होंने प्रिंट मीडिया की विशेषता को उजागर करते हुए कहा कि यह एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जिसमें श्रवण भी है,दृश्य भी है और शब्द भी हैं। प्रो. शिरीष मिश्र ने कहा कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा सबसे मजबूत स्तंभ है तथा इसे मजबूत बनाये रखने के लिए इसमें विश्वसनीयता व सत्यता होनी चाहिए। उन्होंने प्रिंट मीडिया को विश्वसनीयता का स्रोत बताया और कहां की आज भी लोग अखबारों पर अधिक विश्वास करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों का हौंसला बुलंद करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को अपना सपना पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए तथा जीवन के उतार-चढ़ाव से घबराना नहीं चाहिए बल्कि उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए। अध्यक्षीय उद्बोधन में मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ .अंजनी कुमार झा ने कहा कि विद्यार्थी के उन्मुखीकरण का मुख्य उद्देश्य है कि विद्यार्थी विभाग को अच्छी तरह जानें तथा सभी नए प्रवेशीय छात्र-छात्राओं को अच्छी मार्गदर्शन मिले कि वह भविष्य में अच्छे पत्रकार बन सकें।

उन्होंने कहा कि समय की मांग के अनुसार मीडिया के विद्यार्थियों को ढालना चाहिए क्योंकि मीडिया में नित नए बदलाव आ रहे है। सामाजिक सरोकारों की पत्रकारिता पर उन्होंने जोर दिया। स्वागत उद्बोधन में डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने कहा कि उन्मुखीकरण कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया है, ताकि वह विश्वविद्यालय को समझें और उससे परिचित हों। मीडिया में बहुत सारे अवसर है जिसके अनुरूप अपने आप को तैयार करके उसे प्राप्त कर सकते है। आयोजन समिति के सदस्य डॉ.साकेत रमण ने कहा कि विद्यार्थियों को खुद को पहचानने और स्वयं की क्षमता को जानने की जरूरत है ताकि वह भविष्य में अच्छा प्रदर्शन कर सकें। डॉ . सुनील दीपक घोड़के ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए मीडिया के विभिन्न आयामों से परिचित कराया। सहायक प्राध्यापिका डॉ. उमा यादव ने मीडिया के विद्यार्थियों को लेखन और अध्ययन पर जोर देने की बात की। मंच संचालन रुचि भारती, छात्रा एमजेएमसी और अंकित कुमार बीएजेएमसी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्राध्यापक डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में पत्रकारों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों की उपस्थित थी।

विश्वविद्यालय स्तरीय मैराथन प्रतियोगिता का आयोजन

विश्वविद्यालय में स्थापित सेहत केन्द्र द्वारा 10 अगस्त को विश्वविद्यालय स्तरीय मैराथन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने बहुत उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की। इस मैराथन प्रतियोगिता में न केवल छात्रों ने ही भाग लिए अपितु छात्राओं ने भी उत्साह पूर्वक भाग लिया। छात्राओं में शान्ति (समाज शास्त्र विभाग), ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। लिप्सा मोहंती (अर्थशास्त्र विभाग) ने द्वितीय, रंजू यादव (संस्कृत विभाग) ने तृतीय, पूनम कुमारी (अंग्रेजी विभाग) ने चतुर्थ तथा मोहना सिंह (समाज कार्य विभाग) पांचवें स्थान पर रहीं। इसी प्रकार छात्रों में श्रीवास्तव दिग्विजय राज (संस्कृत विभाग) प्रथम,विवेक कुमार (अंग्रेजी विभाग) द्वितीय,बलिराम (संस्कृत विभाग) तृतीय,अशर्फी लाल (हिन्दी विभाग) चतुर्थ तथा शिव प्रसाद पाल (संस्कृत विभाग) पांचवें स्थान पर रहे।

इस मैराथन प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने वालों में से प्रथम 5 छात्राओं तथा प्रथम 5 छात्रों का चयन जिला स्तरीय मैराथन प्रतियोगिता के लिए किया गया। इस अवसर पर सेहत केन्द्र के समन्वयक प्रो पवनेश कुमार तथा सेहत केन्द्र के सह समन्वयक डॉ बबलू पाल संरक्षक की भूमिका में उपस्थित रहे।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

www.mgcub.ac.in

parisarpratibimb@mgcub.ac.in

@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय एक्सपो में एमजीसीयूबी को मिला द्वितीय पुरस्कार

पुरस्कार ग्रहण करते विवि के पदाधिकारी एवं विद्यार्थी

राष्ट्रीय एक्सपो की झलकियाँ

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय एक्सपो में केंद्रीय विश्वविद्यालयों, आईआईटी, आईआईएम और अन्य राज्य और केंद्र सरकार के संस्थानों के बीच द्वितीय पुरस्कार जीता। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय ने 20 से 22 जुलाई, 2024 तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में सरकारी उपलब्धियों और योजनाओं के एक्सपो में भाग लिया। एक्सपो में एमजीसीयू ने एनईपी आधारित शैक्षणिक संरचना, भारतीय ज्ञान प्रणाली पर जोर, विकल्प आधारित क्रेडिट संरचना, अनुसंधान उन्मुख शिक्षाशास्त्र, अनुभवी संकाय द्वारा कक्षाओं की नियमितता सहित अपने शैक्षणिक आधार का बेहतर प्रदर्शन किया। विश्वविद्यालय ने स्वच्छ भारत अभियान, आजादी का अमृत महोत्सव, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, फिट इंडिया सप्ताह और भारत सरकार की अन्य अनोखे पहल का भी प्रदर्शन किया।

डिजिटल पहल के तहत, एमजीसीयू ने ई-संसाधनों, स्वयं पाठ्यक्रम एकीकरण, स्मार्ट कक्षाओं, टर्निटिन और व्याकरण पहुंच की उपलब्धता पर प्रकाश डाला। ऑडियो-विज़ुअल डिस्प्ले के माध्यम से, एमजीसीयू ने दीक्षांत समारोह, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों, प्रकाशनों, पुरस्कारों और संकाय सदस्यों द्वारा पेटेंट का भी अच्छा प्रदर्शन किया।

एमजीसीयू द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में स्कूली बच्चों, विभिन्न राज्यों के गणमान्य व्यक्तियों और उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षाविदों, सरकारी संस्थानों के प्रतिनिधियों, मीडिया कर्मियों और दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों के स्थानीय लोगों सहित कई आगंतुक का आगमन हुआ।

सभी ने विश्वविद्यालय की सराहना की। आगन्तुकों ने आईआईआरएफ रैंकिंग में सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों के बीच 20वीं रैंक हासिल करने के लिए विश्वविद्यालय को बधाई भी दी। आगंतुक एमजीसीयू के प्रोफेसर और संकाय सदस्यों द्वारा सुंदर प्रदर्शनी और गर्मजोशी भरे आतिथ्य से प्रभावित हुए। अनेक लोगों ने एमजीसीयू में पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रमों, प्रवेश प्रक्रियाओं और एमजीसीयू में छात्र जीवन के बारे में पूछताछ की। प्रदर्शनी में संकाय सदस्यों की पुस्तकों और प्रकाशनों ने बहुत ध्यान आकर्षित किया। कई पाठकों ने एमजीसीयू के छात्रों और संकाय द्वारा पाठ्यक्रम कैटलॉग, और शोध और रचनात्मक लेखन को भी पसंद किया।

प्रदर्शनी में एमजीसीयू को केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, आईआईटी, आईआईएम और राज्य और केंद्र सरकार के संगठनों सहित सभी भाग लेने वाले संस्थानों के बीच द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। एमजीसीयू के प्रतिनिधि प्रोफेसर शिरीष मिश्रा, डॉ. उमेश पात्रा, शोधकर्ता रवि रंजन और नवीन कुमार ने नई दिल्ली में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

Shri Rajkumar Chahar,
Hon'ble Member of Parliament
with Prof. Shirish Mishra and Dr. Umesh Patra.

रसायन विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. राकेश पांडे, डॉ. नीलाभ श्रीवास्तव, डॉ. कुंदन किशोर रजक और डॉ. बबलू पाल सहित टीम के सभी सदस्यों के नवीन विचारों और मेहनती प्रयासों से प्रदर्शनी को मूर्त रूप दिया जा सका।

इस उपलब्धि पर विवि के कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय परिवार को बधाई दी एवं सभी सदस्यों के मेहनत की सराहना की।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय तथा भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केन्द्र के बीच महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय (MGCU), मोतिहारी और होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केन्द्र (HBCHRC) ने गुरुवार को एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए। इस महत्वपूर्ण अवसर पर HBCHRC के प्रभारी अधिकारी डॉ. रविकांत सिंह और MGCU के शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से हस्ताक्षर किए। यह समझौता केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव की देखरेख में संपन्न हुआ। इस समझौता ज्ञापन के तहत दोनों संस्थाएँ बिहार में जीनोमिक प्रयोगशाला, पुस्तकालय और परामर्श के विभिन्न क्षेत्रों में नई पहल और संसाधनों के विकास के लिए संकल्पित हैं। इस समझौते का प्रमुख उद्देश्य HBCHRC के जीनोमिक लैब में कार्यरत जूनियर रिसर्च फेलो (JRF) को प्रति वर्ष महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में पी-एच.डी. शोधकार्य हेतु में शामिल करना है।

इस वर्ष HBCHRC के दो JRF को महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, में पीएचडी के लिए नामांकित किया जाएगा और अगले वर्ष से इस संख्या को बढ़ाकर पाँच कर दिया जाएगा। इस अवसर पर केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि इस समझौते के अनुसार केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्र भी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केन्द्र के जीनोमिक लैब में जाकर वहाँ के अनुसंधान और प्रयोगशाला की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इस सुविधा से केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों को अनुसंधान में नई दिशा और अवसर मिलेंगे, जो उनके शैक्षणिक और पेशेवर विकास के लिए लाभकारी साबित होंगे। इससे दोनों संस्थाओं के बीच अकादमिक क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा मिलेगा और नये शोध की संभावनाओं को प्रोत्साहन मिलेगा। होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. रविकांत सिंह ने बताया कि HBCHRC का जीनोमिक लैब बिहार का एकमात्र लैब है, जहाँ जीनोमिक सीक्वेंसिंग की जाती है। यह लैब अत्याधुनिक तकनीकों और उपकरणों से सुसज्जित है, जो कैंसर की जीनोमिक्स में महत्वपूर्ण शोध और विश्लेषण की सुविधा प्रदान करता है। इस समझौते के माध्यम से, जीनोमिक लैब में किए जा रहे शोध और अनुसंधान को राज्य के शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझा किया जाएगा, जिससे नवीनतम तकनीकों की जानकारी को व्यापक स्तर पर प्रसारित किया जा सकेगा।

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि यह समझौता बिहार के शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। दोनों संस्थाओं के बीच यह सहयोग न केवल शोध की गुणवत्ता को बढ़ाएगा, बल्कि भविष्य में चिकित्सा और बायोटेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नये अनुसंधानों और नवाचारों को भी प्रोत्साहित करेगा। इससे बिहार में जीनोमिक्स और कैंसर रिसर्च के क्षेत्र में नई संभावनाएँ खुलेंगी और छात्रों को उन्नत शिक्षा और अनुसंधान के अवसर प्राप्त होंगे। जनसंपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्याम नन्दन ने बताया कि इस समझौते से दोनों संस्थाओं के छात्रों में नई क्षमताओं का विकास होगा और उनके शोध कार्य में नवाचार और गुणवत्ता में वृद्धि होगी।। यह बिहार राज्य के विकास और उसकी शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा देने में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस अवसर पर केंद्रीय विश्वविद्यालय में अकादमिक मामलों के निदेशक बृजेश पांडेय, मुख्य कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह, विशेष कार्याधिकारी (प्रशासन) सच्चिदानंद सिंह और जनसंपर्क अधिकारी शेफालिका मिश्रा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

एमजीसीयू और बीआरएबीयू के बीच एमओयू

एमओयु पर हस्ताक्षर करने के बाद दोनों विश्वविद्यालयों के पदाधिकारी

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय और बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय (बीआरएबीयू) के बीच एक महत्वपूर्ण एमओयू (मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग) पर हस्ताक्षर किए गए।

कार्यक्रम एमजीसीयू के प्रशासनिक भवन में आयोजित किया गया, जहां एमजीसीयू के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव और बीआरएबीयू के कुलपति प्रो. डी.सी. राय ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर दोनों विश्वविद्यालयों के प्रमुख अधिकारियों की उपस्थिति रही। समझौता ज्ञापन (एमओयू) का मुख्य उद्देश्य एमजीसीयू और बीआरएबीयू के बीच अकादमिक, अनुसंधान, परामर्श, प्रशिक्षण, ज्ञान साझाकरण, फैकल्टी विकास, उनके आदान-प्रदान पर जोर और संयुक्त कार्यक्रमों के क्षेत्र में सहयोग का एक ढाँचा स्थापित करना है। इस अवसर पर प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा, "यह एमओयू एमजीसीयू की शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में उच्चतर मानकों को प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हम बीआरएबीयू के साथ मिलकर कई नए आयाम स्थापित करेंगे। इससे दोनों विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों को लाभ होगा और ज्ञान के आदान-प्रदान के बेहतर अवसर भी प्राप्त होंगे।"प्रो. डी.सी. राय ने भी इस एमओयू को दोनों संस्थानों के लिए ऐतिहासिक कदम बताया और कहा कि "यह साझेदारी दोनों विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक और अनुसंधान प्रयासों को समृद्ध करेगी, और इससे हमारे विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को लाभ होगा।" इस एमओयू के तहत दोनों विश्वविद्यालयों के बीच शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग की संभावनाओं को सशक्त करने के लिए कई संयुक्त कार्यक्रमों और परियोजनाओं को प्रारंभ किया जाएगा।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

एमजीसीयू में जनसंपर्क प्रकोष्ठ का हुआ गठन

● *डॉ. श्याम नन्दन बने जनसंपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक*

डॉ. श्याम नन्दन (फाइल फोटो)

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के सक्षम प्राधिकारी के आदेशानुसार विश्वविद्यालय के जनसंपर्क प्रकोष्ठ का पुनर्गठन किया गया है। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा अधिसूचित और नवगठित जन-संपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. श्याम नन्दन होंगे। इसके अतिरिक्त नौ अन्य लोग भी सदस्य बनाए गए हैं, जिसमें डॉ. अंजनी कुमार झा (विभागाध्यक्ष, मीडिया अध्ययन), डॉ. सपना सुगंधा (विभागाध्यक्ष, प्रबंधन विभाग), डॉ. पंकज कुमार सिंह (राजनीतिक विज्ञान विभाग), डॉ. उमेश पात्रा (अंग्रेजी विभाग), डॉ. कुंदन किशोर (जंतु विज्ञान विभाग), डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा (हिंदी विभाग), डॉ. परमात्मा कुमार मिश्रा (मीडिया अध्ययन विभाग), डॉ. सुनील दीपक घोडके (मीडिया अध्ययन विभाग), डॉ. अनुपम कुमार वर्मा (सामाजिक कार्य विभाग), डॉ. आशा मीणा (हिंदी विभाग) के अलावा केन्द्रीय विश्वविद्यालय की जनसंपर्क अधिकारी सुश्री शेफालिका मिश्रा सदस्य-सचिव के रूप में शामिल हैं। जन-संपर्क प्रकोष्ठ के नवनियुक्त संयोजक डॉ. श्याम नन्दन ने बताया कि यह प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय, अकादमिक जगत और इंडस्ट्री के बीच इंटरफेस विकसित करने के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक, शोध और अन्य संस्थानों के साथ नेटवर्किंग की सुविधा प्रदान करने, विश्वविद्यालय की सकारात्मक चर्चा, ख्याति एवं प्रतिष्ठा के साथ ही बेहतर ब्रांडिंग के लिए विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों और उपलब्धियों के समुचित प्रचार-प्रसार करने, विश्वविद्यालय-परिसर में एक स्वस्थ अकादमिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों, प्रशासनिक कर्मचारियों और छात्रों के बीच आंतरिक संबंधों को बेहतर बनाने में मदद करने, बड़े पैमाने पर समुदायिक प्रतिभागिता के साथ ही छात्रों के प्लेसमेंट को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न संगठनों के साथ नेटवर्किंग करने तथा विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखने के लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए बनाया गया है।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय का यह जन-संपर्क प्रकोष्ठ उपर्युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाओं, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों तथा अन्य प्रासंगिक कार्यक्रमों के आयोजन के साथ ही विश्वविद्यालय के सक्षम प्राधिकारी द्वारा समय-समय पर सौंपे गए अन्य कार्यों को भी निष्पादित करेगा। यह प्रकोष्ठ अपनी घोषित भूमिकाओं के संबंध में कार्यक्रमों/गतिविधियों के मूल्यांकन, रूपरेखा के निर्माण और सुचारू निष्पादन करने के लिए हर पखवाड़े कम से कम एक बार बैठक कर विश्वविद्यालय के सक्षम प्राधिकारी को इसकी रिपोर्ट सौंपेगा। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने जनसंपर्क प्रकोष्ठ के नवनियुक्त संयोजक डॉ. श्याम नन्दन सहित सभी सदस्यों को शुभकामनाएं दीं। जन-संपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक सहित सभी सदस्यों को प्रो. प्रसून दत्त सिंह, प्रो. सुनील श्रीवास्तव, प्रो. रफीकुल इस्लाम, प्रो. बृजेश पाण्डेय, प्रो. आनद प्रकाश, प्रो. आर्त्तत्राण पाल, प्रो. शिरीष मिश्रा, प्रो. प्रणवीर सिंह, प्रो. रंजीत चौधरी, डॉ. अंजनी श्रीवास्तव, डॉ. श्याम कुमार झा, डॉ. बिमलेश सिंह, डॉ. गरिमा तिवारी, डॉ. शिवेंद्र सिंह, डॉ. दुर्गेश्वर, डॉ. श्याम बाबू, डॉ, बुद्धिप्रकाश जैन, डॉ. नीलाभ, डॉ. बब्लू पाल, डॉ. पाथलोथ ओमकार सहित संख्या विश्वविद्यालय के शिक्षकों तथा नगर के गणमान्य लोगों में रविशंकर वर्मा, अरुण सिन्हा, डॉ. अतुल श्रीवास्तव, जितेन्द्र त्रिपाठी, मनोज क्याल सहित बड़ी संख्या में लोगों ने शुभकामनाएँ दीं।

प्रबंधन विज्ञान विभाग के तीन शोधार्थियों को पीएचडी उपाधि

अंकिता कुमारी

रौशन कुमार

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के प्रबंधन विज्ञान विभाग के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि विभाग के तीन शोधार्थियों चंदन वीर, रौशन कुमार और अंकिता कुमारी को उनके शोधकार्य के लिए पीएचडी उपाधि प्रदान की गई है। यह उपलब्धि न केवल उनके अकादमिक करियर में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, बल्कि विभाग की उच्च गुणवत्ता वाले शोधार्थियों को तैयार करने की प्रतिष्ठा को भी बढ़ावा देती है।

शोधार्थियों के शोध विषय:

चंदन वीर - "बिहार के लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों में ग्रीन मार्केटिंग प्रथाओं की संभावनाओं पर एक अध्ययन" पर शोध कार्य पूरा किया है। इन्हें डॉ. सपना सुगंधा के मार्गदर्शन में यह उपाधि प्राप्त हुई है।

रौशन कुमार - "समावेशी विकास के लिए एक रणनीति के रूप में वित्तीय समावेशन का अध्ययन, विशेष संदर्भ में बिहार" पर शोध कार्य पूरा किया है। इन्हें प्रो. पवनेश कुमार के मार्गदर्शन में यह उपाधि प्राप्त हुई है।

अंकिता कुमारी - "बिहार के उच्च शिक्षा संस्थानों के महिला अंशधारकों के निवेश व्यवहार पर वित्तीय साक्षरता का प्रभाव" पर शोध कार्य पूरा किया है। इन्हें भी प्रो. पवनेश कुमार के मार्गदर्शन में यह उपाधि प्राप्त हुई है।

चंदन वीर

नियुक्ति और मान्यता:

चंदन वीर को सरला बिरला विश्वविद्यालय, राँची में सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति मिली है। रौशन कुमार को एमिटी विश्वविद्यालय, गुड़गाँव में सहायक प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति मिली है।इन नियुक्तियों ने उनके प्रबंधन विज्ञान के क्षेत्र में विशेषज्ञता और समर्पण को उजागर किया है।

माननीय कुलपति, प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव ने चंदन वीर, रौशन कुमार, और अंकिता कुमारी को उनके सफलतापूर्वक पीएचडी उपाधि प्राप्त करने और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उनकी नियुक्तियों के लिए हार्दिक बधाई दी। प्रबंधन विज्ञान विभाग की अध्यक्ष, डॉ. सपना सुगंधा, सहायक प्रोफेसर अरुण कुमार, डॉ. अलका लालहाल, डॉ. कमलेश कुमार, और डॉ. स्नेहा चौरसिया ने भी शोधार्थियों को बधाई दी। उनके प्रोत्साहन और समर्थन ने शोधार्थियों को उनके अकादमिक सफर में मार्गदर्शन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

असिस्टेंट लाइब्रेरियन पद पर मुचकुंद श्री का चयन

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के पूर्व परास्नातक विद्यार्थी मुचकुंद श्री का चयन दिल्ली विश्वविद्यालय में असिस्टेंट लाइब्रेरियन पद पर हुआ है। विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने मुचकुंद श्री को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह प्रसन्नता की बात है। हमारे विद्यार्थी लगातार उच्च पदों पर रोजगार पाने में सफल हो रहे हैं जो विद्यार्थियों सहित विश्वविद्यालय के शिक्षकों के कठिन परिश्रम का परिणाम है। उन्होंने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. रणजीत कुमार चौधरी एवं शिक्षकों को भी बधाई दी।

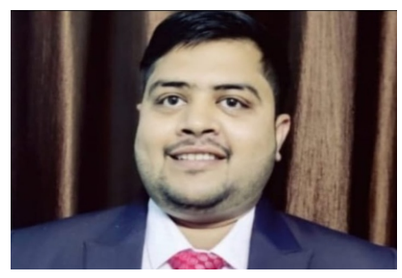

महात्मा बुद्ध परिसर के निदेशक और विभागाध्यक्ष प्रो. रणजीत कुमार चौधरी ने मुचकुंद श्री को बधाई देते हुए उन्हें अत्यंत परिश्रमी बताया। प्रो. चौधरी ने कहा कि यह उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक होगी।विभाग के शिक्षकों डॉ. मधु पटेल और डॉ. सपना ने भी बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

कैम्पस सेलेक्सन: प्रबंधन विज्ञान विभाग के तीन छात्रों का चयन

रौशन कुमार

कुमार नमन

हैप्पी कुमार

प्रबंधन विज्ञान विभाग के विभागीय प्लेसमेंट सेल द्वारा प्रबंधन प्रशिक्षु (मैनेजमेंट ट्रेनी) पद के लिए श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड द्वारा एक कैम्पस सेलेक्सन अभियान का आयोजन किया गया था। प्रबंधन विज्ञान विभाग के तीन छात्रों, हैप्पी कुमार, रौशन कुमार और कुमार नमन को प्रबंधन प्रशिक्षु पद के लिए चुना गया है।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय स्तरीय कैरियर काउंसलिंग और प्लेसमेंट सेल श्रीराम फाइनेंस लिमिटेड में 'मैनेजमेंट ट्रेनी' के रूप में नियुक्त सभी सफल उम्मीदवारों को बधाई दी। साथ ही उन्होंने विभागीय स्तर के प्लेसमेंट सेल समन्वयक और प्रमुख डॉ. सपना सुगन्धा को भी बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट सेल के प्रमुख प्रो. रफीक उल इस्लाम ने प्रबंधन विज्ञान विभाग की प्रमुख डॉ. सपना सुगंधा और सभी चयनित उम्मीदवारों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

संस्कृत विभाग में तीन शोध छात्रों को मिली डॉक्टरेट की उपाधि

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी बिहार के संस्कृत विभाग में दिनांक 16 जुलाई, 2024 को तीन शोधछात्रों की अन्तिम रूप से अन्तर्वीक्षा सम्पन्न हुई, जिसमें मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता एवं संस्कृत विभाग में आचार्य प्रो० प्रसून दत्त सिंह के दो शोध छात्र एवं संस्कृत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. बबलू पाल के एक शोध छात्र का शोधकार्य सम्पन्नता को प्राप्त हुआ। शोधछात्र रोहित ने "अर्वाचीन संस्कृत रचनाधर्मिता में अभिराज राजेन्द्र मिश्र का अवदान" विषय पर अपने शोधकार्य को प्रस्तुत किया, जिसकी अन्तर्वीक्षा में संस्कृत विभाग, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो० विजय गर्ग उपस्थित रहे। इस मौखिकी परीक्षा के बाह्य परीक्षक के द्वारा अनेक गुणवत्तापूर्ण एवं प्रासंगिक प्रश्नों को उपस्थापित किया गया, जिसका समुचित उत्तर शोधार्थी रोहित ने दिया। शोधार्थी के शोधनिर्देशक मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो० प्रसूनदत्त सिंह भी उपस्थित रहे। बाह्य परीक्षक के रूप में उपस्थित रहे। शोधार्थी ताराकान्त मित्र ने "आश्वलायन एवं कात्यायन गृह्यसूत्रों में प्रतिपादित संस्कार व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन" इस शोध विषय पर संक्षिप्त सारतत्त्व का विवेचन करते हुए आधुनिक समाज में इसकी उपादेयता को स्पष्ट किया।

बाह्य परीक्षक के रूप में संस्कृत विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो० सुभाष कुमार सिंह ने वर्तमान समय की समस्याओं को विभिन्न संस्कारों के द्वारा किस प्रकार से दूर किया जा सकता है, इस दृष्टिकोण से शोधछात्र ताराकान्त मित्र के द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा करते हुए

ताराकान्त मित्र

रोहित

शिवप्रसाद पाल

शोधकार्य की संस्तुति प्रदान किया। शोधार्थी शिवप्रसाद पाल ने "नारदभक्तिसूत्र में भक्ति स्वरूप विमर्श" विषय पर अपने शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत किया, जिसमें बाह्य परीक्षक के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० प्रयाग नारायण मिश्र उपस्थित रहे। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मुख्य कुलानुशासक, मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता एवं गाँधी भवन परिसर के निदेशक प्रो० प्रसूनदत्त सिंह तथा संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ श्याम कुमार झा उपस्थित रहे।

शोधार्थी के शोध निर्देशक संस्कृत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ.बबलू पाल तथा सह-शोध निर्देशक हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. श्याम नन्दन की भी उपस्थिति रही। शोधार्थी शिवप्रसाद पाल ने अपने शोधविषय "नारदभक्तिसूत्र में भक्ति स्वरूप विमर्श" पर विस्तृत रूप से वर्तमान समय से उसकी प्रासंगिकता को बतलाते हुए विवरण प्रस्तुत किया। अन्त में सर्वसहमति से तीनों शोधार्थियों को बधाई देते हुए डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई।

इसमें विभागीय शोध समिति के मनोनीत सदस्य एवं वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय के अधिष्ठाता प्रो० शिरीष मिश्र, भौतिक विज्ञान विभाग के प्रो० सुनील कुमार श्रीवास्तव के साथ ही हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार श्रीवास्तव, हिन्दी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ गोविन्द वर्मा, समाजकार्य के सहायक प्राध्यापक डॉ अनुपम वर्मा, समाजशास्त्र विभाग के प्रो. सुजीत चौधरी, समाजशास्त्र विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ श्वेता, हिन्दी विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ आशा मीणा और डॉ गरिमा तिवारी के अतिरिक्त विभाग के सभी शोधछात्र एवं परास्नातक छात्र उपस्थित रहे।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के दो विद्यार्थी टीसीएस में चयनित

आकांक्षा

मुकुल आनंद

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के दो विद्यार्थियों का चयन टाटा कंसलटेंसी सर्विस के लिए हुआ है। विभागाध्यक्ष प्रो. विकास पारीक ने बताया कि बीटेक के विद्यार्थी आकांक्षा का चयन सिस्टम इंजीनियर और मुकुल आनंद का चयन असिस्टेंट सिस्टम इंजीनियर के रूप में टीसीएस द्वारा किया गया है। इस चयन पर विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने प्रसन्नता व्यक्त की है और विभाग को अपनी शुभकामना प्रेषित की है। आकांक्षा और मुकुल शुरू से मेधावी विद्यार्थी रहे हैं। बीटेक के दौरान उन्होंने प्रो. विकास पारीक के निर्देशन में स्टॉक मार्केट पूर्वानुमान पर एक प्रोजेक्ट पर सफलता पूर्वक कार्य किया है। इसके अतिरिक्त ये दोनों विद्यार्थी इस से पहले गेट परीक्षा में भी सफल हो चुके हैं। इनकी यह दोहरी सफलता विभाग के श्रेष्ठ शिक्षण का एक उदाहरण है। इस सफलता पर संकायाध्यक्ष प्रो. रणजीत चौधरी एवं विभाग के शिक्षकों डॉ विपिन कुमार , डॉ अतुल त्रिपाठी, डॉ सुनील कुमार व शुभम कुमार ने हर्ष व्यक्त किया है।

केविवि के प्रो. विकास पारीक मोतिहारी इंजीनियरिंग कॉलेज की संस्थान विकास समिति के शासी निकाय के सदस्य मनोनीत

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के प्रो. विकास पारीक को बिहार सरकार के विज्ञान प्रौद्योगिकी व तकनीकी शिक्षा विभाग ने मोतिहारी इंजीनियरिंग कॉलेज की इंस्टीट्यूट डेवलपमेंट सोसाइटी की गवर्निंग बॉडी (शासी निकाय) का सदस्य नामित किया है। विभाग के निदेशक व विशिष्ट सचिव द्वारा जारी कार्यालय आदेश के अनुसार उद्योग, शिक्षा व व्यावसायिक जगत से एक सदस्य का मनोनयन विभाग द्वारा सभी तकनीकी संस्थाओं की संस्थान विकास समिति में किया जाएगा। इसी क्रम में प्रो. विकास पारीक के नाम की अनुशंसा की गई है।

इस सूचना पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बधाई दी है। प्रो. विकास पारीक केन्द्रीय विवि में कंप्यूटर विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। इस से पूर्व उन्होंने दो बार संकायाध्यक्ष के रूप में सेवाएं दी हैं। अपने कार्यकाल में प्रो. पारीक ने विभाग को स्थापित करने के साथ बीटेक, एमटेक व पी एच डी पाठ्यक्रम प्रारंभ करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। वे केविवि में पिछले छह वर्ष से वित्त अधिकारी का भी दायित्व देख रहे हैं। इस से पूर्व प्रो. विकास पारीक को भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा गठित एक समिति में व दूरसंचार विभाग, भारत सरकार द्वारा हाल में क्वांटम कम्प्यूटिंग हेतु गठित एक समिति में भी सदस्य मनोनीत किया गया है। इस सूचना पर विभाग के शिक्षकों ने भी प्रो. पारीक को बधाई दी है। प्रो. विकास पारीक ने इस मनोनयन के लिए मोतिहारी इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अभय कुमार झा का आभार व्यक्त किया है व विश्वास व्यक्त किया कि इस समिति के क्रम में कुछ सकारात्मक अवदान का अवसर मिलेगा। इस से पहले भी केविवि और मोतिहारी इंजीनियरिंग कॉलेज परस्पर सहयोग व साझा कार्यक्रम करते रहे हैं।

ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए कैंपस भर्ती अभियान का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के करियर काउंसलिंग और प्लेसमेंट सेल द्वारा ईएसएएफ स्मॉल फाइनेंस बैंक के लिए कार्यकारी प्रशिक्षु पद हेतु एक कैंपस भर्ती अभियान का सफल आयोजन किया गया। यह अभियान ओरिएंटेशन सत्र और समूह चर्चा सत्र के साथ शुरू हुआ, जिसके बाद ऑनलाइन योग्यता परीक्षा आयोजित की गई। विभिन्न विभागों के कुल 60 पंजीकृत छात्रों में से सात छात्रों ने पहले स्तर का साक्षात्कार पास किया और अंततः पाँच छात्रों ने दूसरे स्तर का साक्षात्कार सफलतापूर्वक पास किया। चयनित उम्मीदवारों में प्रबंधन विज्ञान विभाग से श्री अंकित कुमार मिश्रा, श्री सोनू कुमार और श्री अंकुश कुमार पांडेय तथा कंप्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग से श्री विवेक कुमार और सुश्री ऋषिता श्रीवास्तव शामिल हैं। इस अवसर पर कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा, "हमारे छात्रों की यह उपलब्धि न केवल उनकी मेहनत और समर्पण का परिणाम है, बल्कि हमारे संकाय सदस्यों और प्लेसमेंट सेल की लगातार मेहनत और सहयोग का भी प्रतिफल है। यह हमारे विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मैं सभी चयनित छात्रों को हार्दिक बधाई देता हूँ और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। डॉ. सपना सुगंधा और डॉ. सुनील कुमार सिंह ने इस भर्ती अभियान में अहम भूमिका निभाई।

एमजीसीयूबी के प्रबंधन विज्ञान विभाग के छात्रों को ब्रांच क्रेडिट हेड्स पद पर मिली नियुक्ति

प्रबंधन विज्ञान विभाग के चार छात्र अरविंद कुमार, संतोष कुमार, रौशन कुमार और कृष्ण कुमार ने प्रतिष्ठित बीएफआईएल- इंडसइंड बैंक में ब्रांच क्रेडिट हेड्स के रूप में नियुक्ति हुई है। इसपर कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि "विश्वविद्यालय को अपने छात्रों की इस अद्वितीय सफलता पर गर्व है। यह न केवल उनकी मेहनत और समर्पण का परिणाम है, बल्कि हमारे विश्वविद्यालय की उत्कृष्ट शिक्षा और मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली का भी प्रमाण है। मैं सभी छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ और उन्हें उनके नए कार्यक्षेत्र में सफलता की कामना करता हूँ।

"प्रशिक्षण और प्लेसमेंट अधिकारी, प्रो. रफीक उल इस्लाम ने भी छात्रों की सराहना की और कहा कि "हमें गर्व है की हमारे छात्र अब अपने करियर की शुरुआत ऐसे महत्वपूर्ण पदों से कर रहे हैं, जो न केवल उनके लिए बल्कि हमारे संसथान के लिए भी गौरव का विषय है। सभी छात्रों को हार्दिक बधाई देता हूँ और उनकी उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। यह सफलता हमें अपने प्रयासों को और मजबूत करने के लिए प्रेरित करती है, ताकि आने वाले वर्षों में हमारे और भी अधिक छात्र देश-विदेश की प्रतिष्ठित कंपनियों में अपनी पहचान बना सकें।"वाणिज्य और प्रबंधन विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. शिरीष मिश्र ने सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

रौशन कुमार

अरविंद कुमार

संतोष कुमार

कृष्ण कुमार

प्रबंधन विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा ने भी छात्रों को इस शानदार सफलता पर बधाई दी और कहा कि छात्रों की यह उपलब्धि हमारे विभाग और विश्वविद्यालय के लिए एक गौरवपूर्ण क्षण है। यह उनके समर्पण, प्रतिबद्धता और मेहनत का प्रतिफल है। विभाग नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। गत वर्ष भी 59 विद्यार्थियों का चयन बड़ी कंपनियों द्वारा किया गया था, जिसमें एमएनसीस, निजी बैंक, पीएसयूस और पीएसईएस आदि शामिल हैं। विभाग के अन्य संकाय सदस्य डॉ. अलका लालहाल, डॉ. अरुण कुमार, डॉ. कमलेश कुमार और डॉ. स्नेहा चौरासिया ने भी छात्रों को इस बड़ी सफलता पर शुभकामनाएँ दी।

परिचर्चा

समाज को सही दिशा दिखाना मीडिया का दायित्व: पवन प्रत्यय

- *मीडिया का दायित्व और चुनौतियां विषय पर संगोष्ठी का आयोजन*
- *पीत पत्रकारिता का बढ़ता प्रचलन मीडिया के लिए बड़ी चुनौती*

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में मीडिया अध्ययन विभाग के द्वारा 'मीडिया का दायित्व और चुनौतियाँ' विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार पवन प्रत्यय और अध्यक्षता मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी संयोजक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने की।बतौर मुख्य वक्ता पवन प्रत्यय ने कहा कि लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होने के कारण मीडिया का दायित्व भी काफी व्यापक है। आजादी के पूर्व मीडिया का दायित्व जनजागरण एवं नागरिकों में राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करना था। आजादी के बाद मीडिया के दायित्व का विस्तार हुआ। नब्बे के दशक में जब तकनीकी विकास के साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उद्भव हुआ और मीडिया के साथ 'इंडस्ट्री' शब्द जुड़ गया तब मीडिया की भूमिका में एक बड़ा परिवर्तन आया।

मुख्य वक्ता पवन प्रत्यय का स्वागत करते विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा

यह चिंतनीय है कि अब जनसंचार से जन का लोप होता जा रहा है और केवल संचार ही केन्द्र में रह गया है, जो अब एक बड़ी चुनौती बन गई है। उन्होंने कहा कि पीत पत्रकारिता का बढ़ता प्रचलन और मीडिया ट्रायल ने मीडिया की छवि को धूमिल भी किया और मीडिया की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया। वर्तमान समय में न्यू मीडिया के उद्भव ने मीडिया के क्षेत्र में संभावनाओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परंतु अत्यधिक सुलभ होने के कारण इसने गंभीर चुनौतियों को भी जन्म दे दिया है।

आज सूचनाओं की सत्यता को जानना पत्रकार एवं पाठक दोनों के लिए बड़ी चुनौती हैं। एक पत्रकार के रूप में डीप फेक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में तथ्यों को परखना, सूचना के स्रोत की विश्वसनीयता को पहचानना अति आवश्यक हो गया है। मीडिया के क्षेत्र में संभावनों के बारे में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए श्री प्रत्यय ने कहा कि सबसे पहले आप अपना लक्ष्य तय करें। जिस काम में रुचि हो वही काम करें, तभी आप अपना शत प्रतिशत दे पाएंगे। इसके अलावा समय के महत्व को समझें,

संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्य वक्ता

अपने इतिहास को जाने, ज्ञानार्जन का कोई भी मौका अपने हाथ से ना जाने दें और मीडिया लिटरेसी के महत्व को भी समझें। अध्यक्षीय उद्बोधन में विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने कहा कि वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्व एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, वर्ग, संस्था, समूह व्यक्ति मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता। आज के जीवन में मीडिया एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गई है। लेकिन तकनीक के इस दौर में एक पत्रकार के रूप में यह अति आवश्यक है कि हम इसके लाभ एवं हानि को समझें, ग्राउंड रिपोर्टिंग की परंपरा से जुड़ कर रहें और समाज को तथा विशेष कर नई पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से जोड़ने में अपनी भूमिका निभाएं।

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी

संगोष्ठी संयोजक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने कहा कि मीडिया का जैसे-जैसे विस्तार हुआ है उसी तरह से मीडिया के दायित्व और चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। आज सूचना तंत्र के अनेक आयामों का विकास और विस्तार हुआ है, जिससे दायित्व और चुनौतियों के अनेक स्वरूप देखने को मिलते है। स्वतंत्रता संघर्ष काल में मिशन रूपी पत्रकारिता का दायित्व आजादी प्राप्त करना था, जिसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ थी। संगोष्ठी में प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन किया, जिसमें मुख्य वक्ता ने पत्रकारिता से जुड़े अनेक समसायिक मुद्दे, पत्रकारिता के दायित्व, विश्वसनीयता और चुनौतियों पर विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर दिया। प्रश्नोत्तर सत्र में रुचि भारती, तुशाल कुमार, जय कुमार, अदिति, राजनंदनी, अपूर्वा, गजेंद्र कुमार, स्नेहाशीष पराशर आदि ने भाग लिया। संगोष्ठी में मीडिया अध्ययन विभाग के शिक्षक एवं आयोजन समिति के सदस्य डॉ. साकेत रमण, डॉ. सुनील दीपक घोड़के, डॉ. उमा यादव सहित विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की उपस्थिति थी। मंच संचालन छात्रा अदिति सिंह और खुशी कुमारी ने किया। संगोष्ठी का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

"गतिशील शरीर, गतिशील मन : मूर्त अभ्यास के रूप में नृवंशविज्ञान" विषयक कार्यशाला का आयोजन

● नृविज्ञान में शारीरिकता का अध्ययन शारीरिक अभ्यास नहीं गहरे अनुभव का माध्यम है: प्रो. ग्रिट ● मानव जीवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम का विशेष महत्व: कुलपति

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के बुद्ध परिसर स्थित बृहस्पति सभागार में सांस्कृतिक और साहित्यिक परिषद द्वारा "उत्तर-पश्चिमी अर्जेंटीना में सांस्कृतिक प्रदर्शन और जातीय समूह" विषयक व्याख्यान एवं "गतिशील शरीर, गतिशील मन : मूर्त अभ्यास के रूप में नृवंशविज्ञान" विषयक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. ग्रिट कोएल्टज (निदेशक, स्वदेशी और औपनिवेशिक अध्ययन केंद्र, जुजुय नेशनल यूनिवर्सिटी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय, अर्जेंटीना) उपस्थित थी। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. स्वेता थी। कार्यशाला के प्रथम दिन औपचारिक अभिवादन सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद के अध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया। समाजशास्त्र विभाग के पीएचडी शोधार्थी लोकेश पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। कार्यशाला के संरक्षक प्रोफेसर प्रसून दत्त सिंह ने विषय की पृष्ठभूमि और उसकी वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने सांस्कृतिक अध्ययन के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह व्याख्यान हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समझने और उसे संरक्षित करने के प्रयासों में सहायक सिद्ध होगा। व्याख्यान में प्रो. ग्रिट ने अर्जेंटीना के विविध सांस्कृतिक धरोहरों और विभिन्न जातीय समूहों के पारंपरिक प्रदर्शन कला के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर ग्रिट ने अपने व्याख्यान में उत्तर-पश्चिम अर्जेंटीना की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं पर गहन चर्चा की। उन्होंने इस क्षेत्र के पारंपरिक नृत्य, संगीत और त्योहारों के माध्यम से सांस्कृतिक विविधता को उजागर किया। इसके साथ ही उन्होंने इस क्षेत्र में निवास करने वाले विभिन्न जातीय समूहों के ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों को भी समझाया। व्याख्यान में प्रोफेसर ग्रिट ने सांस्कृतिक पहचान और विरासत के संरक्षण के महत्व पर भी बल दिया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार इन जातीय समूहों की सांस्कृतिक प्रथाएं समय के साथ बदलती रही हैं, लेकिन उनकी मूल पहचान आज भी जीवित है। डॉ. श्वेता ने भी अपने विचार साझा किए और कार्यक्रम के आयोजन की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होते हैं, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से हमारी समझ को भी गहराई प्रदान करते हैं। डॉ. श्वेता ने सुझाव दिया कि भविष्य में भी इस प्रकार के व्याख्यान आयोजित किए जाएं,

कार्यशाला को संबोधित करती प्रो. ग्रिट (बाएँ) एवं उपस्थित प्रतिभागी (दाएं)

जिसमें अन्य देशों और क्षेत्रों की सांस्कृतिक धरोहरों पर भी चर्चा हो। उन्होंने यह भी कहा कि छात्रों के लिए सांस्कृतिक अध्ययन के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे वे व्यावहारिक रूप से इन संस्कृतियों के अनुभव को समझ सकें। अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विमलेश कुमार सिंह ने कहा कि यह व्याख्यान सभी श्रोताओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायक और जानकारी से परीपूर्ण है। उन्होंने इस प्रकार के और व्याख्यानों की आवश्यकता पर बल दिया, जो विभिन्न संस्कृतियों को समझने और उनके महत्व को पहचानने में मददगार साबित होते हैं। साथ ही उन्होंने "वसुधैव कुटुम्बकम" के अर्थ समझाने के साथ अपने दृष्टिकोण को साझा करते हुए कहा कि सांस्कृतिक विविधता को अपनाने और सभी जातीय समूहों को एक परिवार के रूप में देखने की यह भावना, न केवल हमारे समाज को बल्कि वैश्विक समुदाय को भी एकजुट करने में सहायक है।

शरीर एक ऐसा स्थान है जहां संस्कृति, भावना और समाज की विभिन्न परतें मिलती हैं:

कार्यशाला के दूसरे दिन मुख्य अतिथि और वक्ता के रूप में प्रो. ग्रिट के साथ मंच पर डॉ. मनीषा रानी, डॉ. उपमेष कुमार मौजूद थे। प्रो. ग्रिट का स्वागत मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने पुष्पगुच्छ भेंट कर की। डॉ. मिश्र ने कहा कि यह कार्यशाला हमारे शिक्षण और अनुसंधान की पद्धतियों में एक नई दिशा देने वाली है। प्रो. ग्रिट जिस तरह से शारीरिकता और नृविज्ञान के बीच के गहरे संबंध को प्रस्तुत करेंगी, वह न केवल शोधार्थियों के लिए बल्कि शिक्षकों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। इस कार्यशाला से हमें यह सीखने को मिलेगा कि कैसे शारीरिक अनुभवों के माध्यम से समाज और संस्कृति को समझा जा सकता है। कार्यक्रम की शुरुआत में प्रो. ग्रिट ने कुछ नृत्य और व्यायाम मुद्राओं की प्रस्तुति की। उन्होंने अपने प्रस्तुतिकरण में कार्यशाला के महत्व, उद्देश्य और 'शरीर को एक स्थान के रूप में' कैसे देखा जा सकता है, इस पर जोर दिया। प्रो. ग्रिट ने अपने वक्तव्य में कहा कि नृविज्ञान में शारीरिकता का अध्ययन मात्र एक शारीरिक अभ्यास नहीं है, बल्कि यह एक गहरे अनुभव और अवलोकन का माध्यम है।

कार्यशाला में प्रो. ग्रिट का स्वागत करते विवि के प्राध्यापक डॉ. परमात्मा मिश्र

शरीर एक ऐसा स्थान है जहां संस्कृति, भावना और समाज की विभिन्न परतें मिलती हैं। जब हम अपने शरीर को समझते है तो हम अपने समाज और संस्कृति को भी बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। उन्होंने संगीत, नृत्य धारणाओं और शारीरिक अनुभूतियों के महत्व पर भी प्रकाश डाला और बताया कि ये तत्व कैसे हमारे शरीर और मन को प्रभावित करते हैं।डॉ. स्वेता ने अपने विचारों को साझा करते हुए 'दुनिया में अपने शरीर को कैसे देखते हैं और इस दृष्टिकोण से नृविज्ञान को कैसे समझ सकते हैं' पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे सभ्यता और संस्कृति के तत्व हमारे समाज की गहरी समझ को आकार देते हैं और इस समझ को नृविज्ञान के अध्ययन के माध्यम से कैसे प्रकट किया जा सकता है। कार्यशाला में प्रतिभागियों ने प्रो. ग्रिट, डॉ. मनीषा रानी, डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र और डॉ. स्वेता के विचारों से प्रेरणा ली और नृविज्ञान के इस अनूठे दृष्टिकोण को सराहा। इस कार्यशाला में न केवल शारीरिकता को एक महत्वपूर्ण अध्ययन के रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि इसे समझने और अपनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।डॉ. मनीषा रानी ने कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव, प्रो. प्रसून दत्त सिंह और संयोजक डॉ. स्वेता को इस जानकारीपूर्ण और प्रभावशाली कार्यशाला के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने नृविज्ञान के वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि नृविज्ञान समाज का व्यवस्थित अध्ययन है, जिसमें हम विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करते हैं।

विदेश से आई मेहमान को भारतीय लोक संस्कृति से परिचित कराया गया

कार्यशाला के समापन समारोह में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने एमजीसीयू और नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ जूजूय, अर्जेंटीना के बीच एमओयु के दिशा में कदम बढ़ाने की बात कही। उन्होंने मानव जीवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम का महत्व बताया और कहा कि भारत के ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में जो सांस्कृतिक संबंध स्थापित किया वह महत्वपूर्ण है। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय संस्कृति, योग एवं नृत्य से पूरी दुनिया को बहुत कुछ सीखने को मिलता है। कुलपति ने प्रो. ग्रीट को कहा की यहां आपका आना अंत नहीं बल्कि शुरुआत है। उन्होंने सफलता पूर्वक संचालित हुई कार्यशाला के लिए संयोजक डॉ. श्वेता को बधाई दी। प्रो. ग्रिट ने सभा में उपस्थित छात्र, छात्राओं एवं प्राध्यापकों के साथ नृत्य के माध्यम से व्यायाम और भारतीय, अमेरिकन एवं अर्जेंटीनीयन स्टेप्स भी सिखाई। साथ ही नृवंशविज्ञान के द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिकता के बीच समानता की व्याख्या की। प्रो. ग्रिट ने कहा की नृत्य से शारीरिक एवं मानसिक मजबूती मिलती है और हम स्वस्थ्य रहते है। उन्होंने क्षेत्रकार्य एवं भावना के माध्यम से

कार्यशाला के समापन समारोह के दौरान प्रो. ग्रिट को स्मृति चिह्न भेंट करते कुलपति

अपने द्वारा किए गए कई अन्य स्थान पर रिसर्च को तस्वीर के माध्यम महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने अर्जेंटीना के लोक नृत्य एवं शारीरिक स्मृति के तीन स्तर के बारें में विस्तार से व्याख्या की। सुनना, स्वाद लेना, सूंघना देखना एवं महसूस करना विभिन्न शारीरिक स्मृति है। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून्न दत्त सिंह ने कहा कि आप लोगों को इस कार्यशाला के दौरान काफी कुछ सीखने को मिला होगा। फिर उन्होंने साहित्य, काव्य नृत्य, भाव और भरतनाट्यम के माध्यम से मनोरंजन का अर्थ स्पष्ट किया। बुद्ध परिसर के निदेशक प्रो. रणजीत कुमार चौधरी ने नृवंशविज्ञान द्वारा सामाजिक विज्ञान के शोधार्थियों के लिए कार्यशाला को लाभकारी बताया।

कार्यशाला के अंत में असम की **लोक नृत्य** बिहू एवं बिहार के लोक नृत्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक विभाग के छात्र एवं छात्राओं ने सहभागिता की।

कार्यशाला को सफल बनाने में विभिन्न विभागों के शिक्षक डॉ. श्याम कुमार झा, डॉ मनीषा रानी, डॉ अनुपम कुमार वर्मा, डॉ कुन्दन किशोर रजक, डॉ बब्लू पाल, डॉ सुजीत कुमार चौधरी, डॉ उमेश पात्रा, डॉ. ओमकार, डॉ. उपमेश तलवार श्री अवनीश कुमार, डॉ. अभय विक्रम सिंह, डॉ. परमात्मा कुमार मिश्रा, पीएचडी शोधार्थी मनीष कुमार, निखिल पाण्डेय, राजश्री खिल्लर, जन्मेजय गुप्ता, अंकित कुमार आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लेआउट और डिजाइनिंग के लिए कलात्मकता और काल्पनिकता का होना जरूरी : आलोक श्रीवास्तव

"लेआउट डिजाइनिंग" विषयक विशेष एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

मंचासीन मुख्य वक्ता (मध्य) एवं विभाग के प्राध्यापक

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा चाणक्य परिसर स्थित पंडित राजकुमार शुक्ल सभागार में "लेआउट डिजाइनिंग" विषयक विशेष एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। अध्यक्षता मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार झा ने की। मुख्य वक्ता के रूप में समाचारपत्र के मुख्य लेआउट डिजाइनर आलोक श्रीवास्तव उपस्थित थे। स्वागत विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने की। कार्यशाला के संयोजक डॉ सुनील दीपक घोड़के थे। बतौर मुख्य वक्ता आलोक श्रीवास्तव ने कहा कि ले-आउट और डिजाइनिंग बनाने के लिए विद्यार्थियों की कलात्मक सोच विकसित होनी चाहिए। उन्होंने समाचार पत्रों में ले-आउट और डिजाइनिंग से जुड़े कई सारे महत्वपूर्ण तत्वों को विद्यार्थियों के साथ साझा किया। उन्होंने कहा कि लेआउट और डिजाइनिंग किसी भी समाचार पत्र की आत्मा होती है, जिससे पाठक वर्ग ख़बरों की ओर आकर्षित होते हैं व उसे पढ़ने में रुचि लेते हैं। उन्होंने समाचार पत्रों में उपयोग होने वाले ग्राफिक्स,पाई चार्ट, फ्रंट पेज डिजाइनिंग, फोटो एडिटिंग, कलर कंट्रास्ट ,न्यूज़ पोजिशनिंग, इंफोग्राफ, बार ग्राफ, गटर स्पेस, साइज बैलेंस, हैडलाइन तथा मास्ट हेड से संबंधित कई सारी जानकारी विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत की और उसके महत्व व जरूरतों के बारे में समझाया। उन्होंने डिजाइनिंग व लेआउट से संबंधित कई सारे सॉफ्टवेयर जैसे एडोब फोटोशॉप, इनडिजाइन, क्वार्क एक्सप्रेस, कोरल ड्रा आदि का उपयोग तथा इनके फीचर के बारें में विद्यार्थियों को विस्तार से समझाया। समाचार पत्रों को आकर्षक व पढ़ने योग्य बनाने के कई सारे आयामों के बारे में भी विद्यार्थियों से चर्चा की। उन्होंने कहा की एक डिजाइनर को हर वक्त अपने काम के प्रति सचेत व रचनात्मक होने की जरूरत है ताकि ख़बर व्यवस्थित दिखें। अध्यक्षीय उद्बोधन में मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने कहा

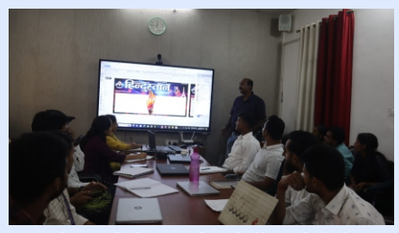

कार्यशाला में लेआउट के बारे में बताते विशेषज्ञ

ने कहा कि लेआउट और डिजाइन किसी भी समाचारपत्र के नींव से जुड़ी है तथा विद्यार्थियों को उसके बारे में जानकारी होनी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कौन सी खबर कहा लगेगी यह खबरों के महत्व के ऊपर निर्भर करता है। स्वागत उद्बोधन में डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने कहा कि समाचारपत्रों के लेआउट डिजाइन के बारे में विस्तार से जानना पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। कार्यशाला का उद्देश्य भी लेआउट डिजाइन के विभिन्न आयामों से परिचित कराना है। तकनीकी प्रगति के बाद लेआउट डिजाइन में अनेक महत्वपूर्ण बदलाव आये है। उन्होंने कहा कि अखबार को दिलचस्प व आकर्षित बनाने के लिए लेआउट और डिजाइन का विशेष महत्व है। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र और मंच संचालन एमजेएमसी तृतीय सेमेस्टर के छात्र प्रतीक कुमार ने किया। आयोजन समिति में डॉ. साकेत रमन एवं डॉ उमा यादव थे। मुख्य वक्ता का परिचय अपूर्वा त्रिवेदी, छात्रा बीजेएमसी ने प्रस्तुत की। कार्यशाला में मीडिया अध्ययन विभाग के विद्यार्थियों की उपस्थित थी। कार्यशाला में अदिति सिंह, रोशन यादव, जय कुमार, अनिकेत राज, तुशाल कुमार, प्रतीक कुमार, रूचि भारती, पूजा आदि विद्यार्थियों ने अपने कई सारे प्रश्न मुख्य वक्ता से किए, जिसका समुचित उत्तर उन्होंने दिया।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

www.mgcub.ac.in

parisarpratibimb@mgcub.ac.in

@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर परिचर्चा

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर स्थित पंडित राजकुमार शुक्ला सभागार में सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिषद के द्वारा विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य अतिथि के रूप में गांधीवादी चिंतक ब्रज किशोर सिंह उपस्थित थे। औपचारिक स्वागत प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया। कार्यक्रम के संयोजक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद के अध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह व सह-संयोजक डॉ अनुपम कुमार वर्मा सांस्कृतिक एवं साहित्य परिषद सदस्य थे। बतौर मुख्य वक्ता ब्रज किशोर सिंह ने कहा कि जब गांधी जी का चंपारण में आगमन हुआ तो उन्होंने देखा की महर्षि वाल्मीकि की धरती पर शिक्षा की बहुत बड़ी कमी है, तब गांधी जी ने शिक्षा पर जोर दिया और लोगों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उस समय चम्पारण में स्कूल खोलने के लिए गाँधी जी के आह्वान पर एक सामान्य किसान ने अपना घर खाली कर दान कर दिया। तब जाकर वर्तमान के ढाका प्रखंड के बरहरवा लखनसेन गांव में शिक्षा के प्रसार के लिए स्कूल खोला गया। आगे उन्होंने कहा कि जब देश का विभाजन हो रहा था तो स्थिति अत्यंत भयवाह थी।

मंचासीन अतिथि एवं कुलपति

चारों तरफ अत्याचार व अनाचार चरम पर था। सिर्फ हिन्दुस्तान ही नही बल्कि पूरे विश्व में यह स्थिति थी। वर्ष 1947 में विभाजन के कारण मानव जाति के इतिहास में सबसे विनाशकारी विस्थापनों में से एक देखा गया। 15 अगस्त 1947 की सुबह ट्रेनों, घोड़े खच्चर और पैदल ही लोग अपनी ही मातृभूमि से विस्थापित होने पर मजबूर हो गए।

उन्होंने कहा विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मात्र घटनाओं को याद करने का अवसर नहीं है। यह हिंसक और असहिष्णु विचारधारा को भी कठघरे में खड़ा करता है, जो इन त्रासदियों का कारण बनती हैं। विभीषिकाओं की स्मृति हमें याद दिलाती है कि कैसे देश विरोधी भावनाओं को भड़काकर राष्ट्र को कमजोर किया जा सकता है।

उन्होंने एमजीसीयूबी के संघर्षो के बारे कहा की जब विश्वविद्यालय की शुरुआत हो रही थी तो मैने अपने पेंशन के राशि से आठ लाख पचास हजार रुपये दिये थे। गांधी जी के ऊपर शोध करने वाले शोधार्थी व लेखको को पुरस्कृत करने की बात की। साथ ही कुलपति महोदय से आग्रह किया कि गांधी जी के बारे में किताब लिखने पर जोर दिया जाए व उन्होंने उम्मीद जताया कि कुलपति जी विश्वविद्यालय के विकास को शिखर पर ले जाएंगे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि की बातों पर जोर देते हुए उनकी सरहाना की और आश्वासन दिया कि हम इनका पूर्ण रूप से पालन करेंगे। विभाजन पर बात करते हुए कहा की जब देश आजाद हुआ तो भारत कई खंडो व रियासतों मे बटा हुआ था। उस समय देश के सामने बहुत बड़ी दुविधा थी की देश के अंदर ही लोग धर्म के आधार पर बटवारे की मांग कर रहे थे।

आगे उन्होंने विभाजन के बाद हुई विभीषका पर कहा की वह समय बेहद ही खौभनाक व कष्टप्रद था। जब एक बेटा अपनी माँ से बिछड़ गया, एक पति अपनी पत्नी से बिछड़ गया, लोग अपनी घर जमीन व परिवार को छोड़कर विस्थापित होने लगे। न लोगो के पास खाने को था, न पहने के लिए कपड़े थे और न ही विस्थापन के लिए कोई परिवहन की सुविधा। लेकिन वह मंजर हमारे देश के लोगो ने झेले है व इसका प्रभाव लम्बे समय तक हमारे लोगों के मन-मष्तिष्क पर रहा है। उन्होंने कहा की अब संविधान की एकता से समझौता नहीं किया जा सकता है और न ही अब हमे किसी शक्तियों के द्वारा दबाया जा सकता है, क्योंकि आज हमारे पास सशक्त सेना व संविधान हैं।

स्वागत उद्बोधन में प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि आज के दिन को सदैव याद करना चाहिए। देश में एक तरफ 10 मई 1857 से शुरू होकर 15 अगस्त 1947 को पूरा होने वाले स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों का सपना साकार हो रहा था। देश में आजादी हासिल करने की खुशी थी तो दूसरी ओर भारत विभाजन और भीषण रक्तपात की घटनाओं से सबका मन दुखी हो रहा था। विभीषिका का दौर बेहद ही खतरनाक था। हमें दो सौ वर्षो के यातना के बाद आजादी तो मिली लेकिन विभाजन और विभीषिका के साथ। जिसमें लाखो लोग मारे गये और लगभग डेढ़ करोड़ लोग अपने घर, जमीन व परिवार से विस्थापित हुए। यह समय देश के लिए काला अध्याय था।

हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि भारत विभाजन इस उम्मीद से किया गया था की देश मे शांति आएगी, परन्तु हुआ कुछ यूँ की चारों तरफ अशांति फैल गई। यह विभाजन देश के भीतर बैठे राष्ट्र विरोधी तत्वों की सुनियोजित योजना का परिणाम था। कार्यक्रम में विभाजन पर आधारित दो डाक्यूमेंट्री फिल्म भी दिखाई गई।

प्रदर्शनी का अवलोकन करते विवि के कुलपति एवं अन्य पदाधिकारी

विभाजन के दर्द को चित्र प्रदर्शनी से किया गया व्यक्त:

चाणक्य परिसर में विभाजन की विभीषिका पर केंद्रित छायाचित्र की प्रदर्शनी लगाई गई। जिसका अवलोकन अतिथियों एवं विद्यार्थियों ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संस्कृति एवं साहित्यिक परिषद के सदस्य व कार्यक्रम के सह- संयोजक डॉ. अनुपम कुमार वर्मा ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील महावर, डॉ. शिवेंद्र सिंह, डॉ. श्वेता, डॉ. बबलू पाल, एवं शोधार्थी अरुण दुबे, अभिजीत सिंह सहित समाजकार्य एवं संस्कृत विभाग के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

'प्रेमचंद का राष्ट्रभाषा विषयक चिंतन' विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद आयोजित

संगोष्ठी में उपस्थित विभाग के विद्यार्थी एवं प्राध्यापक

हिन्दी विभाग के तत्वावधान में 'प्रेमचंद का राष्ट्रभाषा विषयक चिंतन' विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिसंवाद कार्यक्रम की अध्यक्षता मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने की। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि भाषा मनुष्य की हृदय भूमि से प्रवाहित धारा है, जिसमें अवगाहन करके मनुष्य अपनी निजता का विस्तार करता है। कथाकार प्रेमचंद मनुष्य की संवेदना को अपनी सृजन यात्रा का साथी बनाते हैं। अपनी कहानियों, उपन्यासों, निबंधों में मानव–मन की सूक्ष्म पड़ताल करते हैं। राष्ट्र निर्माण की संकल्पना उनके सृजन में अनुस्यूत है। दिग्विजय नाथ पीजी कॉलेज के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. नित्यानंद श्रीवास्तव इस परिसंवाद कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। मुख्य वक्तव्य देते हुए प्रो. नित्यानंद श्रीवास्तव ने कहा कि "भाषा ही वह शक्ति है, जो राष्ट्रीय संदर्भों में हमारे सांस्कृतिक धरातल का निर्माण करती है। भाषा की जड़ों के माध्यम से ही राष्ट्रीय एकता बनाए रखने की शक्ति आती है। प्रो. नित्यानंद श्रीवास्तव ने कहा कि बिना राष्ट्रबोध के विश्वबोध नकली है। विश्व की शुभता का मार्ग राष्ट्र से होकर जाता है। यह मार्ग सभी के लिए शुभ हो, इसकी मैं आशा करता हूँ। प्रेमचंद की मान्यता थी कि किसी राष्ट्र के लिए एक राष्ट्रीय भाषा का होना अति आवश्यक है। राष्ट्रभाषा किसी राष्ट्र के निवासियों के भावाभिव्यक्ति का ही मध्यम मात्र नहीं होती। बल्कि वह उस राष्ट्र की संस्कृति की संवाहिका भी होती है। हिंदी इस देश की समन्वयवादी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है और देश की अन्य भाषाओं के साथ बराबरी का व्यवहार करते हुए सब के साथ मिलकर राष्ट्रीय चेतना के विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। प्रेमचंद ने जिस हिंदुस्तानी भाषा को साहित्य में प्रयोग किया, वह तत्कालीन परिस्थितियों के लिहाज से प्रासंगिक थी। हिंदी और उर्दू के मेल से बनी यह भाषा दरअसल अन्य भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी के समन्वय को और अधिक बढ़ाने का संदेश देती है।परिसंवाद कार्यक्रम की संकल्पना एवं संयोजन हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने की। वक्तव्य देते हुए डॉ अंजनी श्रीवास्तव ने कहा कि प्रेमचंद अपने समय के बड़े साहित्यकार थे। राष्ट्रीय संदर्भ में उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। राष्ट्रभाषा के संबंध में उनका चिंतन बहुत महत्वपूर्ण है।

कार्यक्रम की शुरुआत में स्वागत भाषण देते हुए हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. राजेन्द्र सिंह ने वैश्विक पटल पर कथाकार प्रेमचंद की स्वीकार्यता एवं महत्ता रेखांकित की। प्रो. राजेन्द्र सिंह ने कहा कि सृजन यात्रा में भाषा की सहजता रचनाकार की सबसे बड़ी ताकत होती है। प्रेमचंद की भाषा इसका प्रमाण है। वह विश्व में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले हिन्दी रचनाकार हैं। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करते हुए हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. श्याम नंदन ने वर्तमान की चुनौतियों के सापेक्ष प्रेमचंद की भाषा की लोकप्रियता के मूल तत्वों की ओर संकेत किया। उन्होंने बताया की प्रेमचंद का भाषा चिंतन भारतीय परंपरा के विस्तार की एक कड़ी है, जो अपनी प्रकृति मे समन्वयवादी है। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी विकास कुमार ने किया। कार्यक्रम में सहायक आचार्य डॉ. गरिमा तिवारी, डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा, डॉ. आशा मीणा, शोधार्थी रश्मि सिंह, सोनू ठाकुर, अशर्फी लाल, मनीष, सुनंदा, अस्मिता, बीना चिक बड़ाइक, पलक, मनु, सलोनी, निशा, अंजू, ज्योति, रजनीश, रूपेश मुस्कान, दिव्या सहित अन्य विद्यार्थी उपस्थित थें।

समाज कार्य सप्ताह 2024 के अवसर पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन

वेबिनार को संबोधित करते मुख्य वक्ता एवं संगोष्ठी में उपस्थित विभाग के विद्यार्थी

समाज कार्य विभाग के द्वारा 5वें राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह 2024 के अवसर पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन "स्कूल समाज कार्य : संभावनाएं एवम चुनौतियां" विषय पर किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर जुबेर मिनाई, समाज कार्य विभाग,जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली ऑनलाइन उपस्थित थें।सम्मानित अतिथि के रूप के प्रो. आनंद प्रकाश, चेयरमैन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति क्रियान्वयन समिति, एमजीसीयूबी , मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. पी. के. शाहजहां, डीन स्कूल ऑफ सोशल वर्क, टाटा समाज विज्ञान संस्थान, मुंबई से ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहें। संगोष्ठी के संरक्षक प्रो० सुनील महावर, अधिष्ठाता, सामाज विज्ञान संकाय सह अध्यक्ष समाज कार्य विभाग व संगोष्ठी के आयोजन सचिव डा० अनुपम वर्मा एवं संयोजक डा० उपमेश कुमार थे।कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो० सुनील महावर के स्वागत भाषण से हुआ।

बतौर मुख्य अतिथि प्रो० जुबेर मिनाई ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के पांच स्तंभ हैं जो समाज में शिक्षा और सर्वांगीण विकास पर जोर देते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूल कॉम्प्लेक्स विकसित करने की योजना है। समाज कार्य विषय के विद्यार्थियों को विभिन्न स्तरों पर सेवाएं देने की जरूरत हैं जिससे एम.एस.डब्लू. के विद्यार्थियों के कैरियर संभावनाएं बढ़ती हैं। मुख्य वक्ता प्रो. पी. के. शाहजहां ने स्कूल सोशल वर्क शिक्षा के महत्व के बारें में बताते हुए कहा कि शिक्षा स्टूडेंट फोकस, सिस्टम फोकस, इको सिस्टम फोकस होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था को बनाने के लिए प्रशिक्षित समाज कार्यकर्ता की बड़े पैमाने पर आवश्यकता है। राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह के माध्यम से सामाजिक कार्यकर्ताओं को तैयार करने में मदद मिलेगी। सम्मानित अतिथि प्रो. आनंद प्रकाश ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि नई शिक्षा नीति समग्र शिक्षा की बात करती हैं। उन्होंने कहा कि आज के समय में शिक्षा का व्यवसायिक दृष्टिकोण की तरफ उन्मुख होना समाज के लिए एक चुनौती बना हुआ हैं।

नई शिक्षा नीति ऐसी चुनौतियों को दूर करने में मददगार साबित होगी। 5वें राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह का शुभारंभ 15 अगस्त 2024 को हस्ताक्षर अभियान के साथ हुआ था, जिसमें सैकड़ों शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अपने हस्ताक्षर किए थे। इस अवसर पर महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० संजय श्रीवास्तव ने हस्ताक्षर बैनर पर सर्वप्रथम हस्ताक्षर करके राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह की शुरुआत की और समाज कार्य विभाग के इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि समाज कार्य विभाग एवं समाज कार्य शिक्षा सामाजिक संतुलन को बढ़ावा देती हैं। इस सप्ताह के दौरान समाज कार्य के विद्यार्थियों ने विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिसमें हस्ताक्षर अभियान, पोस्टर प्रस्तुतिकरण, वाद -संवाद, राष्ट्रीय वेबीनार आदि प्रमुख हैं। पोस्टर प्रस्तुतिकरण के माध्यम से समाज कार्य विभाग के छात्र-छात्राओं ने पोस्टर बनाकर विश्वविद्यालय में समाज से संबंधित सामाजिक मुद्दों एवं समाज कार्य के द्वारा उन सामाजिक मुद्दों का निदान और समाधान प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी का औपचारिक धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम संयोजक डॉ. उपमेश कुमार ने स्कूल सोशल वर्कर के विशिष्ट और ठोस भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी के आयोजन सचिव डॉ. अनुपम वर्मा ने किया। डॉ. वर्मा ने कहा कि जिस प्रकार स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए प्रशिक्षित डॉक्टर की जरूरत होती है उसी प्रकार सामाजिक समस्याओं के लिए एक प्रशिक्षित समाज कार्यकर्ता की जरूरत है। कार्यक्रम में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्राध्यापक प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी, प्रो. बृजेश पांडे, डॉक्टर बबलू पाल, प्रो. ए. टी. पाल, प्रो. रफीकुल इस्लाम आदि शिक्षकों की उपस्थिति थी।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

www.mgcub.ac.in

parisarpratibimb@mgcub.ac.in

@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

भारत की चंद्र महत्वाकांक्षाएं: चंद्रयान -3 की भूमिका" विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के अप्रेंटिसशिप सेल द्वारा "भारत की चंद्र महत्वाकांक्षाएं: चंद्रयान -3 की भूमिका" विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसमें चंद्रयान -3 मिशन पर विशेष ध्यान देने के साथ, भारत की चंद्र अन्वेषण यात्रा का गहन विश्लेषण किया गया। प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव, निदेशक, अनुसंधान और विकास सेल ने सभी सम्मानित अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोह के महत्व के बारे में जानकारी दी। अपरेंटिसशिप सेल के नोडल अधिकारी डॉ. पवन कुमार ने राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस 2024 के विषय "चंद्रमा को छूते हुए जीवन को छूना: भारत की अंतरिक्ष गाथा" को रेखांकित किया।

माननीय कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों को अंतरिक्ष अन्वेषण से हमारे देश में आने वाली असीमित संभावनाओं के बारे में समझाकर प्रेरित किया और वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाने और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में नवाचार को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जताई। कार्यक्रम की शुरुआत इसरो अध्यक्ष के स्वागत भाषण की लाइव स्ट्रीमिंग के साथ हुई, जिसके बाद स्पेस विजन 2047 पर वीडियो और माननीय राज्य मंत्री (अंतरिक्ष) का संबोधन हुआ।

संगोष्ठी को संबोधित करते मगाकेविवि के कुलपति

माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू की उपस्थिति से शोभायमान हुआ। अपने संबोधन में, राष्ट्रपति ने भारत को अंतरिक्ष अन्वेषण में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने में चंद्रयान मिशन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के प्रयासों की सराहना की और इस बात पर जोर दिया कि कैसे चंद्रयान-3 विशेष रूप से चंद्रमा की सतह और उसके संसाधनों का पता लगाने की भारत की खोज में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रोफेसर (डॉ.) सेक्कर वेंकटरमन, इसरो के पूर्व वैज्ञानिक और सीयूएसएटी, कोच्चि में एमेरिटस द्वारा मुख्य वक्तव्य दिया गया। उन्होंने अंतरिक्ष अन्वेषण में भारत की बढ़ती शक्ति और चंद्रमा की सतह और उसके संसाधनों को समझने में चंद्र मिशनों के रणनीतिक महत्व पर सजीव प्रसारित कार्यक्रम भारत की प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने में चंद्रयान-3 की भूमिका और वैश्विक अंतरिक्ष अन्वेषण पर इसके संभावित प्रभाव पर जोर दिया। उन्होंने चंद्रयान-3 मिशन की तकनीकी चुनौतियों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी प्रदान की। चर्चा मिशन के उद्देश्यों पर केंद्रित थी, जिसमें चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का पता लगाने के लिए एक रोवर और लैंडर की तैनाती भी शामिल थी, जो पानी की बर्फ की उपस्थिति के कारण महान वैज्ञानिक रुचि का क्षेत्र है। नई दिल्ली के भारत मंडपम में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के मुख्य कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की लाइव स्ट्रीमिंग की गई।

इस सत्र के बाद इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के खगोल भौतिकी और वायुमंडलीय

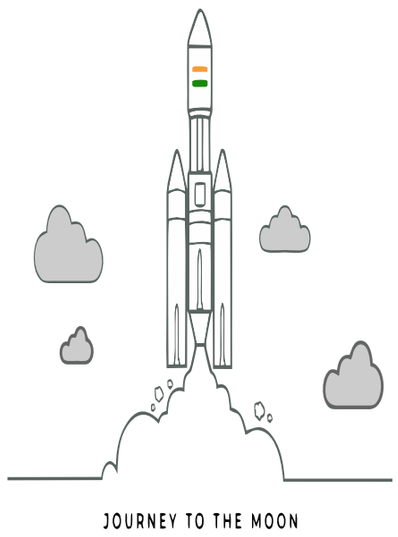

विज्ञान के विशेषज्ञ प्रो. शांतनु रस्तोगी ने हमारे जीवन में अंतरिक्ष विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और उसके अनुप्रयोगों की संभावनाओं के प्रति प्रेरित किया। संगोष्ठी का समापन एमजीसीयू के भौतिकी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. श्वेता सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिन्होंने सभी प्रतिभागियों और वक्ताओं को उनके योगदान के लिए आभार व्यक्त किया। इस आयोजन को व्यापक रूप से सफल माना गया, जिससे भारत की चंद्र महत्वाकांक्षाओं के बारे में जागरूकता बढ़ी और अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की अगली पीढ़ी को प्रेरणा मिली। यह आयोजन एक बड़ी सफलता थी, जिसमें विश्वविद्यालय के सभी विभागों के 200 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया और इसने अंतरिक्ष विज्ञान के बारे में सार्थक चर्चा और ज्ञान साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

"रसायन शास्त्र दिवस" का आयोजन

- *रसायन शास्त्र के जनक आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे को दी गई श्रद्धांजलि*
- *आचार्य प्रफुल्ल के जीवन और कार्यों पर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन*

रसायन शास्त्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपथित विद्यार्थी

विश्वविद्यालय के रसायन विभाग द्वारा भारत में रसायन शास्त्र के जनक, आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे के जन्मदिन के अवसर पर पं. राज कुमार शुक्ल सभागार, चाणक्य परिसर में "रसायन शास्त्र दिवस" मनाया गया। कार्यक्रम रसायन विभाग में हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया। इस अवसर पर जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल के रसायन शास्त्र के प्रो.चित्तरंजन सिन्हा ने "भारत में रसायन विज्ञान के सपने और वास्तविकता - आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे" विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान दिया।

रसायन शास्त्र दिवस के दौरान विभाग में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे के तैल्यचित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे के जीवन और कार्यों पर आमंत्रित व्याख्यान और आचार्य प्रफुल्ल चंद्र रे के जीवन और कार्यों पर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया।

इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अभिजीत कुमार द्वारा किया गया और प्रो. रफीक उल इस्लाम ने विशिष्ट अतिथि और अन्य लोगों का स्वागत किया। भौतिक विज्ञान के संकायाध्यक्ष प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी ने मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए सभा को संबोधित किया। डॉ. राकेश कुमार पांडेय, डॉ. रजनीश नाथ तिवारी, डॉ. अनिल कुमार सिंह और डॉ. उत्तम कुमार दास सहित रसायन विभाग के सभी छात्र-छात्राएं भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

शैक्षिक अध्ययन विभाग द्वारा विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

"वर्तमान भारतीय शिक्षा में महात्मा गाँधी जी के विचारों का अनुशीलन" विषय पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान के पश्चात मुख्य वक्ता के साथ विभाग के विद्यार्थी एवं प्राध्यापक

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के शैक्षिक अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय द्वारा "वर्तमान भारतीय शिक्षा में महात्मा गाँधी जी के विचारों का अनुशीलन" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता प्रोफेसर उमेश चन्द्र वशिष्ठ (पूर्व विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, पूर्व सदस्य, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली) थे। व्याख्यान में मुख्य भूमिका में विभागाध्यक्ष डॉ. मुकेश कुमार, प्रोफेसर आनन्द प्रकाश (अध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षा नीति क्रियान्वयन समिति), प्रोफेसर सुनील महावर (संकायाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान विभाग), और प्रोफेसर रंजीत कुमार चौधरी (संकायाध्यक्ष, संगणक विज्ञान एवं सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी) ने निभाई। मुख्य वक्ता प्रोफेसर उमेश चन्द्र वशिष्ठ ने अपने संबोधन में कहा कि महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार "आशा की किरण" के रूप में उभरा है जो गाँधी जी के विचारों को आगे बढ़ाएगा।

विशिष्ट व्याख्यान को संबोधित करते मुख्य वक्ता

उन्होंने बताया कि हमें उन सभी बिन्दुओं पर चिंतन करते हुए कार्य करना होगा जो राष्ट्र निर्माण में सहायक हो सकते हैं। उन्होंने गुरुकुल व्यवस्था तथा विभिन्न शिक्षा समितियों पर भी प्रकाश डाला और कहा कि भारतीय शिक्षा में सुधार के लिए नियम और योजना तो पहले से ही बनाये गए हैं, अब समय आ गया है कि उनका क्रियान्वयन पूर्ण रूप से हो। प्रोफेसर सुनील महावर ने कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य चहुँमुखी विकास करना है तथा इसके लिए तकनीकी ज्ञान के अतिरिक्त सामाजिक ज्ञान का होना भी आवश्यक है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफेसर आनन्द प्रकाश ने कहा कि महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी चंपारण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर कार्य कर रहा है जो विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में पूर्ण रूप से सहायक होगा।इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के आचार्य प्रो. शिरीष मिश्रा, प्रो. सुनील श्रीवास्तव, डॉ. जुगल दधीच, डॉ. सरिता तिवारी, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. मधु पटेल, डॉ. रामलाल, डॉ. अभय विक्रम सिंह, डॉ. उपमेश तलवार, डॉ. अनुपम वर्मा, डॉ. पथलोथ ओमकार एवं बड़ी संख्या में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा रानी, सहायक आचार्या, शैक्षिक अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय द्वारा किया गया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रश्मि श्रीवास्तव, कार्यक्रम संयोजिका व सहायक आचार्या, शैक्षिक अध्ययन विभाग द्वारा दिया गया।

भारतीय परम्परा की संवाहक भाषा संस्कृत - प्रो0 प्रसून

- **एमजीसीयू में संस्कृत दिवस का आयोजन, संस्कृत के महत्त्व पर चर्चा**

संस्कृत दिवस के अवसर पर उपस्थित शिक्षक, शोधार्थी, यावं विद्यार्थी

महात्मागाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के द्वारा संस्कृत दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोधार्थिनी रीता राय के सरस्वती वन्दना से हुआ। तत्पश्चात शोधार्थिनी पापिया गंड़ाई ने ध्येयमन्त्र किया। मनोरंजक रूप से राष्ट्रीय भावना को प्रेरित करने वाले "प्रियं भारती तत्सदा रक्षणीयम्" गीत से शोधच्छात्रा रञ्जू यादव ने सभी के मन को आह्लादित किया तो वहीं एमए की छात्रा गुड़िया कुमारी ने मेघदूतम् गीतिकाव्य के कतिपय श्लोकों का सुमधुर वाचन किया। वहीं शोधच्छात्र विश्वनाथ छाटुई ने "आ जा सनम....." संस्कृतानुवादित गीत की प्रस्तुति दी। विभाग के शोधच्छात्र गोपाल कृष्ण मिश्र ने "संस्कृत एवं संस्कृति" विषय पर प्रेरक भाषण दिया। आपने बताया कि भारतीय संस्कृति के विकास में संस्कृत भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहां भी गया है - "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"। तदनन्तर वरिष्ठ शोधच्छात्रा सुपर्णा सेन ने संस्कृत की उपयोगिता विषय पर प्रेरणादायी भाषण दिया। संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ बबलू पाल ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कृत की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज में संस्कार और परम्परा के लिए संस्कृत भाषा की महती उपयोगिता को समझाया। आपने बताया कि भारतीय संस्कृति के विकास में संस्कृत भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहां भी गया है - "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"। तदनन्तर वरिष्ठ शोधच्छात्रा सुपर्णा सेन ने संस्कृत की उपयोगिता विषय पर प्रेरणादायी भाषण दिया। संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ विश्वजित् बर्मन ने "गीतगोविन्दम्" की सुमनोहारिणी प्रस्तुति दिया। डॉ. बर्मन ने बताया कि संविधान में भी संस्कृत भाषा के महत्त्व को देखते हुए स्थान दिया गया है। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश इत्यादि प्रदेशों में भी संस्कृत संस्थानों की स्थापना के द्वारा देवभाषा का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। एक्सिस कोषागार तथा कई अन्य कोषागारों में भी इस समय संस्कृत भाषा के विकल्प को स्थान दिया गया है। विभिन्न रोजगार के अवसरों पर डॉ. बर्मन ने उचित प्रकाश डाला। संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ बबलू पाल ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कृत की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए भारतीय समाज में संस्कार और परम्परा के लिए संस्कृत भाषा की महती उपयोगिता को समझाया। आपने बताया कि मानव स्वास्थ्य के लिए सुश्रुत संहिता, चरक संहिता के साथ ही योगशास्त्र का विस्तृत वर्णन संस्कृत में ही प्राप्त होता है। कार्यक्रम के संरक्षक एवं अध्यक्षता कर रहे मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता, गांधी भवन परिसर के निदेशक तथा विश्वविद्यालय के मुख्य कुलानुशासक प्रो० प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि संस्कृत केवल एक भाषा नहीं है अपितु हमारे संस्कारों की निर्माता है। वेद, उपनिषद्, वेदांग, साहित्य, दर्शन, व्याकरण के साथ ही विज्ञान और धर्मशास्त्रों का जो विस्तृत वर्णन संस्कृत साहित्य में प्राप्त होता है, ऐसा विस्तृत एवं विशाल साहित्य अन्य किसी भी भाषा में नहीं प्राप्त होता है। आपने बताया कि वर्तमान समय में संस्कृत भाषा की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा नीति २०२० में विशिष्ट स्थान प्राप्त है।अजय चन्द्र दास ने एकात्मता मन्त्र किया। शान्ति मन्त्र से कार्यक्रम की समाप्ति हुई। कार्यक्रम का सफल संचालन शोधच्छात्र सुखेन घोष ने किया। संस्कृत दिवस समारोह में संस्कृत विभाग के सभी शोधार्थी एवं परास्नातक छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

माँ के सम्मान में सांस्कृतिक और साहित्यिक परिषद की भावनात्मक अभिव्यक्ति : राधा वन

राधा वन में वृक्षारोपण के बाद उपस्थित विवि के कुलपति, आगंतुग अतिथि, पदाधिकारी, प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक और साहित्यिक परिषद् के तत्वाधान में 11 तुलसी के पौधों का रोपण कर "राधा वन" की स्थापना शुभारंभ किया गया है। विश्वविद्यालय के जन-संपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्याम नन्दन ने बताया कि महान व्यक्तित्व और संस्कारों की परंपरा को संजोए रखने वाले विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव की स्वर्गीय माता श्रीमती राधा श्रीवास्तव की पावन स्मृति में प्रो. प्रसून दत्त सिंह के नेतृत्व में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद ने एक अद्वितीय और हृदय स्पर्शी पहल की है। डॉ. श्याम नन्दन ने कहा कि यह राधा वन, हमारे विश्वविद्यालय परिसर में हरियाली का प्रतीक बनेगा और यह हमें हमारी सांस्कृतिक धरोहरों और मूल्यों से जुड़े रहने का संदेश भी देगा। आगे चलकर अन्यान्य पादपों और पुष्पों के आरोपण के साथ ही इसको वृहद रूप प्रदान किया जाएगा। इस सुअवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि राधा वन की स्थापना निस्संदेह हमारे विश्वविद्यालय के ज्ञान के क्षेत्र में एक नई परंपरा की शुरुआत है। इस वन में 11 तुलसी के पौधों का रोपण किया गया है, जो न केवल पर्यावरण की सुरक्षा और शुद्धि के प्रतीक हैं, बल्कि हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का भी अभिन्न अंग हैं। तुलसी के पौधों का चयन इस वन के लिए अत्यंत विचारपूर्वक किया गया है, क्योंकि तुलसी का पौधा भारतीय संस्कृति में एक विशेष स्थान रखता है। इसे न केवल स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, बल्कि यह हमारे धार्मिक अनुष्ठानों और दैनिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि राधा वन का उद्देश्य केवल एक स्मारक वन की स्थापना तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे एक जीवंत और बढ़ते हुए पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में विकसित करना है। इस वन का विस्तार और इसका सतत विकास हमारे विश्वविद्यालय की शैक्षिक और सांस्कृतिक यात्रा का हिस्सा बनेगा। यह वन हमारे छात्रों, शिक्षकों, और आगंतुकों के लिए एक प्रेरणा-स्रोत बनेगा, जो उन्हें प्रकृति और संस्कृति के साथ गहरे संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि राधा वन का यह विचार न केवल पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि यह हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और पारंपरिक ज्ञान की महत्ता को भी उजागर करता है। विश्वविद्यालय का यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अनमोल धरोहर साबित होगा, जो उन्हें अपनी जड़ों से जुड़े रहने और संस्कृति के प्रति गर्व की भावना को विकसित करने में सहायता करेगा। इस अवसर पर सांस्कृतिक और साहित्यिक परिषद् के अध्यक्ष और मुख्य कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि यह वन हमारे विश्वविद्यालय के ज्ञान के क्षेत्र में एक स्थायी और सशक्त साक्षी बनेगा। हम इस वन क्षेत्र को निरंतर बढ़ाते और विकसित करते रहेंगे, ताकि यह हमारे विश्वविद्यालय के विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहे। इस पहल के माध्यम से, हम न केवल अपने पर्यावरण की रक्षा करेंगे, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी सहेज कर रखेंगे। उन्होंने कहा कि राधा वन का यह प्रयास स्वर्गीय श्रीमती राधा श्रीवास्तव जी की स्मृति को सजीव रखने का एक माध्यम है। उनके संस्कार, उनके आदर्श, और उनके प्रति सम्मान का यह अनूठा प्रयास हमारे विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा बन जाएगा। हमारा संकल्प है कि इस वन को हम सतत रूप से संजोएंगे और इसे आने वाले समय में भी विश्वविद्यालय के ज्ञान और संस्कृति के विस्तार का प्रतीक बनाए रखेंगे। इस अवसर पर डॉ अंजनी कुमार श्रीवास्तव, डॉ श्वेता, डॉ बबलू पाल, डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा, डॉ. अनुपम वर्मा, डॉ गरिमा तिवारी, डॉ. विश्वजीत बर्मन सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक,विद्यार्थी एवं अन्य शैक्षणिक कर्मचारी उपस्थित रहे।

एमजीसीयू में यूजीसी नेट-जेआरएफ के लिए निःशुल्क कोचिंग प्रारम्भ

विभागीय छात्रों के हित को ध्यान में रखते हुए यूजीसी नेट/ जेआरएफ की निःशुल्क कक्षा महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा शुरू की गयी। जनसंपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्याम नन्दन ने बताया की संस्कृत विभाग द्वारा नेट जेआरएफ के लिए शुरू की गई निशुल्क कक्षाएं सायं 4:00 बजे से 5:00 बजे तक बनकट स्थित महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के गाँधी भवन परिसर के नारायणी कक्ष में संचालित की जाएंगी। इन कक्षाओं से विश्वविद्यालय के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। इस सुअवसर पर मुख्य संरक्षक की भूमिका में मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो प्रसून दत्त सिंह का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के अकादमिक विकास के लिए संस्कृत विभाग कृत संकल्प है। संरक्षक के रूप में संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा उपस्थित रहे। डॉ. श्याम कुमार झा ने विभाग द्वारा आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की तथा वैश्विक स्तर पर विद्यार्थियों की प्रतिभा को स्थापित करने में इस तरह के कार्यक्रम की महती भूमिका की उपस्थापन किया। कार्यक्रम में संयोजक डॉ. बबलू पाल तथा डॉ. बिश्वजीत बर्मन की उपस्थिति रही। हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने भी उपस्थित होकर इस कार्यक्रम को अकादमिक उन्नति का महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम में संस्कृत विभाग के लगभग 35 विद्यार्थी तथा अन्य विभाग के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे। संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम से विद्यार्थियों को अकादमिक तथा आर्थिक लाभ होगा।

एमजीसीयू में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत पौधरोपण

वृक्षारोपण के बाद उपस्थित विवि के कुलपति, प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रही श्री श्रीवास्तव ने आगे कहा कि वर्तमान सरकार प्रकृति से जुड़कर जीवन जीने की प्राचीन भारतीय संस्कृति के महत्व को समझते हुए तथा पर्यावरण की वैश्विक समस्या के समाधान हेतु प्रयत्नशील है। प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकतानुसार उपयोग करना भारतीय जीवन शैली का मूल है।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार भी राष्ट्र के उन्हीं प्राचीन भारतीय संकल्पों को जनमानस के बीच पहुँचाने तथा उन्हें भारतीय जीवन शैली को को अपनाने हेतु प्रेरित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उक्त बातें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.संजय श्रीवास्तव ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत विश्वविद्यालय के गाँधी भवन परिसर में आयुर्वेदीय तथा अन्य प्राकृतिक पौधों के रोपण के अवसर पर कहीं। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की संस्कृति से पोषित है, जिसका प्रभाव भारतीय जनमानस पर भी पड़ा और जिसके परिणामस्वरूप अनेक भौतिक समस्याएं जन्म ले लीं। इन सबको ध्यान में रखते हुए वर्तमान सरकार प्रकृति के साथ जुड़कर जीवन जीने की प्राचीन भारतीय संस्कृति के संकल्पों की पुनर्स्थापना हेतु कृत संकल्पित है। वृक्षारोपण के अवसर पर कुलानुशासन प्रो. प्रसून दत्त सिंह, कुलपति के विशेष कार्याधिकारी डॉ. पाथलोथ ओंकार, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा, सह छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ बबलू पाल, सहायक आचार्य डॉ. बिश्वजीत बर्मन, सहायक आचार्य डॉ. अनुपम कुमार वर्मा तथा अन्य विभागों के शिक्षक एवं विद्यार्थीगण उपस्थित थे।

एमजीसीयू में प्रक्षिक्षु जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

• *शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आयोजित हुआ कार्यक्रम*

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अप्रेंटिसशिप सेल द्वारा चाणक्य परिसर स्थित पण्डित राजकुमार शुक्ल सभागार में व्यावहारिक प्रशिक्षण बोर्ड (पूर्वी क्षेत्र) बीओपीटी, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग प्रशिक्षु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन ब्लेंडेड मोड में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और उद्योग के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में काम करना और व्यावहारिक कौशल विकास और कैरियर उन्नति के लिए एक मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. पवन कुमार, नोडल अधिकारी, अप्रेंटिसशिप सेल, एमजीसीयू द्वारा परिचय एवं स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता, कामिनेदी चंद्र मौली, सहायक निदेशक, व्यावहारिक प्रशिक्षण बोर्ड, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता का स्वागत किया। विशिष्ट वक्ता, कामिनेदी चंद्र मौली ने शैक्षणिक ज्ञान और उद्योग कौशल के बीच अंतर को पाटने में प्रशिक्षुता के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण में शामिल विद्यार्थी

उन्होंने रोजगार क्षमता बढ़ाने और वास्तविक दुनिया का अनुभव प्रदान करने में प्रशिक्षुता की भूमिका पर जोर दिया। इस कार्यक्रम ने संस्थान के प्रशिक्षुता कार्यक्रमों के माध्यम से 5 वर्षों के भीतर छात्रों और नए स्नातकों के लिए उपलब्ध विभिन्न अवसरों और कैरियर लाभों की शुरुआत की। इस ओरिएंटेशन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को उद्योगों और व्यवसायों की व्यावहारिक और विविध श्रेणी से परिचित कराना और प्रक्षिक्षु कार्यक्रम के माध्यम से नए उद्यमशील लोगो की खोज एवं पहचान करना है। छात्रों को अप्रेंटिसशिप सेल के माध्यम से उपलब्ध अप्रेंटिसशिप अवसरों से परिचित कराया गया। विशिष्ट वक्ता ने प्रतिभागियों को आवेदन प्रक्रिया, कौशल आवश्यकताओं और उनकी प्रशिक्षुता योजनाओं में शामिल होने के लाभों पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। छात्रों के प्रश्नों और चिंताओं को दूर करने के लिए इंटरैक्टिव सत्र और प्रश्नोत्तर पैनल आयोजित किए गए। छात्रों की उत्साही भागीदारी ने उनके करियर आकांक्षाओं के अनुरूप व्यावहारिक जानकारी देने की यात्रा शुरू हुई।

कार्यक्रम को सफल बनाने में ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के चेयरमैन प्रो रफीक उल इस्लाम, प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव, प्रो अजय कुमार गुप्ता, डॉ. नीलाभ, डॉ. अरविंद, डॉ. श्वेता, ऋतुप्राण रथ, मिस्बाउल इस्लाम, अदिति प्रज्ञा, सुनीता यादव, गोविंद राज, पूजा कुमारी, अदिति साह, किसन कुमार की भूमिका प्रमुख थी। प्रशिक्षु कार्यक्रम में 80 से अधिक विद्यार्थी ऑनलाइन और 60 विद्यार्थी ऑफलाइन सहभागिता किए।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

विश्वविद्यालय के मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता

प्रो. प्रसून दत्त सिंह के साथ "भारतीय ज्ञान परम्परा" विषय पर विशेष चर्चा

भारतीय ज्ञान परम्परा से क्या तात्पर्य है?
भारतीय ज्ञान परम्परा भारतीय सभ्यता की वह धरोहर है जो हजारों वर्षों से चली आ रही है और जिसने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। भारतीय ज्ञान परम्परा से तात्पर्य उस विशाल और विविध ज्ञान के भण्डार से है जो प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुआ। इसमें वेद, वेदांग, उपनिषद्, धर्मशास्त्र, दर्शन, पुराण, महाभारत, रामायण, योग, आयुर्वेद, और ज्योतिष जैसी विद्या शामिल हैं। यह परम्परा केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, संगीत, नृत्य, और कला के विभिन्न रूप शामिल हैं। यह परम्परा जीवन के विभिन्न पहलुओं को संतुलित करने की दिशा में निर्देशित करती है और जीवन के उद्देश्य, मोक्ष की प्राप्ति, और समाज में सामंजस्य स्थापित करने के सिद्धांतों को प्रस्तुत करती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कृत की क्या भूमिका है?
संस्कृत भारतीय ज्ञान परम्परा की मुख्य भाषा है और इसे 'देववाणी' माना गया है। प्राचीन काल से संस्कृत ने वेदों, उपनिषदों, पुराणों, और शास्त्रों के माध्यम से ज्ञान का प्रसार किया। संस्कृत की संरचना इसकी शब्दावली और व्याकरण की गहराई इसे वैज्ञानिक और दार्शनिक विषयों की अभिव्यक्ति के लिए अत्यधिक उपयुक्त बनाती है। इसके माध्यम से न केवल धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों की रचना हुई, बल्कि गणित, खगोलशास्त्र, और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

ज्ञान परम्परा के वैसे कौन से तत्व हैं, जो आज के समाज में सर्वाधिक प्रासंगिक हैं?
आधुनिक समय में तनाव, स्वास्थ्य समस्याओं, और मानसिक असंतुलन के बीच भारतीय ज्ञान परम्परा के तत्त्व जैसे योग, आयुर्वेद, और ध्यान अत्यधिक प्रासंगिक हो गए हैं। योग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में सहायक है, जबकि आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगों की रोकथाम और उपचार की विधि प्रदान करता है। ध्यान मानसिक शांति और संतुलन को बनाए रखने में मदद करता है। इसके अलावा, भारतीय दर्शन की अहिंसा, सत्य, और सह-अस्तित्व की अवधारणाएं सामाजिक और नैतिक चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण हैं।

क्या स्वतन्त्रता के बाद भारतीय ज्ञान परम्परा को उतना महत्त्व दिया गया है, जिसकी आवश्यकता थी?
स्वतन्त्रता के बाद भारतीय ज्ञान परम्परा को अपेक्षित सम्मान और महत्त्व नहीं मिल पाया, जैसा कि होना चाहिए था। पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के प्रभाव के कारण पारंपरिक भारतीय ज्ञान की उपेक्षा हुई और इसे आधुनिकता के विपरीत माना गया। हालांकि, अब धीरे-धीरे इस दिशा में बदलाव आ रहा है। सरकार और विभिन्न संगठनों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनः स्थापित किया जाए और इसे शिक्षा के मुख्यधारा में सम्मिलित किया जाए।

आम लोगों तक हमारे ज्ञान परम्परा की मूलभूत बातें सुगमता पूर्वक पहुँचे इसके लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए?
ज्ञान परम्परा की मूलभूत बातें आम लोगों तक पहुँचाने के लिए सबसे पहले शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। पारंपरिक विषयों को विद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। सरल और आम बोलचाल की भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन, डिजिटल माध्यमों जैसे वेबिनार, वीडियो, और पॉडकास्ट के जरिए ज्ञान का प्रसार, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करके इस दिशा में प्रगति की जा सकती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रसार में शिक्षण संस्थानों की क्या भूमिका हो सकती है?
शिक्षण संस्थान ज्ञान परम्परा के प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वेद, उपनिषद्, और अन्य शास्त्रों के अध्ययन के लिए विशेष पाठ्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं। संस्कृत भाषा की शिक्षा को पुनर्जीवित करना, और भारतीय दर्शन, योग, और आयुर्वेद के अध्ययन को बढ़ावा देना शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी है। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को भारतीय ज्ञान परम्परा की समृद्धि से परिचित कराया जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में योग का क्या महत्त्व है?
योग भारतीय ज्ञान परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, जो शरीर, मन, और आत्मा के समग्र विकास को प्रोत्साहित करता है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह मानसिक अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, और आंतरिक शांति का मार्ग भी है। प्राचीन ऋषियों द्वारा विकसित यह प्रणाली आज न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के साधन के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार की जा रही है।

आयुर्वेद का भारतीय ज्ञान परम्परा में क्या स्थान है?
आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परम्परा की प्राचीन चिकित्सा प्रणाली है जो शरीर, मन, और आत्मा के संतुलन पर आधारित है। यह चिकित्सा पद्धति प्राकृतिक उपचारों, जड़ी-बूटियों, आहार, और जीवनशैली में सुधार के माध्यम से स्वास्थ्य को बनाए रखने और बीमारियों के उपचार की दिशा में काम करती है। आयुर्वेदिक सिद्धांतों का पालन न केवल रोगों के उपचार में, बल्कि उनकी रोकथाम में भी सहायक होता है, जिससे यह एक समग्र स्वास्थ्य पद्धति बनती है।

क्या भारतीय दर्शन आज के जीवन में प्रासंगिक हैं?
भारतीय दर्शन आज के जीवन में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। जैसे कि वेदांत और योग दर्शन जीवन के उद्देश्य, आत्मज्ञान, और नैतिकता के सिद्धांतों की व्याख्या करते हैं। सांख्य दर्शन ब्रह्माण्ड और सृष्टि के सिद्धांतों की चर्चा करता है। ये दर्शन आधुनिक जीवन की चुनौतियों, जैसे कि मानसिक तनाव, नैतिक संकट, और आत्म-प्रश्नों के समाधान प्रदान करते हैं, और लोगों को आंतरिक शांति और संतुलन प्राप्त करने में मदद करते हैं।

संस्कृत भाषा के संरक्षण के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?
संस्कृत के संरक्षण के लिए इसे विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है। संस्कृत साहित्य और शास्त्रों के अनुवाद और संक्षिप्त संस्करणों का प्रकाशन, और डिजिटल माध्यमों के जरिए इसकी पहुंच को व्यापक बनाना भी महत्त्वपूर्ण है। संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्तियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन, और संस्कृत शिक्षकों के प्रशिक्षण पर जोर देकर भी संरक्षण प्रयासों को मजबूती दी जा सकती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और पश्चिमी ज्ञान परम्परा में क्या अंतर है?
भारतीय ज्ञान परम्परा समग्रता और आध्यात्मिकता पर केंद्रित है, जबकि पश्चिमी ज्ञान परम्परा तर्क, विश्लेषण, और भौतिक विज्ञान पर आधारित है। भारतीय परम्परा में जीवन के प्रत्येक पक्ष, जैसे कि आध्यात्मिकता, नैतिकता, और समाज के प्रति जिम्मेदारी को एकीकृत दृष्टिकोण से देखा जाता है। इसके विपरीत, पश्चिमी परम्परा में विश्लेषणात्मक और पृथक दृष्टिकोण अधिक प्रमुख है, जहां ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को अलग-अलग रूप में अध्ययन किया जाता है।

क्या भारतीय ज्ञान परम्परा का विज्ञान में योगदान रहा है?
भारतीय ज्ञान परम्परा ने विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गणित में शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, और त्रिकोणमिति भारतीय विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई। खगोलशास्त्र में आर्यभट और भास्कराचार्य जैसे वैज्ञानिकों ने ग्रहों की गति और खगोलीय गणनाओं के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए। आयुर्वेद और योग ने चिकित्सा विज्ञान में समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

क्या संस्कृत भाषा को आधुनिक विषयों के अध्ययन के लिए उपयोग किया जा सकता है?
संस्कृत भाषा अपनी संरचना और व्याकरण के कारण विज्ञान, गणित, और तकनीकी विषयों के अध्ययन के लिए उपयुक्त है। इसकी शब्दावली और व्याकरणिक सटीकता इसे जटिल और सूक्ष्म विचारों को व्यक्त करने में सक्षम बनाती है। संस्कृत का उपयोग कम्प्यूटर विज्ञान में भी किया जा रहा है, जैसे कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा प्रसंस्करण के क्षेत्रों में, जो इसकी प्रासंगिकता को और भी बढ़ाता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के क्या आदर्श रहे हैं?
भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के आदर्श केवल ज्ञान के संचार तक सीमित नहीं रहे, बल्कि यह जीवन के व्यापक दृष्टिकोण को समझाने और आत्मविकास पर भी केंद्रित रहे हैं। गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थियों को जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि नैतिकता, अनुशासन, और सामाजिक जिम्मेदारियों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य जीवन के चार पुरुषार्थों - धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष - की प्राप्ति की दिशा में मार्गदर्शन करना था।

भारतीय गणित का विश्व को क्या योगदान है?
भारतीय गणित ने विश्व को महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, जैसे कि शून्य की खोज, दशमलव प्रणाली, और बीजगणित के सिद्धांत। आर्यभट और भास्कराचार्य जैसे गणितज्ञों ने ग्रहों की गति, समय की गणना, और जटिल गणितीय समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय गणित के सिद्धांतों ने न केवल भारत, बल्कि अरब और पश्चिमी गणित पर भी गहरा प्रभाव छोड़ा।

क्या भारतीय ज्ञान परम्परा के कुछ तत्त्वों का वैश्विक प्रसार हुआ है?
भारतीय ज्ञान परम्परा के कई तत्त्वों का वैश्विक प्रसार हुआ है। योग और ध्यान अब केवल भारत तक सीमित नहीं रहे, बल्कि ये विश्वभर में स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के साधन के रूप में अपनाए जा रहे हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली भी अब वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रही है। भारतीय दर्शन और अध्यात्म ने भी वैश्विक स्तर पर लोगों के जीवन को प्रभावित किया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और शिक्षा प्रणाली के बीच किस प्रकार का समन्वय होना चाहिए?
भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए पाठ्यक्रम में पारंपरिक विषयों को सम्मिलित करना आवश्यक है। शिक्षा में योग, आयुर्वेद, और भारतीय दर्शन के अध्ययन को शामिल करना, और आधुनिक विज्ञान के साथ पारंपरिक ज्ञान को जोड़कर एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करना आवश्यक है। इससे छात्रों को अपने सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गर्व और समझ विकसित करने में मदद मिलेगी।

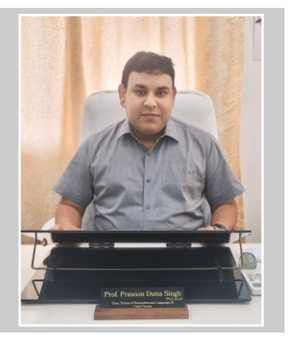

प्रो. प्रसून दत्त सिंह
अधिष्ठाता, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार

क्या भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रभाव भारतीय कला और साहित्य पर पड़ा है?
भारतीय ज्ञान परम्परा का भारतीय कला और साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। रामायण, महाभारत, और पुराणों ने साहित्यिक कृतियों को प्रेरित किया। भारतीय नृत्य, संगीत, और चित्रकला में भी धार्मिक और दार्शनिक तत्वों की झलक मिलती है। कला और साहित्य ने भारतीय समाज की सांस्कृतिक और नैतिक मान्यताओं को सदियों से संरक्षित और प्रसारित किया है।

भारतीय समाज में धर्म और नैतिकता के क्या मूल सिद्धांत हैं?
भारतीय समाज में धर्म और नैतिकता के मूल सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह हैं। ये सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि समाज में भी सद्भाव और संतुलन स्थापित करने की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। ये सिद्धांत महात्मा गांधी और अन्य महान नेताओं के जीवन में भी परिलक्षित होते हैं और भारतीय संस्कृति की बुनियादी धरोहर हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा में वेदों का क्या महत्त्व है?
वेद भारतीय ज्ञान परम्परा के सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। वेदों में जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि धर्म, यज्ञ, उपासना, और समाज के नियमों का वर्णन मिलता है। वेदों को 'श्रुति' माना गया है, जिसका अर्थ है 'जो सुना गया है', और इन्हें अपौरुषेय माना जाता है। वेदों ने भारतीय धर्म, समाज, और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उपनिषद् भारतीय दर्शन में क्या भूमिका निभाते हैं?
उपनिषद् भारतीय दर्शन के गूढ़ और गहन ग्रंथ हैं, जो वेदों का अंतिम भाग हैं। ये आत्मा, ब्रह्म, और मोक्ष जैसे गहन विषयों पर चर्चा करते हैं। उपनिषदों में प्रस्तुत महावाक्य, जैसे 'अहं ब्रह्मास्मि' और 'तत्त्वमसि', आत्मा और ब्रह्म की एकता को स्पष्ट करते हैं। उपनिषदों ने अद्वैत वेदांत और अन्य दार्शनिक प्रणालियों के विकास में आधारभूत योगदान दिया है।

क्या भारतीय ज्ञान परम्परा में समाज सुधार की दिशा में कोई योगदान रहा है?
भारतीय ज्ञान परम्परा ने समाज सुधार की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। संतों और महात्माओं ने भक्ति आंदोलन, जातिवाद के विरोध, और सामाजिक समानता के सिद्धांतों के माध्यम से समाज में सुधार की दिशा में काम किया। वेदों और उपनिषदों में भी धर्म और नैतिकता के सिद्धांतों के माध्यम से समाज को मार्गदर्शन प्रदान किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य क्या है?
भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का अर्जन नहीं, बल्कि संपूर्ण विकास और आत्म-ज्ञान की प्राप्ति है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को उसकी वास्तविक क्षमता और आत्मा की पहचान कराना है। यह केवल भौतिक और मानसिक विकास तक सीमित नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति और समाज सेवा को भी प्रोत्साहित करता है।

क्या भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की कोई अवधारणा है?
भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा गहराई से निहित है। वेदों और पुराणों में प्रकृति के तत्वों, जैसे कि नदियों, पर्वतों, और वृक्षों, को पवित्र माना गया है और उनकी रक्षा करने के निर्देश दिए गए हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों से मेल खाता है और हमें प्रकृति के साथ संतुलन और सामंजस्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक युग में पुनर्जीवित करने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए?
भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक युग में पुनर्जीवित करने के लिए शैक्षिक सुधार, जागरूकता अभियान, और समाज में इसके महत्त्व को पुनर्स्थापित करना आवश्यक है। शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक ज्ञान को सम्मिलित करना, डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से इसकी व्यापकता को बढ़ाना, और शोध व अनुवाद कार्यों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इसके साथ ही, सरकारी नीतियों और सामाजिक प्रयासों के माध्यम से इस धरोहर को संरक्षित और प्रोत्साहित करना भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में क्या दृष्टिकोण है?
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। यह नीति भारतीय संस्कृति, परम्परा, और मूल्यों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित करने की वकालत करती है। नीति का उद्देश्य छात्रों में भारतीय सांस्कृतिक चेतना जागृत करना है। इसके अंतर्गत शिक्षा में योग, आयुर्वेद, भारतीय कला, साहित्य, और संस्कृत भाषा को महत्व दिया गया है। नीति यह भी प्रस्तावित करती है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन और अनुसंधान के लिए विशेष केंद्र स्थापित किए जाएं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संस्कृत भाषा को कैसे महत्व दिया गया है?
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 संस्कृत भाषा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पुनर्जीवित करने का प्रयास करती है। नीति में संस्कृत को कक्षा 6 से 12 तक एक विकल्प के रूप में पेश करने का सुझाव दिया गया है। इसके अलावा, संस्कृत में उच्च शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए संस्कृत विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों की स्थापना का भी प्रस्ताव है। संस्कृत के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी प्रोत्साहित किया गया है, जिससे बहुभाषावाद और भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान बढ़ सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा के कौन-कौन से तत्त्व सम्मिलित किए गए हैं?
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा के कई तत्व सम्मिलित किए गए हैं, जैसे योग, आयुर्वेद, ध्यान, भारतीय दर्शन, और परम्परागत हस्तकलाएं। नीति का उद्देश्य इन तत्वों को पाठ्यक्रम में शामिल करके छात्रों को न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति भी जागरूक बनाना है। इसके अलावा, नीति में पर्यावरण संरक्षण, नैतिक शिक्षा, और सामाजिक सेवा के सिद्धांतों को भी सम्मिलित किया गया है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा का अभिन्न अंग हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रसार में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की क्या भूमिका हो सकती है?
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। नीति पारंपरिक भारतीय विषयों के अध्ययन को प्रोत्साहित करती है और इन्हें पाठ्यक्रम में शामिल करके छात्रों में भारतीय संस्कृति और इतिहास के प्रति गर्व और समझ विकसित करने का प्रयास करती है। इसके अतिरिक्त, नीति में शोध और नवाचार के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा के अनछुए पहलुओं की खोज और विकास को भी समर्थन दिया गया है। इससे भारतीय ज्ञान परम्परा के वैश्विक प्रसार में भी योगदान हो सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्या परिवर्तन लाने का प्रयास करती है जो भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप हो?
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई ऐसे परिवर्तन लाने का प्रयास करती है जो भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप हों। जैसे कि नीति शिक्षा को केवल नौकरी-उन्मुख न रखकर समग्र विकास की ओर ले जाने पर बल देती है। इसमें नैतिकता, मूल्य-आधारित शिक्षा, और पारंपरिक भारतीय ज्ञान को समाहित करने पर जोर दिया गया है। इसके अलावा, नीति में छात्रों के लिए बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया है, जो भारतीय परम्परा की विविधता और समृद्धि को दर्शाता है। यह नीति छात्रों को वैश्विक नागरिक बनाने के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा भी देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन पर विशेष बल दिया जाना भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण और सार्थक परिवर्तन है। इस नीति के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, प्राचीन ज्ञान, और जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जा रहा है। यह परम्परा न केवल शैक्षिक विषयों तक सीमित है, बल्कि धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, योग, और कलाओं को भी समाहित करती है। शिक्षा नीति 2020 में संस्कृत भाषा, साहित्य, और भारतीय वैज्ञानिकों तथा दार्शनिकों के योगदान को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है। इससे विद्यार्थियों में अपने सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धरोहर के प्रति गर्व की भावना विकसित होगी। आयुर्वेद और योग को शामिल करने से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक और जीवन की चुनौतियों से निपटने में सक्षम होंगे। भारतीय भाषाओं को भी उचित सम्मान देकर विद्यार्थियों में भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों की समझ को बढ़ाया जा रहा है। इस प्रकार, यह नीति भारतीय शिक्षा के पुनरुद्धार और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो परम्परा और आधुनिकता का संगम प्रस्तुत करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन पर विशेष बल दिया जाना भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण और सार्थक परिवर्तन है। इस नीति के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, प्राचीन ज्ञान, और जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया जा रहा है। यह परम्परा न केवल शैक्षिक विषयों तक सीमित है, बल्कि धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, योग, और कलाओं को भी समाहित करती है। शिक्षा नीति 2020 में संस्कृत भाषा, साहित्य, और भारतीय वैज्ञानिकों तथा दार्शनिकों के योगदान को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है। इससे विद्यार्थियों में अपने सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धरोहर के प्रति गर्व की भावना विकसित होगी। आयुर्वेद और योग को शामिल करने से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक और जीवन की चुनौतियों से निपटने में सक्षम होंगे। भारतीय भाषाओं को भी उचित सम्मान देकर विद्यार्थियों में भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों की समझ को बढ़ाया जा रहा है। इस प्रकार, यह नीति भारतीय शिक्षा के पुनरुद्धार और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, जो परम्परा और आधुनिकता का संगम प्रस्तुत करती है।

[परिसर प्रतिबिंब के संपादक डॉ. सुनील दीपक घोडके के साथ खास चर्चा।]

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

गाँधी का विचार क्यों श्रेष्ठ है?

आज जब सम्पूर्ण विश्व युद्ध के मुहाने पर खड़ा मानवता तो तार- तार होते देख रहा है, आतंकवाद का जहर निर्मम निरर्थक हत्याएं कर मानवीय समाजों में संदेह की दृष्टि पैदा कर रहा है, साम्प्रदायिकता व् नस्लवाद अनेक रूपों में वीभत्स प्रदर्शन कर रहा है, उपनिवेशवाद अपने नए रूपांतरित चेहरों के साथ दुनिया में एक नयी विभेदनकरी नीति को बढ़ावा दे रहा है, ऐसे में यदि कोई एक विचार, एक चिंतन जो समेकित, समग्र रूप से सभी समस्यायों का संभावित उत्तर देने में समर्थ दिखलाई देता है तो वह और कोई नहीं गाँधीवाद है। गाँधी का पूरा जीवन तथा उनके द्वारा सिखाये गए विस्तृत मानवतावादी विचार जो प्रेम, सत्य, अहिंसा, शांति, भ्रातृत्व और आपसी सौहार्द पर आधारित है, विश्व के लिए एक अनुपम दैन है। गाँधीजी ने आधुनिक विकास और सभ्यता के खिलाफ एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया और वे संसार के उन प्रभावी चिंतकों की श्रेणी में शीर्ष पर है जो खुले मन, खुले विचारों से मानव समाज की प्रत्येक समस्या की जड़ तक पहुंच कर उसका समाधान देने के लिए संवाद और विमर्श की पद्धति पर ज़ोर देते है। दक्षिण अफ्रीका से जब गाँधीजी भारत लौटे तो चम्पारण में किये गए सत्याग्रह से लेकर भारत-छोड़ो आंदोलन तक अनेक आंदोलनों ने उनकी नेतृत्व शक्ति, मूल्यों और नैतिकता से जीने के उनके विशिष्ट दृष्टिकोण और उनके व्यक्तित्व के तेज़ को मूर्त रूप से निखारा।

गाँधीजी एक ऐसी नई सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की संकल्पना का आह्वान करते है, जो शोषण, अन्याय और अत्याचार से मुक्त हो। उन्होंने सर्वोदय समाज और शोषण विहीन समाज जैसी संस्थाओं की स्थापना कर इस लक्ष्य के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया, जिसका उद्देश्य लोगों की शोषण से सुरक्षा प्रदान करना था। गाँधीजी का दृढ़ विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य, चाहे उसकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो, उसे व्यक्तिगत विकास के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। गाँधी जी का आदर्श इस धारणा के इर्द-गिर्द केंद्रित था कि हमारी सभ्यताओं, संस्कृति और स्व- शासन (स्वराज) की उन्नति हमारी इच्छाओं को पूर्ण करने और अपनी इच्छाओं को बढ़ाने पर निर्भर नहीं है, बल्कि आत्म-संयम और आत्म-त्याग का अभ्यास करने पर निर्भर करती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है, गाँधीजी करिश्माई व्यक्तित्व के धनी थे और जन सामान्य के लिए प्रेरणा का स्रोत थे। उन्हें आर्थिक रूप से वंचित लोगों और सामाजिक रूप से तिरस्कृत लोगों के उद्धारकर्ता के रूप में माना जाता था। गाँधीजी ने अपने अहिंसक दृष्टिकोण के माध्यम से भारत में भेदभावपूर्ण सामाजिक संरचना को बदलने का लक्ष्य रखा साथ ही उसके स्थान पर एक नैतिकतासम्पन्न, समरसतापूर्ण, मानवतावादी संरचना को प्राप्त करने और एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने का सर्वोत्तम प्रयास किया। एक निष्पक्ष सामाजिक संरचना के लिए उनकी वकालत ने मानव समाज की व्यापक प्रगति और अंतर्संबंध में योगदान दिया। आज भी जहाँ सच्चाई है, ईमानदारी है, निष्ठा है, आस्था है, अन्याय एवं अत्याचार का प्रतिरोध है तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए जन-आंदोलन है, वहीं गाँधी है और वहीं गाँधी की प्रासंगिकता है।

लेखक :
डॉ. अभय विक्रम सिंह
सहायक आचार्य,
गाँधी एवं शांति अध्ययन,
म.गाँ. के. विवि., मोतिहारी

हिन्दी पर बाजार का कब्जा

भाषा ही किसी जाति की सभ्यता को सबसे अलग झलकाती है, यही उसके हृदय के भीतरी कल- पुर्जे का पता देती है। किसी जाति को अशक्त करने का सबसे सहज उपाय उसकी भाषा को नष्ट करना है। (1912)—रामचंद्र शुक्ल

उदारवाद का बिगुल फूंकते बहुतेरे टीवी चैनल आ गए। अखबार रंगीन और चिकने पन्नेवाले हुए और ग्लोबलिस्टों की नई –नई टुकड़ियां उनके संपादकीय पन्नों पर कब्जा करने लगीं। खुले दरवाजे पर तोरण की मानिंद लटकते पिंजरों में बैठे तोतों की तरह वे सुबह से शाम तक यह बताने लगे कि इस देश को 21 वीं सदी में ले जाने के लिए हिन्दी असमर्थ है। यह कठिन और दुरूह है। हिन्दी को बिना शोध के टेक्नोफ्रेंडली से दूर किया गया। नतीजतन, धड़ाधड़ हिन्दी के स्थापित और प्रचलित शब्दों को – जो संप्रेष्य थे – अपदस्थ कर उनकी जगह अंग्रेजी के शब्दों का उपयोग समाचारपत्रों में होने लगा। देशहित में हिन्दी के विस्थापन को नए चिंतकों ने अनिवार्य मान लिया। अंग्रेजी के तीसरे दर्जे के कथित विद्वानों – लेखकों को हिन्दी मीडिया में घर कर गई पूर्वाग्रह को दूर करने के लिए जगह दी जाने लगी। विभिन्न संस्थानों के सीईओ, एमडी आदि पदधारियों से सौदेबाजी के लिए उनके लेख/ इंटरव्यू छापे जाने लगे। अब यह होड़ हिन्दी चैनलों में ही है। भाषा- संहार पर सभी मूक-बधिर बन गए। वस्तुतः किसी भी भाषा को खत्म करने के लिए पहले उसे कठिन बताओ, फिर उसका उपहास करो और अंत में उसे अनुपयोगी घोषित कर दो, ताकि वह अपने आप ही मर जाए। कोई भी भाषा केवल अपने साहित्य के दम पर जिंदा नहीं रह सकती। यह जरूरी है कि ये भाषाएँ साहित्य- संस्कृति के साथ- साथ रोजगार की भी भाषाएँ बनें।

बाज़ार अपने राजनीतिक ताने- बाने के साथ अपना शब्द- भंडार, शब्दावलियाँ और भाषिक प्रभुत्व भी बनाता है। इंग्लैंड में अंग्रेजी से पहले भी कई भाषाएँ थीं और उनका साहित्य था। अंग्रेजी ने अन्य भाषाओं को दबा कर अपना प्रभुत्व इंग्लैंड में और कालांतर में उपनिवेशीकरण के जरिये दुनिया के दूसरे देशों को बढ़ाया। धीरे –धीरे अंग्रेजीकरण और ज्ञान प्रक्रिया का आधुनिकीकरण एक- दूसरे के पर्याय समझ लिये गए। विदित है कि हिन्दी पहले बुद्धिवाद और समावेशी राष्ट्रवाद की वाहक मानी जाती थी, जो आज भी है, किन्तु बाज़ार ने इसे कहीं का नहीं रहने दिया। इसके सटीक उदाहरण आध्यात्मिक बाज़ार, मल्टी प्लेक्स और क्रिकेट के मैदान में दिख रहे हैं। क्या अँग्रेजी अपनाने से ही ज्ञान या सोच की प्रक्रिया आधुनिक हो जाएगी ? उल्लेखनीय है कि एक उत्तर-औपनिवेशिक मामला भाषा, साहित्य और संस्कृति में अस्मिता की राजनीति का है।

विडंबना है कि हम टेक्नोलोजी और आधुनिकीकरण के जितने शिखर पर चढ़ते जा रहे हैं, सामाजिक विविधता उतनी ही तेजी से सामाजिक भिन्नता में बदलती जा रही है। इसी कारण सांस्कृतिक हाहाकार मच रहा है। प्रतिरोध के दृश्य दिख रहे हैं। आज समाज को जो पीढ़ियाँ नेतृत्व दे रही हैं , उनकी नैतिक गड़बड़ियों के मूल में कहीं भाषा के प्रति उनकी असावधानी और गैर –जिम्मेदाराना सलूक तो नहीं है।

कभी हिन्दी का जन्म बाज़ार में हुआ था, बाज़ार में ही उसका विकास हुआ, पर आज बाज़ार ही उसे तहस- नहस कर रहा है। इसलिए, इसका विकास व भविष्य बाज़ार के हाथ में है। शिक्षा के बाजारीकरण ने रही-सही कसर भी पूरी कर दी। अँग्रेजी ने तो आधुनिकता का अर्थ संकुचित कर दिया है, जबकि लंबे काल खंड से हिन्दी आधुनिकता को व्यापकता प्रदान करते आया है। दुखद पहलू है कि विश्व-बोध के लिए ग्लोबल होना आवश्यक है, जिसमें बाधक राष्ट्र है। एक अफसर ने तो यह कह कर चौंका दिया कि भारतीय भाषाएँ अवधारणात्मक चिंतन के लिए अँग्रेजी की तुलना में उतनी योग्य नहीं है। हिन्दी केवल भाषा ही नहीं,यह भारत की स्वत्व, अस्मिता और संस्कृति की भी प्रतीक है। समाज में चेतना जागरण, देशभक्ति का भाव, अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों का ज्ञान भाषा के माध्यम से ही किया जा सकता है। आज भी हिन्दी ही हम सबको एकता के सूत्र में बांध सकती है और समाज तथा राष्ट्र को समृद्धिशाली बना सकती है। दुनिया में महाशक्ति का दर्जा पाने वाले देशों की अदालतों में मातृभाषा अपनाया जाता है। फ्रांस ने 1539 में लैटिन को अपनी अदालतों से बेदखल किया था। जर्मनी ने 18 वीं सदी में लैटिन से पिंड छुड़ा लिया। इंग्लैंड की अदालतों में एक समय जर्मन और फ्रेंच का बोलबाला था। रूस, चीन, जापान,वियतनाम,क्यूबा आदि में मातृभाषा का प्रयोग होता है। राष्ट्रीय अस्मिता, बाज़ार की मांग और पाठकों की पसंद को ही हिन्दी पत्रकारिता की नियति मनाने वाले लोग इसको हिन्दी की प्रगति के लिए सबसे बड़ा कदम मानते हैं। इसी आधार पर क्राइम, क्रिकेट, कॉमेडी, सिनेमा और सेक्स की प्रस्तुति को सफलता का नया फार्मूला बनाया गया है। उनका मानना है कि बाजारवाद के सहारे 21वीं सदी में हिन्दी वैश्विक फलक पर अपनी जगह तलाश रही है। टीवी चैनलों की भाषा में हिन्दी की टीआरपी बढ़ रही है। यह प्रॉडक्ट, ब्रांड बन कर रह गया। बाज़ार की यह चाल हिन्दी को पिछलग्गू और तेवरहीन बनाने का है। जनसंचार की एक अत्यंत लोकप्रिय और सशक्त जनभाषा को बाज़ार में उतारकर उसकी विश्वसनीयता को दांव पर लगाना एक साजिश ही तो है। इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में बाज़ार आज नियामक शक्ति है। इस यथार्थ को समझने की जरूरत है। अपने अतीत से हम पूरी तरह विस्थापित होते जा रहे हैं। निर्मल वर्मा के मत में, भाषा, मिथक और स्मृति का अंतरसबंध ही एक समूह के सदस्यों को एक सामूहिक अस्मिता में एक सूत्रित करता है। डेविड क्रिस्टल तो एक शब्द की मृत्यु को एक व्यक्ति की मृत्यु के समान मानते हैं। मोबाइल, फेसबुक, इन्स्टाग्राम आदि में चेटिंग रोमन लिपि में की जाती है। कई अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग होने लगा। हिन्दी के समाचार पत्र, टीवी चैनलों में हिन्दी गायब है। इस चरण को प्रोसेस ऑफ डिसलोकेशन कहा जाता है। बाद की प्रक्रिया को इल्यूजन ऑफ स्मूथ ट्रांजिक्शन कहा गया। हिंगलिश में बदलना इसकी पहचान है।

लेखक :
डॉ. अंजनी कुमार झा
विभागाध्यक्ष,
मीडिया अध्ययन विभाग,
म.गाँ. के. विवि., मोतिहारी

मनुष्यता

टूटने का सिलसिला दुखों का पहाड़ नहीं
हौसले का टूटना दुखों का पहाड़ बनता है।
जब भी कोई तोड़ें तुम्हें
उसकी नीति और नियति को मत कोसो
अपने को फौलादी बना लो
वह खुद ब खुद इंतहा हो जाएगा।
उसकी शैतानी चालों से डरो मत!
झूठ और फरेब की भी पराकाष्ठा होती है।
तय मानों वह ढह जायेगा
बिखर जायेगा!
बिल्कुल मुट्ठी में लिए रेत की तरह।
अपनी मनुष्यता को बनाएँ रखों
सद्गुणों और सत्कर्मों को बनाएँ रखो
दुनिया तुम्हें थोड़ी देर से ही सही
सलाम करेगी
तुम्हारी नेक इरादों को।

लेखक :
डॉ. परमात्मा कुमार मिश्रा
सहायक प्राध्यापक,
मीडिया अध्ययन विभाग,
म.गाँ. के. विवि., मोतिहारी

शून्य

बैठी हूँ एक शून्य में
चारों ओर अंधेरा है
आवाज़ें भी शून्य हैं
मौन ने रात को घेरा है
अंतर्मन कुछ बोल रहा है
भेद कुछ मेरे खोल रहा है
हाय! कोई भेद भयानक न हो!
क्यों ये मुझसे बोल रहा है!
क्या इसको सुनूँ अभी और?
क्या इसकी तह तक जाऊं?
अपने अंतर्मन को सुनकर
क्या मैं भी तर जाऊं?
लेकिन यह आसान कहाँ है!
मुझ में इतनी जान कहाँ है!
मन की गिरहें खोलते जिस भी छन
पहुंच जाऊं अपने अंतर्मन
खुद से जो नहीं कहा है
आखिर वो भी सुनना होगा
आँसू बन कर अहंकार को
झरझर कलकल बहना होगा
पश्चाताप फिर ऐसे होगा
अपने मन को बदलना होगा
लेकिन गर मैं कर निकली तो
अंधेरा भी साफ दिखेगा
मौन को मैं सुनना चाहूंगी
खालीपन भी मीत बनेगा
तब मेरे अंतर्मन का सच
मन को कभी विचलित न करेगा।

लेखक :
शेफालिका मिश्रा
जनसंपर्क अधिकारी
म.गाँ.के.विवि.

अहा जिंदगी !

जीवन अपनी ही रफ्तार में
हर पंछी है पेड़ों की छांव में,
हर राही सपनो की उड़ान में,
मौसम है अपने ही अंदाज में,
रुक जाने को है बेनाम बयार
मुकर जाने को है आवाम तमाम
बंजारे फिर भी आराम की तलाश में।
जीवन अपने ही संगीत में
हर इंसान है झूठ के साए में,
हर इनाम है जीत के खेमे में
खुल जाने को हजारों रास्ते,
टूट जाने को लाखो तारे,
जुगनू फिर भी रात की तलाश में।
जीवन अपनी ही उलझन में,
हर मजदूर दुविधा में है,
एक वक्त की रोटी का हो कैसे इंतजाम !
अगर मिल जाए जो दो वक्त का खाना भी,
तो भी रहने को ठिकाना कहां !
अहा जिंदगी !
अब इस जहां में सकूं- ए काम कहां

लेखक :
आदर्श मिश्रा
BAJMC तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

अकेली

दिन अकेला रात अकेली
बादल पर बरसात अकेली
कैसे कैसे वहम बिठा के
खेले ये ज़ज्बात अकेली।
एक छोर पे बैठ के हँसा
सोचा कैसे पार करेंगे
उस छोर पर पहुँच के देखा
उसकी सारी जात अकेली।
जीवन के हर एक रिश्तों में
एक एक रिश्ता ख्वाबों वाली
उन ख्वाबों को गौर से देखो
तो पैसों की तो बात निराली
बिन पैसों का रिश्ता वैसे
आँख खोल के सपना जैसे
फिर भी दिल ना उम्मीद नहीं है
पैसा ही वो चीज नहीं है
पैसों के इतर जो रिश्ते
वो बोलो क्या ताबीज़ नहीं है।
सारे ये जंजाल हटा के
ऊँचे कहीं पहाड़ों पर
आसमान से बातें करके
खुद को सुकून पानी है
मरते मरते इतना कर लूँ
बस मेरी इतनी ही कहानी है।

लेखक :
नन्दन कुमार
शोधार्थी,
वाणिज्य विभाग

चीटियों की प्रेम कहानी

सबने देखी पर किसी ने न ये जानी है,
कुछ कही सुनी सी ये कहानी है।
चीटियां...! नाम सुनते ही एक छोटी सी तस्वीर आती है दिमाग में,
किजैसे किसी काम की नहीं हैं ये,,,
बेवजह इधर से उधर घूमते रहती हैं,
दीवारों पर कभी खिड़कियों पर दौड़ती रहती हैं।
पर कभी सोचा है, कभी सोचा है,
ऐसा कैसे कर लेती हैं चीटियां?
कभी देखा है,
अपनी आँखें बंद किए,
एक दूसरे की बाहों में बाहें डाले,
कैसे चलती हैं चीटियां?
ये उनका एक दूसरे पर भरोसा ही तो है,
जो उन्हें एक साथ रखता है।
कभी देखा है की कैसे दीवारों के फ्री हाईवेज पर भी
एक लाइन से साथ चलती हैं चीटियां,
कि कैसे एक दूसरे को खाना पार्सल करती हुई चलती हैं चीटियां?
कभी देखा है,
जो कुछ भी उन्हें मिलता है,
उससे ज्यादा की चाहत नही करती,
और बेवजह या कभी कभी वजहों से भी किसी को आहत नहीं करती।
वो तो हम हैं, जो उस छोटी सी जान को इतना परेशान किया करते हैं।
उनकी लाइन तोड़ते हैं, उनका खाना छीनते हैं,
हम क्या कुछ नहीं करते उन्हें परेशान करने के लिए?
पर फिर भी, फिर भी
हम इंसानों की तरह वो काटती नहीं,
वो अपना दूसरा रास्ता ढूंढ लिया करती हैं।
बेवजह ही सही, एक दूसरे से मिलती तो हैं चीटियां।
हमने तो अब वजहों के साथ भी लोगों से मिलना छोड़ दिया है,
सामने वाला क्या सोचेगा, ये भी खुद ही सोचकर
इस जग से रिश्ता तोड़ लिया है।
मुसीबतें चाहे कितनी भी आ जाए,
उनसे लड़ कर, लहरों से बिखर कर,
फिर भी एक साथ चलती हैं चीटियां।
तुम अगर यहां सिर्फ जिंदगी गुजरना चाहते हो तो कोई बात नहीं,
पर अगर, इस इंसान के जीवन को जीना चाहते हो तो,
बड़े काम की हैं ये चीटियां।।।

लेखक :
अभिनव कुमार
स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर
अंग्रेजी विभाग

Not The Dress, But The Deed

In a world where shadows fall,
And silence hides the truth from all,
A story's told in hushed dismay,
Of wrongs that linger, day by day.
They say to dress in modest style,
As if the clothes could change the mile,
But fabric alone can't guard the soul,
From those who seek to hurt and control.
It's not the dress that's at the heart,
It's minds unkind, and cruel parts,
Those who think they're hidden well,
And act with disregard, so fell.
Blame shouldn't fall where it's not due,
On those who face the pain so true,
For every person, every heart,
Deserves respect, a place to start.
In every choice, in every thread,
Respect should guide what's left unsaid,
For what's inside is what should count,
Not how the fabric's draped or found.
Yet in this world, the tales are grim,
Of blame and shame that only dim
The light that should be shining bright,
And offer justice, firm and right.
Let's change the view that's wrongly told,
And fight for what is just and bold,
To make a space where all can stand,
Without the fear, without the hand.
So rise with voices clear and strong,
And make the world where all belong,
Where every heart and every soul
Can live in peace, and feel whole.
In every step, in every plea,
Let's make the world the way it should be,
Where kindness, truth, and love prevail,
And end the tales of shadows' veil.
For in the light, let justice shine,
And show the way, both yours and mine,
To honor all with equal grace,
And change the world, a safer place.

Writer :
Vishwa Vaibhaw
BAJMC 1st Sem.
Dept. Of Media Studies

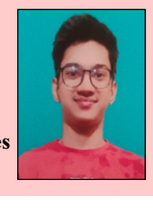

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

चंपारण की धरती

चंपारण की धरती, जहाँ इतिहास जीवंत है,
महात्मा गाँधी के कदमों से, स्वतंत्रता का आरंभ है।
1917 की वह क्रांति, किसानों की थी आवाज़,
अत्याचार के विरुद्ध उठी, सत्याग्रह की मौलिक राग।
महात्मा गाँधी ने यहीं से बदली थी शासन की धार,
चंपारण की मिट्टी में गूँजा था स्वराज का पहला उद्गार।
यहाँ के किसान, मजदूरों ने थामा था गाँधी का हाथ,
नील की खेती के शोषण को दिया था सशक्त प्रतिघात।
आज भी ये धरती है प्रेरणा का अटल प्रतीक,
जहाँ शिक्षा और संघर्ष का है अद्भुत संगीत।
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय है यहाँ की शान,
पूर्वी चंपारण में शिक्षा के क्षेत्र का बना है महान स्थान।
विश्वविद्यालय की नींव में है गाँधी के विचारों का आधार,
ज्ञान, शोध और संस्कार का यहाँ चलता है सतत व्यापार।
छात्रों में जागृत करता है यहाँ नवचेतना का प्रकाश,
जोड़े अतीत और भविष्य को, बढ़ाता भारत का विश्वास।
चंपारण की इस पावन भूमि का अनुपम है योगदान,
स्वतंत्रता संग्राम से शिक्षा तक, हर क्षेत्र में है अटल यशगान।
यहाँ की मिट्टी में समाई है स्वाभिमान की सुगंध,
चंपारण की धरती, भारत के गौरव की अनवरत ध्वजगंध।

लेखक :
अंकित कुमार
BAJMC 3rd सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

एक एहसास: अपनी शक्ति का

पता नहीं किसने, कब और कैसे यह नियम बनाया होगा कि औरत की पैदाईश जिस घर में होगी वो घर उम्र भर के लिए उसका नहीं होगा। एक निश्चित समय के बाद उसका ठिकाना कहीं और बना दिया जाएगा।उसके नाम और पहचान जब्त हो जाएंगे और वह किसी अन्य नामालूम से नाम के अधीन हो जाएगी। हर घर में चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, वर्ग या समाज का हो, लड़की को यहीं सुनते, समझते बड़ा होना होता है कि वह जिस घर में जन्मी है, वो उसका नहीं है। वो पराई अमानत है। उसका अपना घर कोई और बनेगा। फिर उसे उसी घर के नियमों में रंगना, बसना और ढलना होगा। उसकी पहचान फिर उसी घर के अनुसार तय होगी।
प्रकृति के सर्वाधिक सक्षम और अपने आप में सम्पूर्ण प्राणी 'औरत' के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाते इन नियमों का निर्माणकर्ता कौन है? या फिर किस प्रकार स्त्री -पुरुष के समतामूलक सहअस्तित्व से निर्मित सामाजिक खाने से औरत को निष्कासित कर उसे दोयम, भोग्या, 'किसी के द्वारा' और 'किसी के लिए' घोषित कर दिया गया, यह शोध का विषय है। पर जिसने भी इन नियमों को गढ़ा होगा वह औरत की चट्टानी शक्ति, समझ और क्षमता से अवश्य वाकिफ रहा होगा।
किसी भी पौधे को यदि उसके जन्म स्थान की मिट्टी से अलग कर कहीं और लगाया जाता है तो वो पौधा तभी बढ़ पाता है, जब उसकी आंतरिक शक्ति होगी। साथ ही उसमे दूसरे वातावरण के साथ तारतम्य बैठाने की शक्ति होगी। औरत के भीतर मौजूद उसकी मजबूत आंतरिक शक्ति ने ही उसे सदियों से लेकर अब तक उन तमाम अनजाने, अनचाहे और विपरीत परिस्थितियों के बीच भी बचाते और टिकाये रखा है। तब से लेकर अब तक वह न सिर्फ इस बनी बनाई परम्परा को ढो रही है, बल्कि सफलतापूर्वक जीवन भी जी रही है। उन तमाम विरोधाभासों के बीच खुद को स्थापित किया है और पायदान दर पायदान सफलता के नित नए आयाम गढ़ रही है। हजारों - हजार सालों से अबला, कमजोर, कमअक्ल, बेचारी जैसे संबोधनों से नवाजी गई औरत तब भी और अब भी बड़ी ही मजबूती और कुशलता के साथ परिवार और समाज की धुरी बनी हुई है।

लेखक :
मृणालिणी सहाय
BAJMC 1st सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

WHY SAINT IS IMPORTANT IN OUR LIFE ?

A moneylender lived in one city and a labourer lived in another city. A moneylender was a moneylender whose debts were owed to many people who were from previous lives and whose accounts had to be settled in many lives. The second labourer , reached the same moneylender's job through someone. The moneylender used to make the labourer work the whole day and didn't let him sleep till 2 O' clock at night. Despite this, he used to wake up the labourer at 3 O' clock and calledhim in the morning and scolded him very badly and says "You haven't done any work, Why are you a lazy person"? The poor labourer was helpless. He used to think where to go, this is our home. At the same time, a mahatma arrived in the same locality and his satsang continued. The moneylender was restless to fulfill his desires and the labourer was devastated by his poverty. Both were trapped in their own minds. They heard that the mahatma had arrived and gives solution for problems. They went to mahatma's place. The labourer had come to remove poverty and the moneylender had come with the desire that he should get money.
As soon as these two arrived, mahatma ji said in the satsang that listen lovers, creditors and debtors, helpless patients have arrived. There used to be a crowd of lakhs in mahatma ji's satsang. Mahatma made the moneylender the headcashier of the whole satsang and told him to spend the money as per his wish. You have every right and told the labourer to stay with the head cashier and do whatever he says. In the satsang, the moneylender was very happy after getting a lot of money along with respect and has got all the things for free and he became calm. The labourer started thinking that he was with his boss and he had every kind of comfort. Mhatma JI got the service done money given to moneylender and people to whom the moneylender gave money. That money was also obtained with respect. Saints help people in every possible way to repay debts. Due to ignorance, man doesn't understand how much mercy the saints show…..

Writer :
Eishu Prashar
BAJMC 1st Semester
Dept. of Media Studies

गाँधी...

हाड़ मांस का था एक योद्धा
वीर पुरुष महान था
बिना शस्त्र के ही लड़ पड़ा था
गांधी जिसका नाम था।
है तो वो भारत में जन्मा
अफ्रीका करता गुणगान है
काले को सम्मान दिलाया
महात्मा पड़ा उपनाम है।
गोरे काले का भेद न था
लड़ा आत्म सम्मान को
अहिंसा के बल से तोड़ा
गोरे के अभियान को।
कूद पड़ा आजादी में वो
अपना सीना तान के
भारत मां की बेड़ी तोड़ेंगे
यही प्रतिज्ञा ठान के।
फूका बिगुल वो चंपारण की धरती से
सत्याग्रह के नाम से
नीलहों की निली खेती को
फेंकेंगे इस धाम से।
जोड़ा जनसमूह को उसने
नील विद्रोह के नाम से
शुक्ला जी नतमस्तक हो गए
गांधी तेरे काम से।
बच्चा-बच्चा पहन के टोपी
घर से निकला इस काम से
खत्म हो गई नील की खेती
चंपारण के धाम से।
धरी रह गई गोली, तोप, बंदूकें उनकी
थर्राये गोरे गांधी तेरे नाम से
हम करते हैं गुणगान तुम्हारा
भारती पुत्र अभिमान से।

लेखक :
पूजा कौशिक
MAJMC 3rd सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

कवि होते तो...

कवि होते तो...
छोड़ो खैर !
कवि होते तो जल में रहकर
मगरमच्छ से करते वैर
छोड़ो खैर !
कवि होते तो सन्नाटों को-
भी कोई भाषा सिखलाते
कवि होते तो हर आँसू को
गिरते ही तेज़ाब बनाते
कवि होते तो कविता करते
इधर उधर मत पड़ते पैर
छोड़ो खैर !
कवि होते तो आस पास के
दुख भी तुम्हें दिखायी पड़ते
कवि होते तो छिपे हुये भी
कई दृश्य आँखों में गड़ते
कवि होते तो सुख लाने में
रत होते दुख दिये बगैर
छोड़ो खैर !
कवि होते तो सम्मानों या
अपमानों से आते बाहर
कवि होते तो अंगारों पर
धर आते फूलों से आखर
कवि होते तो दुविधाओं
के हर सागर को जाते तैर
छोड़ो खैर !

लेखक :
लक्की कुमार
MAJMC 3rd सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

हाँ मैं डरती हूँ

हाँ मैं डरती हूँ
डरना भी जायज है
बंद कमरे की खिड़कियों से
डरती हूँ बाहर नीम के पेड़ के निचे खाट पर लेटे बूढ़े दादा से
क्योंकि वो पूछते हैं कि रेस में कहाँ तक पहुँची हो
इस भीड़ भरी दुनिया में तुम्हारी क्या पहचान है
डरती हूँ गाँव के उन लोगों से जो हर बार अच्छी खबर लाने की सलाह देते हैं
डरती हूँ गाँव के चौमुहाने पर ताकती हुई कुछ जोड़ी आँखों से
जिनकी आवाज और नज़र शीशे को बेधते हुए मुझसे टकराती हैं
देखो इस बार क्या तीर मार कर आती है
डरती हूँ पिता के मुस्कान और माँ की नाम आँखों से
कहीं फीकी न पड़ जाए पिता की मुस्कान एवं बढ़ न जाए माँ की आंसुओं की रफ़्तार मेरी वजह से
डरती हूँ कहीं चूक न जाऊं पूरा करने में एक छोटा सा सपना जो रह गई अधूरी ख्वाहिशें
डरती हूँ कि कहीं छोड़ न दे वो हमसे उम्मीद करना
हाँ, मैं डरती हूँ
हाँ, डरना जायज है

लेखक :
रंजू यादव
शोध छात्र, संस्कृत विभाग

बलात्कार आख़िर कब तक स्वीकार ?

जिस्म के भूखे हैं ये दरिंदे
इनकी दरिंदगी के आगे मानवता शर्मसार हुई
इनकी वजह से गुड़िया की आँखें भयभीत रहने लगी
बहुत कुछ हुआ उसके साथ फ़िर भी
चुप चाप वो सब सहन करने लगी
कुछ ने बताया भी मेरे साथ कुछ ग़लत हुआ
दो थप्पड़ मार कर उसे चुप कराया गया
इन दरिंदों को न डराया गया
डाले कोई बुरी नज़र तो उसकी आँखें
खींच लेनी चाहिए
लेकिन हमने क्या सीखा?
हो बुरा किसी के साथ तो अपनी आँखें मींच लेनी चाहिए
कहने को स्वतंत्र हैं हम
हर वर्ष स्वंत्रता दिवस भी मनाते हैं
कैसी यह पावन धरती है?
जँहा बेटी चलने से डरती है
जो पापा के सपनों को पूरा करती है
देख कलेजा बाहर आता है
जब इन दरिंदों की वजह से वह तड़प- तड़प कर मरती है

लेखक :
कुलदीप कुमार
परास्नातक तृतीय सेमेस्टर
हिंदी विभाग

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कबीरदास के विचार

वर्तमान समय में, जिस प्रकार से धर्म के नाम पर लोगों की भावनाओं के साथ खेला जा रहा है ऐसे में कबीरदास जी के विचार, उनका जीवन हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हो जाता है।भारत के महान संत और अध्यात्मिक कवि के रूप में कबीर दास भारतीय इतिहास में एक अपूर्व स्थान रखते हैं। वे हिंदी साहित्य के ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज में व्याप्त आडम्बरों पर कुठाराघात करते रहे।
कबीरदास जी ने तटस्थ भाव से हिंदूओं और मुसलमानों के धर्मों में निहित आडंबरवादी प्रवृत्तियों की खुलकर आलोचना की। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों, कर्मकांड, अंधविश्वास की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना की। उन्होंने जनता की धार्मिक और सामाजिक स्थिति सुधारने का भरसक प्रयास किया। उनके मस्तिष्क में एक स्वस्थ और स्वच्छ समाज की परिकल्पना थी। वे जाति भेद, वर्ण भेद, और संप्रदाय भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे। हिंदी साहित्य के इतिहास में उनके समान दूसरा कोई अक्खड़ कवि नहीं है। उनकी निर्भीकता, साहसिकता और तटस्थता हमें सम्मान पूर्वक जीवन जीने की सीख देती है। कबीरदास कर्म प्रधान समाज के समर्थक थे। उनके अनुसार, ब्रह्मा प्राप्ति के लिए जंगल में धूनी रमाने और गेरुआ वस्त्र धारण करने की जरूरत नहीं है, बल्कि इस संसार में, गृहस्थ जीवन जीते हुए भी परमात्मा का साक्षात्कार किया जा सकता है। ईश्वर तथा ब्रह्म की व्याप्ति दुनिया के कण-कण में है, अतः उसे अन्यत्र खोजने की जरूरत नहीं है। ब्रह्म प्राप्ति के लिए हृदय की स्वच्छता और पवित्रता चाहिए। उनके अनुसार ज्ञान, भक्ति और कर्म के समन्वय से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। कबीर दास सात्विक जीवन के समर्थक और शुद्ध सत्य के पुजारी थे। उन्होंने किसी धर्म ग्रंथ को महत्व नहीं दिया। आडंबरहीन जीवन जीने में उन्हें पूरा विश्वास था। वे ईश्वर में एकात्मकता का अनुसरण करते थे।
कबीरदास जी की महान रचना बीजक में कविताओं की भरमार है जो धार्मिकता पर उनके सामान्य विचार को स्पष्ट करता है। उनके काव्य में प्रेम और ज्ञान का अपूर्व संयोग है। उन्होंने दिल की गहराइयों से अपनी रचनाओं को लिखा है और अपने साहित्यिक ज्ञान के माध्यम से लोगों का सही मार्गदर्शन कर उन्हें अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। उनके विचार आज भी हमें मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करते हैं। हमें भी उनके विचारों को अपनाकर धर्म के नाम पर लड़ना बंद करना चाहिए और एक स्वस्थ एवं सुंदर समाज का निर्माण करना चाहिए।

लेखक :
श्रृष्टि कुमारी
M.Sc. 3rd सेमेस्टर
गणित विभाग

गौरैया

याद हैं वो
घर के आँगन से, सुबह चहकते गूँज से
आँखों से नींद जाया करती थीं
दो जोड़ों की अठखेलियाँ देख
मन कोणे से खिलखिलाहट उबड़ा करती थीं
याद हैं वो
नन्ही सी जान चुलबुलाहट भरी संग
आँगन-आँगन और डाल-डाल पर फूदका करती थीं
दिवार टंगी आईना पर नासमझ
हमशकल समझ चोच मारा करती थी
आज वो आँगन वीरान है
वो नीम डाल सुनी हैं
और वो आईना अकेली
याद है वो
दुनिया बदल रही, हम बदल रहे
मतलबों को संग लेकर हमसब चल रहें
बड़े-बड़े दीवारों के बीचवो चुलबुली गुम हो रही हैं
हमारी गलती की सजा उसे मिल रही हैं
अब उन सारी यादों को फिर से करनी हैं
थोड़ा तू, थोड़ा मैं और थोड़ा हमसब
आँगन न सही, एक कोणा रख
भरा घड़ा न सहीं, एक प्याला रख
इतना कर उस नन्ही सी जान संग
संभाल अपनी पिढियां।।

लेखक :
आशीष कुमार
M.Sc. 3rd सेमेस्टर
जन्तुविज्ञान विभाग

समाज की तस्वीरें

धारणाओं के बंधन में, जकड़े हैं सभी,
कभी रंग, कभी जाति, कभी कपड़ों की वजह सही।
ताकतवर को नमन और कमजोर से द्वेष,ये कैसी सोच है, जो देती है हमें अविश्वास का संदेश।
लड़की है तो नाजुक, लड़का है तो वीर,
हर चेहरे को ढूंढ़ते हैं बस एक ही तस्वीर।
धर्म-जाति के नाम पर बनाई ये दीवारें,सपनों को तोड़ती हैं, छीन लेती हैं बहारें।
अमीर का दिखावा और गरीब का मज़ाक,
हर ओर फैला है बस झूठ का धुआं और फांस।
कपड़ों से मापा जाता है हर इंसान का कद,
क्या कभी किसी ने देखी उसकी असली हद?
कभी मोटे को ताने, कभी पतले पे हंसी,
कभी रंग से तौलते, कभी रूप की कमी।
ख्यालों के घेरे में हम खुद भी हैं बंद,
क्यों ना इस सोच को बदलें, खोलें कोई द्वार अखंड?
क्यों ना देखें इंसान को, इंसान की तरह,
क्यों ना करें जश्न हर चेहरे की अलग सी चमक।
बदलें धारणाएं, अपनाएं हर रंग-रूप को,
प्यार से सींचें दिलों को, बनाएं इस धरती को खूबसूरत।
धारणाओं के बंधन अब टूटने चाहिए,
हर मन में नए ख्वाब, नई उम्मीदें जुड़ने चाहिए।
हर किसी की कहानी है अपनी खास,
छोड़ो ये धारणाएं, और देखो सबमें उजास।
आओ मिलकर समाज में नवचेतना जगाएं,
धारणाओं को तोड़कर, नई राह दिखाएं।
बांधें नहीं दिलों को, खोलें हर बंद दरवाजे,
हर इंसान की गरिमा को पहचानें और अपनाएं।

लेखक :
आर्या कुमारी
BAJMC, 1st सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

जीवन की जिज्ञासा

क्या रहस्य है जीवन का,
क्यों लेता हर कोई अवतार !
क्या थे तुम अवतार से पहले,
क्या हो तुम अवतार पश्चात !
नष्वर हैं ये भौतिक पहचान ,
सूक्ष्म का ज्ञान नहीं है सबको,
सूक्ष्मता ही क्या एकमात्र अनंत पहचान?
जब भौतिक से अभौतिक टकराती ,
तब उलझन होती हर बार।
उठाती जिज्ञासा पहचान के ऊपर,
क्या है मेरी "अनंत पहचान"।
क्या कारण हैं जीवन-मरण का ,
अगर यह सब धोखा है।
नही मिला उत्तर इस कारण का ,
जितनी दफ़ा मैंने सोचा है।

लेखक :
अदित्य कुमार
शोध छात्र,
संस्कृत विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

THE LAST ENCOUNTER: PAST AND WORDS

It was raining outside, but it was an important day for me as I was heading to my dream job. As I navigated through the busy crowd, I noticed people sweating, some a little, some a lot, while I walked through feeling unaffected. Once I boarded the train, my calmness shifted to curiosity. Amidst the jostling crowd inside, I spotted a well-built man who looked strangely familiar. There was something about him that tugged at my memory, but I couldn't quite place him.

Suddenly, he approached me with a friendly smile. "Hey! It's you! Been a while. How've you been?"

I replied, "Yeah, I'm good. It's been a while. How's everything with you?"

His smile widened, though his eyes seemed distant.

"Things are good. But what about you? I haven't seen you around in ages." It took a moment, but then it clicked. "Wait… Arnav, right?" Despite his drastically changed appearance, I recognized him. Arnav and I were close in college. After graduation, we went our separate ways, he pursued engineering, while I took a different path. We lost touch after that.

Standing there, Arnav seemed as though no time had passed, but his presence was a stark reminder of how much had changed. Our faces were familiar, but everything else felt different.

"Yeah, it's been too long," he said, breaking my thoughts. His expression felt off—he seemed distracted or preoccupied. "So, where have you been? I rarely see you anymore."

I hesitated. "I'm fine. Just been keeping busy." I avoided his gaze, feeling uneasy. He nodded, seemingly accepting my vague response.

Without further ado, Arnav reached into his jacket and handed me a plain card. There was a sense of urgency in the air as he did so. Just then, the station's speaker crackled to life, announcing, "Bapudham Motihari." Arnav's voice, barely audible over the announcement, carried an urgent tone. "It's time now," he said, meeting my eyes momentarily before disappearing into the crowd.

I took a seat and examined the card. It wasn't a business card; it was plain, with a handwritten message: "They are following me. Only you can save me."

The train started moving, adding to my confusion.

I flipped the card and saw writing in an unfamiliar language. After several attempts to decipher it, the message finally made sense.

With growing urgency, I pulled the chains, causing the train to halt abruptly, with some of the platform still visible. I rushed to the front door, feeling the pressure of the situation mounting. As I sprinted towards the exit, I glanced at the card one last time; the ink was fading. I read the final message:

"Pet"

"Haue mumces uwp EDY danpvs"

To be continued..

Writer :
Kalyan Guruwe
B.Com 5th Sem.
Dept. of Commerce

प्राचीन नालंदा का नया स्वरूप

आज किसी से पूछो कि पढ़ने का मौका मिले तो दुनिया के कौन से विश्विद्यालय में पढ़ेंगे? जवाब मिलेगा, ऑक्सफ़ोर्ड, हारवर्ड, कैम्ब्रिज। भारत से हजारों छात्र हर साल इन विश्वविद्यालय में पढ़ने जाते हैं। और लालायित रहते हैं। हालांकि आज से 800 साल पहले एक समय नही बल्कि एक दौर ऐसा भी था, जब गंगा उल्टी नहीं सीधी बहती थी। दुनियाभर के लोग पढ़ने के लिए भारत की एक विश्वविद्यालय तक आते थे। बाकायदा संस्कृत सीखते थे। दरवाजे पर खड़े रहते थे। लेकिन नामांकन नहीं मिलता था। मिलता था तो सिर्फ 20 फीसदी छात्रों को। नामांकन के लिए दुनिया के सबसे होनहार छात्रों का साक्षात्कार होता था। और साक्षात्कार लेने वाला होता था एक द्वारपाल। इसके बाद भी दो स्तर और होते थे। ये सब उत्तीर्ण कर गए तो आपको मौका मिलता था दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तकालय में। जिसमें माना जाता है, लाखों किताबें हुआ करती थीं। हम बात कर रहे हैं प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय। वर्तमान समय के एक ऐसा विश्वविद्यालय जो अपनी बिजली खुद बना रहा है, एक ऐसा विवि जो अपने जरूरत के सारे पानी को खुद ही हार्वेस्ट कर रहा है साथ ही साथ रिसाइकिल भी करता है, एक ऐसा विवि जो जीरो कार्बन एडमिशन पर कार्य कर रहा है। आप सोच रहे होंगे यह कैसे संभव है तो स्वागत है आपका नये नालंदा विश्वविद्यालय में। हम सब ने सुना था कि इतिहास खुद को दोहराता है अब यह बात दिख भी रहा है। देश के प्रेणना डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम का सपना था कि नालंदा विश्वविद्यालय एक समय दोबारा तैयार हो। और हर्ष की बात यह है की इसके नए परिसर का उद्घाटन इसी साल किया गया है।

जिसको 25 नवंबर 2010 को भारत की संसद के एक विशेष अधिनियम [2010] द्वारा "राष्ट्रीय महत्व के संस्थान" के रूप में स्थापित किया गया था, जिसका उद्देश्य पूर्व प्रसिद्ध प्राचीन शिक्षा केन्द्र को पुनर्जीवित करना था, जो 5वीं शताब्दी ई. से 12वीं शताब्दी ई. तक दुनिया के पहले आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में फला-फूला था। विश्वविद्यालय वर्तमान में ऐतिहासिक अध्ययन विद्यालय, पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन विद्यालय, बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म विद्यालय, भाषा और साहित्य/मानविकी विद्यालय और प्रबंधन अध्ययन विद्यालय में कार्यक्रम प्रदान करता है। प्रस्तुत कार्यक्रमों में वैश्विक पीएचडी कार्यक्रम, ऐतिहासिक अध्ययन में परास्नातक (एमए), पारिस्थितिकी और पर्यावरण अध्ययन में परास्नातक (एमएससी), बौद्ध अध्ययन, दर्शन और तुलनात्मक धर्म में परास्नातक (एमए), हिंदू अध्ययन में परास्नातक (एमए), विश्व साहित्य में परास्नातक (एमए), सतत विकास और प्रबंधन में परास्नातक (एमबीए), और पाली, संस्कृत, अंग्रेजी, कोरियाई और योग में विभिन्न अल्पकालिक डिप्लोमा और प्रमाणपत्र कार्यक्रम शामिल हैं। उम्मीद है ये विश्वविद्यालय एक बार फिर शिक्षा देने के मामले में उसी शिखर तक पहुंचेगा, जहां पुराना नालंदा हुआ करता था।

लेखक :
नीतीश कुमार
BAJMC तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

TIME

Time is beautiful
Time is pain
Time is joyful
Time is gain
Time is lovable
Time is deceitful
Time can be hurtful
Time can heal
Time is a good friend
Time is mirror
Time can refract
Rays of life
Time is thoughtful
Time is great
Time is unpredictable
Time will stop.

Writer :
Aryan Singh
BAJMC 5th Sem.

Madhubani Painting: The Art of Tradition and Innovation

Whennever there is any discussion about Bihar's art and culture, Madhubani Painting is something that can't go unmentioned. It is a cultural craft of Bihar and also known as mithila painting as it originated and mithila and its roots can be traced back to ancient time. What makes madhubani painting apart from others is not just aesthetic appeal but the stories it conveys. Each stroke on the canvas displays the cultural heritage, myths and traditions of Mithila region. The Madhubani art was created by women of community to decorate their homes during festivals and special occasion an eventually became an integral part of everyday life. Themes of madhubani painting consisting of vivid colours depicts stories such as marriage of Lord Ram and Sita. These paintings are windows into a world of folklore and tradition that is passed from one generation to another. Now madhubani painting is not just a regional treasure but it has become a global phenomenon that is being appreciated for its uniqueness and cultural significance.

Renowned artists such as Mahasundari Devi Shanti Devi, Bharti Dayal and many more has contributed significantly in this field of art. I will conclude it by saying that, madhubani painting is a cultural bridge that connects us to our reach history and heritage. It speaks a language that is beyond words. So, let's celebrate it as a living breathing evidence to the spirit of our community.

Writer :
Khushi Kumari
BAJMC 3rd Sem.
Dept. Of Media Studies

चंपारण में गाँधी

महात्मा गाँधी का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख चेहरों में आता है। उनके नेतृत्व में भारत ने ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्त की। गांधीजी के कई महत्वपूर्ण आंदोलनों में से एक है चंपारण सत्याग्रह, जो उनके जीवन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। चंपारण सत्याग्रह की **पृष्ठभूमि:** 1917 में, बिहार के चंपारण जिले में ब्रिटिश सरकार की काश्तकारी नीति के खिलाफ गाँधी जी ने सत्याग्रह की शुरुआत की। चंपारण उस समय एक प्रमुख कृषि क्षेत्र था, जहां अंग्रेजों ने जमींदारी व्यवस्था के तहत किसानों पर बहुत अधिक दबाव डाला था। किसानों को 'टीना' (नीली पौधों की खेती) का उत्पादन करने के लिए मजबूर किया जाता था, जो उनके लिए अत्यधिक कष्टकारी और लाभहीन था। इस व्यवस्था के कारण किसान गरीबी और उत्पीड़न का शिकार हो रहे थे।

गाँधी जी का आगमन: गाँधी जी ने चंपारण में किसानों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने के बाद वहां आने का निर्णय लिया। उन्होंने 10 अप्रैल 1917 को चंपारण पहुंचकर आंदोलन की शुरुआत की।

गाँधी जी ने अपने साधारण वस्त्र, सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के साथ किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

सत्याग्रह की प्रक्रिया: गाँधी जी ने सत्याग्रह के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन की रणनीति अपनाई। उन्होंने किसानों से मिलकर उनकी समस्याओं को सुना और उनके साथ मिलकर योजनाएं बनाई। गाँधी जी की कोशिश थी कि आंदोलन को पूरी तरह से अहिंसात्मक रखा जाए। उन्होंने किसानों को आत्म-संयम और संयम रखने की सलाह दी, जिससे कि आंदोलन शांतिपूर्वक चल सके।

ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया: गाँधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह आंदोलन तेजी से फैलने लगा। ब्रिटिश सरकार ने शुरू में इस आंदोलन को दबाने का प्रयास किया, लेकिन गांधीजी की दृढ़ता और आंदोलनकारियों की एकजुटता ने इसे सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंततः, सरकार ने आंदोलनकारियों की मांगों को मान लिया और किसानों को राहत दी। चंपारण सत्याग्रह के परिणामस्वरूप, किसानों को 'टीना' की खेती से मुक्ति मिली और उनकी स्थिति में सुधार हुआ।

चंपारण सत्याग्रह का प्रभाव: चंपारण सत्याग्रह ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर गहरा प्रभाव डाला। यह गाँधी जी के लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षण अनुभव साबित हुआ और उन्होंने इसे अपने भविष्य के आंदोलनों में लागू किया। इस आंदोलन ने गाँधी जी की नेतृत्व क्षमताओं और सत्याग्रह के सिद्धांतों को साबित किया। चंपारण सत्याग्रह ने यह भी दिखाया कि एक संगठित और अहिंसात्मक आंदोलन भी ब्रिटिश शासन को चुनौती दे सकता है।

सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव: चंपारण सत्याग्रह ने भारतीय समाज को जागरूक किया और किसानों की समस्याओं को सामने लाया। यह आंदोलन भारतीय समाज में सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इसने भारतीय राजनीतिक परिदृश्य को भी बदल दिया औरगाँधी जी को एक प्रमुख नेता के रूप में स्थापित किया। इसके बाद गाँधी जी ने कई अन्य आंदोलनों का नेतृत्व किया, जैसे कि असहयोग आंदोलन और दांडी मार्च, जो स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख चरण बने।

निष्कर्ष: चंपारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने न केवल गाँधी जी के नेतृत्व को प्रमाणित किया, बल्कि किसानों के अधिकारों की रक्षा और सामाजिक न्याय के लिए एक नई दिशा भी दी। यह आंदोलन गाँधी जी के सिद्धांतों की सफलता और भारतीय समाज की एकजुटता का प्रतीक बन गया। चंपारण सत्याग्रह की सफलता ने यह दिखाया कि अहिंसात्मक संघर्ष और सत्याग्रह के माध्यम से भी बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान संभव है। गाँधी जी की यह यात्रा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अमूल्य अध्याय है और आज भी प्रेरणा का स्रोत है।

लेखक :
सूरज राज श्रीवास्तव
BAJMC तृतीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

विश्वविद्यालय का योगदान: एक सामाजिक दृष्टिकोण

विश्वविद्यालय, शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र होते हुए, समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वे न केवल ज्ञान के संचार का माध्यम होते हैं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालयों के योगदान को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है, जिसमें शिक्षा, अनुसंधान, और सामाजिक सेवाएँ शामिल हैं।

शिक्षा का योगदान : विश्वविद्यालयों का मुख्य उद्देश्य छात्रों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करना होता है। यहाँ पर छात्र विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं, जो उन्हें व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में मदद करती है। यह शिक्षा उन्हें न केवल विषय के ज्ञान से भरपूर करती है, बल्कि उन्हें आलोचनात्मक सोच, समस्याओं के समाधान, और नवोन्मेष के लिए प्रेरित करती है।

अनुसंधान और नवोन्मेष: विश्वविद्यालय अनुसंधान के लिए भी एक महत्वपूर्ण मंच होते हैं। यहाँ पर नई तकनीकों, सिद्धांतों, और समाधानों पर काम किया जाता है, जो समाज की समस्याओं को हल करने में सहायक होती हैं। अनुसंधान में नवीनतम खोजें, नए उत्पादों और प्रक्रियाओं का विकास, और तकनीकी प्रगति शामिल हैं, जो न केवल अकादमिक जगत, बल्कि व्यापक समाज को भी लाभ पहुँचाती है।

सामाजिक सेवाएँ और सामुदायिक भागीदारी : विश्वविद्यालय समाज की सेवा में भी सक्रिय रहते हैं। कई विश्वविद्यालय सामाजिक परियोजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, और पर्यावरणीय पहलों में भाग लेते हैं। ये प्रयास स्थानीय समुदाय की समस्याओं को पहचानने और हल करने में मदद करते हैं। विश्वविद्यालयों द्वारा चलाए जा रहे कई समाजिक कार्यक्रम और कैंपस आउटरीच गतिविधियाँ समुदाय के विकास और भलाई के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।

संस्कृति और विविधता : विश्वविद्यालय विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करके विविधता और सहिष्णुता को प्रोत्साहित करते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम, वार्षिक उत्सव, और विभिन्न भाषाओं और परंपराओं का आदान-प्रदान छात्रों को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह वैश्विक समझ और सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा देता है।

आर्थिक विकास : विश्वविद्यालय स्थानीय और राष्ट्रीय आर्थिक विकास में भी योगदान देते हैं। वे नए उद्यमियों को प्रोत्साहित करते हैं, तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करते हैं, और शोध के माध्यम से नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

सारांश में, विश्वविद्यालय समाज के विकास में एक बहुपरकारी भूमिका निभाते हैं। उनकी शिक्षा, अनुसंधान, सामाजिक सेवाएँ, और सांस्कृतिक पहल समाज की प्रगति और समृद्धि में सहायक होती हैं। इस प्रकार, विश्वविद्यालय केवल शिक्षा के केन्द्र नहीं होते, बल्कि समाज के एक महत्वपूर्ण अंग होते हैं जो अनेक दृष्टिकोणों से समाज के उत्थान में योगदान करते हैं।

लेखक :
अमन शर्मा
BAJMC 1st सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

हम बिहार लिखेंगे...

आप कहिएगा भोजपुरी में फूहड़ता ..
हम शारदा सिन्हा और गायत्री ठाकुर वाला बिहार लिखेंगे ।।
आप कहिएगा गोली बंदूक वाला बिहार ..
हम बुद्ध का सार लिखेंगे ।।
आप कहिएगा मोहब्बत की बातें ..
हम माँझी का पहाड़ लिखेंगे ।।
आप कहिएगा ग्वार बिहार ..
हम Upsc का परिणाम लिखेंगे ।।
आप कहिएगा पर्यटन का विकाश ...
हम वाल्मीकि नगर का बात लिखेंगे ।।
आप कहिएगा झील की बातें ..
हम तुतला भवानी का पहाड़ लिखेंगे ।।
आप कहिएगा बिहार में भेद भाव ..
हम छठ का त्योहार लिखेंगे ।।
आप कहिएगा हमे शौर्य गाथा की कहानी ...
हम बाबू वीर कुँवर सिंह का तलवार लिखेंगे ।।

आप कहिएगा विद्धवान की बातें ...
हम राजेन्द्र प्रसाद और वशिष्ठ नारायण सिंह का ज्ञान लिखेंगे ।।
आप कहिएगा साहित्य की बातें ..
हम राष्ट्र कवि दिनकर जी का किताब लिखेंगे ।।
आप कहिएगा गणित की बातें ..
हम आर्यभट्ट का शून्य और आनंद कुमार का काम लिखेंगे।
आप कहिएगा व्यंजन की बातें ..
हम लिट्टी चोखा से प्यार लिखेंगे ।।
आप कहिएगा अंग्रेजी वाला ड्रेसिंग सेंस ..
हम आज भी कुर्ता और गमछा का बात लिखेंगे ।।
आप कहिएगा अंग्रेजी में हेलो कहना ..
हम आज भी चचा प्रणाम कहेंगे ।।
आप कहिएगा राजीनीति की ज्ञान ..
हम आज भी JP सेनानी का बात लिखेंगे ।।

आप पढ़ियेगा संविधान की प्रस्तावना ..
हम वैशाली का लोकतंत्र लिखेंगे ।।
आप कहिएगा स्वतंत्रता की बातें ....
हम बापू का सत्याग्रह लिखेंगे ।।।
आप कहियेगा मेहनत और संघर्ष की बातें ..
हम चंपारण नील की खेती का शाम लिखेंगे ।।
आप कहिएगा नवाबी की बातें ..
हम मगध का विस्तार लिखेंगे ।।
आप कहिएगा भक्ति की बातें ...
हम बाबा सोमेश्वर नाथ और गरीबनाथ दरबार लिखेंगे ।।
आप कहियेगा सती की भूमि ..
हम सीतामढ़ी जगत जननी का धाम लिखेंगे ।।
आप कहियेगा स्वागत की बातें ..
हम मिथिला का भोज कहेंगे ।।
आप कहियेगा हमें गोली बंदूक की बातें ..
हमें मुंगेर वाला बिहार लिखेंगे ।।

आप कहियेगा सिर्फ तुम की बातें ..
हम फिर हम वाला बिहार लिखेंगे ।।
और ये आखिरी कुछ पंक्तियाँ है जो कर्म भूमि को समर्पित है
आप कहियेगा चंपारण में शिक्षा की बातें ..
हम महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय का विस्तार लिखेंगे ।।
और फिर कोई पुछेगा हम से सिद्दत वाला प्यार हम फिर से बिहार लिखेंगे , हम बिहार लिखेंगे , हम बिहार लिखेंगे...

लेखक :

उज्जवल सिंह
MSW 1st सेमेस्टर

आदर्श आर्यन
MAJMC 1st सेमेस्टर

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

सब धूमिल

गीत,गज़ल सब लिख डाले,अक्षर अक्षर रट डाले
सुर्ख स्याही ऐसी पकड़ी,सारे कागज़ रंग डाले।
रंगे हुए जब कागज़ देखे, हृदय तल से रट डाले
प्रेम किया न द्वेष किया ,तो प्रेम गीत क्यों लिख डाले।
शायद कुछ अच्छा होगा, इसी सोच में सुरमय कर डाले
एक रात को एक बजा था , धरती अम्बर सब गूंज रहा था।
एक घने साए में मैंने देखा,कोई झींगुर बोल रहा था
झींगुर की आवाज़ सुन मेरा मन भी डोल रहा था।

क्या कुछ होने वाला है जग में,या फिर मेरी किस्मत में
किस्मत जागे या न जागे, सहर होने पर शहर ये जग जाएगा।
जो सपना देखा है तूने सब धूमिल हो जायेगा।
अब भी वक्त बचा है बेटे , गहरी सांसे ले ले तू
बरना जिसको मूल्यवान मानेगा तू, वही सस्ते में निपटा कर जाएगा।
तू फिर खड़ा खड़ा एक दिन पछताता रह जायेगा।

लेखक :
आकाश कुमार
शोध छात्र,
मीडिया अध्ययन विभाग

दोस्ती

घर से निकले थे ख्वाहिशों का अंबार लेकर
पर जो उसमें ना शामिल था, वो यार हो तुम।
जो बिना मांगे मिल गया, वो खास ख्वाब हो तुम,
कभी खट्टी,कभी मिठी तकरार हो तुम।
कभी तीखी मिर्ची सा स्वाद हो तुम
वनारस की शांत शाम हो तुम,
चांदनी चौक की चटपटी चाट हो तुम,
तप्ती धूप में ठंडी बरसात हो तुम।

महफिलों का शोर और ठहाका हो तुम,
इन पलों का सच्चा साथी हो तुम,
आने वाले पलों के लिए एक खुबसुरत याद हो तुम
यार बेमिशाल हो तुम।

लेखक :
चंदन कुमार
M.Tech. 3rd Sem.
सी.एस एंड आई.टी. विभाग

माँ

बचपन मे अंधकार की ऊजाल है माँ
आने वाले जीवन की झंकार है माँ

जीवन मे हर गलती की सुधार है माँ
हमारे आने वाले सुखी जीवन की उधार है माँ

हर दुखो मे साथ है माँ
सुखी जीवन की बरसात है माँ

कोई चाहे कितना भी बड़ा बाहुबली क्यु न हो
उसके जीवन की स्वांस है माँ
इस दुनिया मे कोई भगवान हो या ना
मेरे जीवन की भगवान है माँ।

लेखक :
हनीश बंधू
MBA. 3rd Sem.
प्रबंधन विज्ञान विभाग

राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् : अर्थ, महत्व एवं विश्लेषण

\हमारे देश में 'जन-गण-मन अधिनायक' को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया गया है तथा 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रीय गीत के रूप में जाना जाता है। वन्दे मातरम् गीत 'आंनन्दमठ' उपन्यास से लिया गया है। बंगाल में संन्यासी विद्रोह के समय में बंकिमचन्द्र चटर्जी ने इस गीत की रचना 7 नवम्बर 1876 ई० में कांतल पाडा नामक गांव (बंगाल), में को थी, जिसका प्रकाशन 1882 ई० में 'आनंदमठ' उपन्यास में किया गया।भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर 1885 को गाकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज, मुम्बई में हुई थी। 1886 ई० में कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन कलकत्ता में हेमचन्द बंद्योपाध्याय ने सर्वप्रथम 'वन्दे मातरम्" गीत के कुछ अंश गाकर सुनाए थे। 1896 में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कांग्रेस अधिवेशन में इस गीत को गाया था। पंक्तियों की गणना की दृष्टि से कुल 26 पंक्ति हैं जिनमें 9 पंक्तियों को स्वीकार किया गया। शुरु की दो पंक्ति (संस्कृत में) गायी जाती है, शेष बांग्ला भाषा में लिखी गयी है। 24 जनवरी 1950 के लोकसभा अधिवेशन में डॉ. राजेन्द प्रसाद के सुझाव से वन्दे मातरम् गीत को एक राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया गया तथा जघुनाथ भट्टाचार्य ने 'वन्दे मातरम्' का संगीत तैयार किया।

बांग्ला साहित्य-सम्राट बंकिमचन्द्र चटर्जी ने वन्दे मातरम् गीत के भावार्थ को इस रूप में प्रस्तुत किया था- **"मैं भारत माता की वन्दना करता हूँ। सुन्दर स्वच्छ जल से परिपूर्ण, सुमधुर फलों से युक्त मलय पर्वत की सुगंधित एवं शीतल वायु से ओत-प्रोत तथा हरी-भरी खेती से सांवलि छवि वाली भारत माता की मै वन्दना करता हूँ। स्वच्छ चाँदनी से तन-मन को पुलकित करने वाली रातों से युक्त खिले हुए पुष्प एवं हरे-भरे पत्तों से लदे हुए वृक्षों से सुशोभित, मनमोहक हास्यवाली मनमोहिनी एवं मधुर वाणी से परिपूर्ण, सभी प्रकार के सुख एवं वांछित वर प्रदान करने वाली भारत माता की मैं वन्दना करता हूँ।**

'वन्दे मातरम्' गीत को लोकप्रियता स्वदेशी आन्दोलन व बंग-भंग आन्दोलन, 16 अक्टूबर 1905 क समय में काफी मिली थी। प्रारंभ में बंकिमचन्द्र ने जिस गीत की परिकल्पना की वह केवल बंगाल तक ही सीमित थी, जिसकी आबादी लगभग 7 करोड़ थी तथा उस समय सम्पूर्ण भारत की आबादी 30 करोड़ थी। जैसे-जैसे इस गीत की लोकप्रियता बढ़ती गयी, इसे अखिल भारतीय स्वरूप मिलता गया। 1901 ई0 के बाद कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में 'वन्दे मातरम् गीत का गायन प्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर द्वारा गाया जाता रहा। वन्दे मातरम् गीत निरन्तर विवाद में रहा है। इस संबंध में 1948 ई० में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लोकसभा में भाषण देते हुए कहा था- **"वन्दे मातरम् स्पष्टतः और निर्विवाद रूप से भारत का प्रमुख राष्ट्रीय गीत है और महान ऐतिहासिक परम्परा है। हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से इसका निकट संबंध रहा है।"** 1961 में पुनः एकबार वन्दे मातरम के विषय में विवाद उठा, तब डॉ० सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में एक कमिटी बनायी गयी। इस कमिटी ने अपनी राय दी कि **"भारत के प्रत्येक विद्यार्थियों को वन्दे मातरम् गीत याद होना चाहिए।**

आज भी कभी-कभी वन्दे मातरम को लेकर विवाद उत्पन्न हो जाता है। कुछ उन्मादी एवं कट्टरवादी लोग दूसरे वर्ग को धमकी भरे हुए शब्दों में कहने लगते हैं- **'इस देश में रहना है तो वन्दे मातरम् कहना होगा' जिसकी प्रतिक्रिया में इस वर्ग के लोग जवाब देने लगते हैं कि हम जोर-जबरदस्ती से वन्दे मातरम् का गान नहीं करेंगे।**

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीयता की कुछ चीजें धीरे-धीरे विकसित होती है और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व समाज के निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाती है। अतः जिस राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् को गाकर लाखों लोग जेल गये और हजारों लोगों ने अपने प्राण न्योछावर किया, उसके प्रति दुराग्रह भारत की आत्मा पर चोट है। 21 वीं शताब्दी के इस आधुनिक राष्ट्रवाद एवं परिवर्तनशील युग में हमारे राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् की महत्ता काफी बढ़ी है। यह गीत देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करता है।

इसके कुछ महत्व इस प्रकार है:-

* यह गीत भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाती है।
* यह गीत देश की प्रगति और समृद्धि के लिए नई उम्मीदें जगाती है।
* यह गीत मातृभूमि के प्रति प्रेम का भाव पैदा करता है।
* यह गीत देश के नागरिकों को एकजुट करता है।
* इस गीत ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में लाखों लोगों को प्रेरित करने का काम किया।
* यह गीत भारत की स्वतंत्रता को सुरक्षित करने के लिए अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा पार की गई चुनौतियों और उनके बलिदानों की याद दिलाता है।
* यह गीत हमें अपनी मातृभूमि की रक्षा और बचाव के हमारे कर्त्तव्य की याद दिलाती है।
* इस गीत ने भारतीय युवकों को एक नई दिशा प्रदान की और स्वतंत्रता संग्राम का महान उद्देश्य दिया। मातृभूमि को सुजलाम सुफलाम बनाने के लिए प्रेरित किया। 'वन्दे मातरम्' इन दो शब्दों ने देश को आत्मसम्मान दिया और देश प्रेम की सीख दी।
* 'वंदे मातरम्' सिर्फ एक गीत नहीं है, यह देशभक्ति और भारतीयों के अपने वतन के साथ मजबूत भावनात्मक बंधन की एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति है।

सन 2003 बी० बी० सी० वर्ल्ड सर्विस ने एक सर्वे किया जिसमें दुनिया भर से 7000 गानों को चुना था और उसमें 155 देशों के लोगों ने वोट डाले थे। इस सर्वे में विश्व के सर्वाधिक पसंदीदा गीतों में प्रथम स्थान-'ए नेशन वन्स अगेन' को चुना गया जो आयरलैंड के राष्ट्रवादियों का पसंदीदा गीत है। दूसरे स्थान पर 'वन्दे मातरम्' को चुना गया, जो भारत का राष्ट्रीय गीत है एवं तीसरे स्थान पर 'दिल दिल पाकिस्तान' गीत को चुना गया, जो पाकिस्तान का राष्ट्रवादी गीत है। फलतः भारत के प्रत्येक नागरिक को वन्दे मातरम् गीत का सम्मान करना चाहिए एवं सभी विद्यार्थियों को इसे प्रार्थना गीत के रूप में गाया जाना चाहिए तभी भारतमाता के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

लेखक :
विनीता कुमारी
M.A. तृतीय सेमेस्टर
संस्कृत विभाग

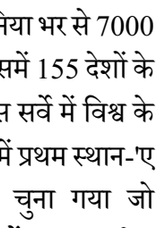

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक
प्रो. संजय श्रीवास्तव
मा. कुलपति
म.गाँ.के.विवि.

मार्गदर्शक
डॉ. अंजनी कुमार झा
विभागाध्यक्ष
मीडिया अध्ययन विभाग

संपादक
डॉ. सुनील दीपक घोडके
सहायक प्राध्यापक
मीडिया अध्ययन विभाग

उप-संपादक
डॉ. श्याम नन्दन
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सह-संपादक
डॉ परमात्मा कुमार मिश्र
सहायक प्राध्यापक
मीडिया अध्ययन विभाग

सह-संपादक
डॉ. उमेश पात्रा
सहायक प्राध्यापक
अंग्रेजी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. गोविंद वर्मा,
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. आशा मीणा,
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. बबलू पाल
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. दुर्गेश्वर सिंह
सहायक प्राध्यापक
वनस्पति विज्ञान विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. पाथलोथ ओमकार
सहायक प्राध्यापक
शैक्षिक अध्ययन विभाग

सलाहकार संपादक
सुश्री शेफालिका मिश्रा
जनसंपर्क अधिकारी
म.गाँ.के.विवि.

प्रकाशक
विशेष कार्याधिकारी (प्रशासन)
म.गाँ.के.विवि.

वितरण एवं प्रसार
जनसंपर्क प्रकोष्ठ
म.गा.के.विवि.

ले-आउट डिज़ाइन
प्रतीक कुमार
छात्र (स्नातकोत्तर)
मीडिया अध्ययन विभाग

कंपोजिंग
शिवानी कुमारी
छात्रा (स्नातकोत्तर)
मीडिया अध्ययन विभाग

समाचार संकलन

तुशाल कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
सुशील कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
पूजा कौशिक, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
जन्मेजय कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
आशीष कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
लक्की कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
रूचि भारती, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
भावना कुमारी, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग